सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 114, नई दिल्ली, गुरुवार 03 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर मेहनत को आदत बना लिया जाए तो कामयाबी मुकद्दर बन जाती है।

03 साइबर पुलिस स्टेशन ने यूएसडीटी निवेश धोखाधड़ी गिरोह का भंडाफोड़ किया

06 रील्स की मायावी दुनिया का धोखा

08 कोचिंग का क्रेडिट, स्कूल की गुमनामी: शिक्षकों के साथ यह अन्याय कब तक?

दिल्ली में पुराने वाहनों को पेट्रोल नहीं देने का अभियान दूसरे भी जारी, कैमरे में कैद हुआ कई ओल्ड व्हीकल

संजय बाटला

दिल्ली में पुराने वाहनों को पेट्रोल पंपों पर पेट्रोल न देने के अभियान का असर दिखा। कई पंपों पर लगे कैमरों ने पुराने वाहनों को पकड़ा लेकिन कुछ तकनीकी कमियां भी सामने आईं। पुलिस और परिवहन विभाग की कम मौजूदगी के कारण एक वाहन भागने में सफल रहा। पंप संचालकों के अनुसार वाहन चालक अब सतर्क हो गए हैं और पड़ोसी राज्यों से पेट्रोल भरवा रहे हैं।

नई दिल्ली। अवधि पूरी कर चुके वाहनों को पेट्रोल पंपों पर पेट्रो पदार्थ न देने के अभियान का बुधवार को व्यापक असर दिखा। खबर लिखे जाने तक एक दो मामलों को छोड़कर दिल्ली के अधिकतर पंपों पर लगे एनपीआर कैमरों की जद में ऐसे वाहन नहीं आए।

वहीं, दूसरे दिन पंपों तथा आसपास यातायात पुलिस कर्मी व यातायात विभाग का एनफोर्समेंट दस्ता भी नदारद दिखा। इसके चलते एक उम्रदराज वाहन पंप से भागने में सफल भी हुआ।

दूसरे दिन पंपों पर कैमरों तथा स्पीकर संबंधित शिकायतों को दूर कर दिया गया है, तब भी कई जगह कैमरों के काम नहीं करने की शिकायतें आई है।

पंप संचालकों के अनुसार, इस अभियान से अवधि पूरी कर चुके वाहन चालकों में सतर्कता आ गई है, इसलिए वे अब उसे पंपों पर लेकर नहीं आ रहे हैं। वहीं, कुछ मामलों में ये वाहन पड़ोसी राज्यों से पेट्रो पदार्थ भरवाने में भलाई समझ रही है।

बुधवार, को ग्रेटर कैलाश स्थित पंप पर दोपहर में महाराष्ट्र नंबर की होंडा जैज कार पहुंची, जिसका नंबर पढ़कर पंप पर लगा स्पीकर बोलने लगा, जिसपर पंप कर्मियों ने उसे पेट्रो पदार्थ देने से मना कर दिया। इस दौरान वहां न तो परिवहन विभाग की एनफोर्समेंट टीम मौजूद थी और न ही कोई पुलिसकर्मी। इस पर चालक वाहन समेत वहां से भाग गया।

कैमरों व स्पीकर की गड़बड़ी की नई शिकायतें आई। दक्षिणी दिल्ली में मां आनंदमयी मार्ग स्थित वालिया सर्विस स्टेशन पर एएनपीआर कैमरे और स्पीकर सिस्टम तो लगे हुए हैं, मगर बुधवार को भी वह काम नहीं कर रहे थे।

पंप कर्मियों ने बताया कि सुबह एक व्यक्ति सिस्टम जांचने आया थाा। मगर दोपहर तक वहां सिस्टम ठीक नहीं हुआ था। हालांकि, परिवहन विभाग की टीमें तैनात रही और संदेह के आधार पर वहां आ रही गाड़ियों के नंबर मशीन से जांच रही थी।

इसी तरह, पूर्वी दिल्ली के शाहदरा जीटी रोड पर झिलमिल स्थित पेट्रोल पंप कैमरा ऐसी जगह लगा हुआ है, जहां सड़क पर चलने वाले वाहन भी उसकी जद में आ रहे हैं। सड़क से कोई उम्रदराज वाहन गुजर रहा है तो पंप पर लगे स्पीकर पर उद्घोषणा होने लगती है।

इससे पंप कर्मियों में अफरातफरी मच जाती है और कर्मी उम्रदराज वाहन को तलाशने लगते हैं। सबसे बड़ी समस्या यह आ रही है स्पीकर एक ही बार उम्रदराज वाहन के नंबर की उद्घोषणा करता है।

कर्मियों के पास ऐसा कोई विकल्प नहीं है जिससे वह पता कर सकें की स्पीकर ने किस वाहन नंबर की उद्घोषणा की है। उधर, पुरानी दिल्ली के आसफ अली रोड स्थित पंप पर अभी भी एक ही कैमरे से काम चल रहा है। पंप के प्रबंधक के अनुसार, एक और कैमरा लगाने को लेकर अधिकारियों से उसकी बातचीत चल रही है।

पंप संचालकों के अनुसार, इस अभियान से अवधि पूरी कर चुके वाहन चालकों में सतर्कता आ गई है, इसलिए वे अब उसे पंपों पर लेकर नहीं आ रहे हैं। वहीं, कुछ मामलों में ये वाहन पड़ोसी राज्यों से पेट्रो पदार्थ भरवाने में भलाई समझ रही है।

आयु पूरी कर चुके वाहनों की धरपकड़ से पेट्रोल पंप परेशान, बिक्री 20% तक घटी

दिल्ली में पुराने वाहनों के खिलाफ कार्रवाई से पेट्रोल पंपों की बिक्री में गिरावट आई है। हरियाणा और उत्तर प्रदेश से सटे इलाकों में 20 प्रतिशत तक कमी दर्ज की गई है। पंप संचालकों ने सरकार से इस अभियान को रद्द करने या स्थगित करने की मांग की है क्योंकि सीमावर्ती क्षेत्रों में बिक्री पड़ोसी राज्यों में शिफ्ट हो रही है। डीलर्स एसोसिएशन इस मुद्दे पर सरकार से बात करेगी।

नईदिल्ली। दिल्ली में अवधि पूरी कर चुके पुराने वाहनों के खिलाफ चल रही सख्त कार्रवाई का असर अब पेट्रोल पंपों की बिक्री पर भी नजर आने लगा है। खासकर, हरियाणा और उत्तर प्रदेश से सटे बार्डर क्षेत्रों में स्थित पेट्रोल पंपों पर बिक्री में 20 प्रतिशत तक की गिरावट दर्ज की गई है। इससे पंप संचालकों की चिंता बढ़ गई है। उन्होंने दिल्ली सरकार से इस अभियान को रद्द करने या कम से कम नवंबर तक स्थगित करने की मांग की है।

बार्डर क्षेत्र के पंप सबसे ज्यादा प्रभावित

दिल्ली पेट्रोल डीलर्स एसोसिएशन (डीपीडीए) के मुताबिक राजधानी में कुल करीब 400 पेट्रोल पंप हैं, जिनमें से करीब 150 पंप हरियाणा और यूपी की सीमा से लगे इलाकों में स्थित हैं। ये पंप अकेले दिल्ली में कुल पेट्रोल और डीजल की बिक्री में करीब 40 प्रतिशत का योगदान देते हैं। ऐसे में इन इलाकों में बिक्री पर अचानक आया यह असर पंप संचालकों के लिए बड़ा झटका साबित हो रहा है।

मंगलवार से चल रहा है अभियान

दिल्ली में 1 जुलाई से ऐसे वाहनों को पेट्रोल और डीजल न देने का अभियान चलाया जा रहा है, जिनकी तय आयु पूरी हो चुकी है। बार्डर क्षेत्र के पेट्रोल पंपों पर इस अभियान का सीधा असर देखा गया है। हालांकि, दिल्ली के अन्य इलाकों में इस अभियान का असर सीमित ही रहा है।

बिक्री पड़ोसी राज्यों में शिफ्ट होने का खतरा

पंप संचालकों का कहना है कि दिल्ली की सीमा से लगे इलाकों में बड़ी संख्या में ऐसे वाहन आते हैं, जिनकी आयु पूरी हो चुकी है। अब इन वाहनों को दिल्ली के पंपों से पेट्रोल न मिलने के कारण बिक्री पड़ोसी राज्यों में शिफ्ट हो रही है। साथ ही, बाहरी राज्यों से आने वाले वाहन चालक अब दिल्ली के पंपों पर आने से भी बच रहे हैं, जिससे बिक्री में और कमी आ रही है।

डीपीडीए की बैठक में उठेगा मुद्दा

डीपीडीए के अध्यक्ष निश्चल सिंघानिया ने बताया कि पहले दिन ही बार्डर क्षेत्र के पंपों पर 10 से 15 प्रतिशत बिक्री घटी और बुधवार को यह कमी बढ़कर 20 प्रतिशत तक पहुंच गई। इस गिरावट ने पंप मालिकों की चिंता और बढ़ा दी है। उन्होंने बताया कि इसी वजह से पहले भी दिल्ली सरकार से मांग की गई थी कि इस अभियान को दिल्ली-एनसीआर में एक साथ और नवंबर से लागू किया जाए। अब इसे फिर से दिल्ली सरकार के सामने रखा जाएगा।

गुरुवार को बैठक, आगे की रणनीति तैयार होगी

इसी मुद्दे पर बृहस्पतिवार को दिल्ली पेट्रोल डीलर्स एसोसिएशन की प्रबंध समिति की बैठक बुलाई गई है। इस बैठक में दिल्ली सरकार से प्रतिनिधिमंडल मिलकर मांग करेगा कि अभियान को या तो रद्द किया जाए या फिर कुछ महीनों के लिए स्थगित किया जाए, ताकि पंप संचालकों को राहत मिल सके।

उम्र पूरी कर चुके वाहनों पर बैन से दिल्लीवाले नाराज, रेखा सरकार सॉल्यूशन के लिए फिर जाएगी कोर्ट

दिल्ली में पुराने वाहनों पर रोक के खिलाफ भाजपा सरकार अदालत जाने की तैयारी में है। परिवहन मंत्री ने कहा कि सरकार इस कार्रवाई के पक्ष में नहीं है लेकिन पूर्व की केजरीवाल सरकार की विफलता के कारण यह स्थिति आई है। उन्होंने सवाल उठाया कि जब मुंबई और कलकत्ता में प्रतिबंध नहीं है तो दिल्ली में क्यों है?

नई दिल्ली: उम्र पूरी कर चुके वाहनों की धरपकड़ के लिए अभियान शुरू होने के एक दिन बाद ही दिल्ली की भाजपा सरकार ने इस मामले में अदालत जाने की घोषणा कर दी है।

दरअसल कार्रवाई के पहले ही दिन लोगों में नाराजगी देखने को मिली है, जबकि रेखा गुप्ता सरकार जनता के साथ मिलकर काम करने की रणनीति अपना रही है। विरोध को देखते हुए सरकार को इस बारे में अपनी स्थिति स्पष्ट करनी पड़ी है।

मंत्रियों ने कहा- सरकार इस कार्रवाई के पक्ष में नहीं

परिवहन मंत्री डॉ. पंकज सिंह और पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने बुधवार को दिल्ली सचिवालय में प्रेसवार्ता कर साफ किया कि उनकी सरकार इस कार्रवाई के पक्ष में नहीं है।

कहा कि 10 साल तक सत्ता में रही पूर्व की केजरीवाल सरकार के प्रदूषण के मामले में नाकारेपन का फल जनता को भुगतना पड़ रहा है। प्रदूषण रोकने के लिए काम किया होता तो आज ये हालात नहीं होते।

सिरसा ने कहा कि अदालत में आप सरकार ने ठीक से पक्ष नहीं रखा और प्रदूषण पर रोक नहीं लगा पाई। इस कारण अदालत ने दिल्ली में वाहनों पर रोक लगाई है।

मुंबई व कोलकाता में बैन नहीं तो दिल्ली में क्यों ?

उन्होंने सवाल उठाया कि जब मुंबई और कोलकाता में डीजल के वाहनों पर 10 साल के बाद और पेट्रोल वाहनों पर 15 साल के बाद प्रतिबंध नहीं है तो दिल्ली में वाहनों पर प्रतिबंध क्यों है?

उन्होंने कहा कि इस मामले में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग और सुप्रीम कोर्ट को बताया जाएगा कि दिल्ली में प्रदूषण रोकथाम के लिए उनकी सरकार प्रभावी कदम उठा रही है।

एक तरफ लैंडफिल साइटों को हटाने के लिए उनकी सरकार कमर कस चुकी है तो दूसरी ओर प्रदूषण फैलाने वाले अन्य स्रोतों पर प्रहार किया जा रहा है।

सिरसा ने कहा कि अदालत ने पूर्व की केजरीवान सरकार को बार-बार मौका दिया कि दिल्ली के हालात ठीक करो, दिल्ली गैस चैंबर बन गई है, मगर केजरीवाल की सरकार ने कोई काम नहीं किया, कहा कि केजरीवाल ने 10 साल में दिल्ली को और बदहाल कर दिया, सुप्रीम कोर्ट को प्रतिबंध लगाना पड़ा।

क्या दिल्ली में उम्र पूरी कर चुके वाहनों पर सख्ती बढ़ाएगी नए वाहनों की मांग? जानिए क्या सोचते हैं राजधानी के कार डीलर

दिल्ली में उम्र पूरी कर चुके वाहनों पर प्रतिबंध लगने और जब्ती अभियान शुरू होने से वाहन विक्रेता उत्साहित हैं। उन्हें उम्मीद है कि इससे कारों और दोपहिया वाहनों की बिक्री में तेजी आएगी खासकर त्योहारों के मौसम में। डीलरों को 15-20% तक की वृद्धि की उम्मीद है और इस्तेमाल की हुई कारों का बाजार भी गर्म होने की संभावना है।

नई दिल्ली: उम्र पूरी कर चुके वाहनों के जब्ती अभियान से दिल्ली के कार डीलर्स काफी आशांवित हैं। उन्हें उम्मीद है कि मौजूदा अभियान सफल होता है तो आने वाले कुछ माह कारों व दोपहिया वाहनों की बिक्री में बड़ा उछाल देखने को मिल सकता है।

ऐसे में कुछ दिन बाद डीलर्स की ओर से वाहन बिक्री से जुड़े ऑफरों की पेशकश शुरू कर दी जाए तो ताज्जुब नहीं होना चाहिए।

एक कार डीलर्स के अनुसार, वे लोग पूरे अभियान को काफी करीब से देख रहे हैं। क्योंकि, यह वाहनों की मांग में तेजी लाने वाला साबित होगा।

20 से 30 प्रतिशत का भी उछाल आया तो ये बड़ी तेजी होगी

पुरानी कार जब्त होने की स्थिति में लोग नई कारें लेंगे। सभी लेंगे, ऐसा नहीं है, लेकिन उसमें से 20-30 प्रतिशत लोगों ने भी वाहन बाजार का रुख किया तो यह मांग में बड़ी तेजी लाएगा।

यह तेजी प्रत्येक माह 15 से 20 प्रतिशत तक की हो सकती है। अभियान का असर, दीपावली की बिक्री पर भी दिखेगा। दिल्ली में प्रत्येक माह औसतन 14 हजार कारें तथा 46 हजार दो पहिया वाहनों की बिक्री होती है।

उम्र पूरी कर चुके 62 लाख दिल्ली में चल रहे

यह इसलिए क्योंकि अभी भी दिल्ली की सड़कों पर अवधि पूरी कर चुके (ईओएल) 62 लाख दोपहिया व चार पहिया वाहन संचालित हो रहे हैं। इसमें से 41 लाख दो पहिया व बाकि कारें हैं।

परिवहन विभाग ने पेट्रोल पंपों पर लगवाए अपने सिस्टम से अकेले जून माह में 1.36 ईओएल वाहनों की पहचान की है। मंगलवार से शुरू अभियान के माध्यम से ऐसे वाहनों की धरपकड़ शुरू हो गई है।

सरकार को राजस्व व बीमा क्षेत्र में भी आएगा उछाल

फेडरेशन आफ आटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (फेडा) के प्रवक्ता सहर्ष दमानी के अनुसार, दीपावली के दौरान कारों व दोपहिया वाहनों की बिक्री में मांग में 15 से 20 प्रतिशत की तेजी रहती है।

वह तेजी आगे कुछ माह में ही इस अभियान के चलते आ सकती है। जिसके लिए भी आवश्यक तैयारियों पर गंभीरता से विचार किया जाने लगा है। न सिर्फ वाहनों की बिक्री, बल्कि सरकार को राजस्व व बीमा क्षेत्र में भी उछाल आएगा।

इसी तरह करोलबाग के एक कार डीलर ने बताया कि अभी तक लोग किसी न किसी प्रकार ईओएल वाहनों से काम चला ले रहे थे। अब उनकी मजबूरी बन जाएगी कि वह उसे हटाए और नई कार लें।

सेकेंड हैंड कार के बाजार में भी आएगी गर्माहट

ऐसा नहीं है कि केवल नई कारों व दो पहिया वाहन की बिक्री में तेजी आने की उम्मीद है। बल्कि इस्तेमाल कार की भी मांग बढ़ेगी। राजेंद्र नगर में एक इस्तेमाल कार बेचने वाले मनोज भसीन के अनुसार, हर कोई नई कार लेगा ऐसा जरूरी नहीं है। उसमें से अधिकतर इस्तेमाल कार खरीदेंगे। जिसकी कुछ साल अवधि हो तथा वह चलने में बेहतर हो।

पुरानी गाड़ियों की जब्ती पर दिल्ली पंचायत संघ का विरोध, इलेक्ट्रिक वाहनों पर मांगी 30 फीसदी सब्सिडी

दिल्ली पंचायत संघ ने दिल्ली सरकार से पुरानी गाड़ियों की जब्ती की समयसीमा बढ़ाने की मांग की है। संघ ने ग्रामीण क्षेत्रों में इलेक्ट्रिक वाहनों पर सब्सिडी देने का भी आग्रह किया है ताकि किसानों को राहत मिले और प्रदूषण नियंत्रण में मदद मिले। उनका कहना है कि पुरानी गाड़ियाँ ग्रामीणों की आजीविका का साधन हैं।

दिल्ली। दिल्ली पंचायत संघ ने दिल्ली सरकार से मांग की है कि पुरानी गाड़ियों की जब्ती की समयसीमा बढ़ाई जाए और गरीब, ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोग होने वाले दोपहिया और छोटी कारों के बदले इलेक्ट्रिक वाहनों पर कम से कम 30 प्रतिशत सब्सिडी दी जाए।

इससे न केवल दिल्ली देहात व ग्रामीण किसान परिवारों को राहत मिलेगी बल्कि सरकार का प्रदूषण नियंत्रण अभियान भी गति पकड़ेगा। पंचायत संघ प्रमुख थान सिंह यादव ने कहा कि देहात क्षेत्रों में ग्रामीण, किसान परिवारों के पास वाहन ही आजीविका का मुख्य साधन हैं, जो पुराने हो गए हैं।

जिन पर एकदम प्रतिबंध से उनकी आजीविका प्रभावित होगी। उन्होंने कहा कि प्रदूषण की समस्या के कई और स्रोत भी हैं, जिन पर गंभीरता से ध्यान देना आवश्यक है।

विशेषकर दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) द्वारा मास्टर प्लान के तहत विकसित आवासीय क्षेत्रों को बिना उचित आधार के व्यावसायिक श्रेणी में शामिल कर देना, जिससे इन कालोनियों में पार्किंग की समस्या ने मुख्य सड़कों का यातायात प्रभावित किया है।

शहद

शुद्ध शहद की पहचान :

* शहद की कुछ बूंदे पानी में डालें। यदि यह बूंदे पानी में बनी रहती है तो शहद असली है और शहद की बूंदे पानी में मिल जाती है तो शहद में मिलावट है। रूई की बत्ती बनाकर शहद में भिगोकर जलाएं यदि बत्ती जलती रहे तो शहद शुद्ध है।

*एक ज़दिा मक्खी पकड़कर शहद में डालें। उसके ऊपर शहद डालकर मक्खी को दबा दें। शहद असली होने पर मक्खी शहद में से अपने आप ही निकल आयेगी और उड़ जायेगी। मक्खी के पंखों पर शहद नहीं चिपकता।

* कपड़े पर शहद डालें और फिर पौंछे असली शहद कपडे.पर नहीं लगता है।

* कागज पर शहद डालने से नीचे निशान नहीं आता है।

* शुद्ध शहद को कुत्ता नहीं खाता।

* शुद्ध शहद में खुशबू रहती है। वह सर्दी में जम जाता है तथा गरमी में पिघल जाता है।

शहद सेवन विधि :

शहद को दूध, पानी, दही, मलाई, चाय, टोस्ट, रोटी, सब्जी, फलों का रस, नींबू आदि किसी भी वस्तु में मिलाकर खा सकते हैं। सर्दियों में गर्म पेय के साथ गर्मियों में ठंडे पेय के साथ तथा वर्षा ऋतु में प्राकृतिक रूप में ही सेवन करना चाहिए।

सावधानियां :

शहद को अग्नि (आग) पर कभी गरम नही करना चाहिए और न ही अधिक गर्म चीजें शहद में मिलानी चाहिए इससे शहद के गुण समाप्त हो जाते हैं। इसको हल्के गरम दूध या पानी में ही मिला कर सेवन करना चाहिए। तेल, घी, चिकने पदार्थ के साथ सममात्रा (समान मात्रा) में शहद मिलाने से जहर बन जाता है।

यदि शहद से कोई हानि हो तो नींबू का सेवन करें। ऐसी स्थिति में नीबू का सेवन करना रोगों को दूर कर लाभ पहुंचाता है।

रोगों में शहद का प्रयोग :

बिस्तर में पेशाब करना :

कुछ बच्चे रात में सोते समय बिस्तर में ही मूत्र (पेशाब) कर देते हैं। यह एक बीमारी होती है। सोने से पहले रात में शहद का सेवन कराते रहने से बच्चों का निद्रावस्था में मूत्र (पेशाब) निकल जाने का रोग दूर हो जाता है।

पेट दर्द :

*एक चम्मच शुद्ध शहद शीतल पानी में मिलाकर पीने से पेट के दर्द को आराम मिलता है।

*एक चुटकी सौंठ को थोड़े से शहद में मिलाकर चाटने से काफी लाभ होता है। दो तुलसी की पत्तियां पीस लें। फिर इस चटनी को आधे चम्मच शहद के साथ सेवन करें।

* रात्री को सोते समय एक गिलास गुनगुने पानी में एक चम्मच शहद मिलाकर पी लें। इसके इस्तेमाल से सुबह पेट साफ हो जाता है।

अजीर्ण :

*एक गिलास पानी में एक चम्मच नींबू का रस तथा आधा चम्मच शहद मिलाकर लेना चाहिए। इससे अजीर्ण का रोग नष्ट हो जाता है।

* शहद में दो काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर चाटना चाहिए।

* अजवायन थोड़ा सा तथा सौंठ दोनों को पीसकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को शहद के साथ चाटें।

* शहद को जरा सा गुनगुने पानी के साथ लेना चाहिए।

दस्त :

*शहद में सौंफ, धनिया तथा जीरा का चूर्ण बनाकर मिला लें और दिन में कई बार चाटें। इससे दस्त में लाभ मिलता है।

* अनार दाना चूर्ण शहद के साथ चाटने से दस्त बंद हो जाते हैं।

पेट में कीड़े :

अजवायन का चूर्ण एक चुटकी को एक चम्मच शहद के साथ लेना चाहिए। दिन में तीन बार यह चूर्ण लेने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

भूख न लगना :

*सौंठ, कालीमिर्च, पीपल, सेंधानमक इन सब चीजों को मिलाकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण में से आधी चुटकी लेकर एक चम्मच शहद के साथ सुबह, दोपहर और शाम को इसका इस्तेमाल करें।

*एक दो कालीमिर्च तथा दो लौंग को पीसकर शहद के साथ चाटना चाहिए।

अम्लपित्त :

धनिया तथा जीरा लेकर चूर्ण बना लें और शहद मिलाकर धीरे-धीरे चाटना चाहिए। इससे अम्लपित्त नष्ट होता है।

कब्ज :

सौंफ, धनियां तथा अजवायन इन तीनों को बराबर मात्रा में लेकर पीस लें। फिर इस चूर्ण में से आधा चम्मच चूर्ण को शहद के साथ सुबह, दोपहर और शाम को इसका सेवन करना चाहिए। इससे कब्ज दूर होती है।

बवासीर :

रात्रि को सोते समय एक चम्मच त्रिफला-चूर्ण या एरण्ड का तेल एक गिलास दूध के साथ लेना चाहिए। इससे कब्ज दूर हो जाती है।

पीलिया :

* त्रिफला का चूर्ण शहद के साथ सेवन करें। इससे पीलिया का रोग नष्ट हो जाता है।

*गिलोय का रस 12 ग्राम शहद के साथ दिन में दो बार लें।

*नीम के पत्तों का रस आधा चम्मच शहद के साथ सुबह-शाम सेवन करना चाहिए।

सिर का दर्द :

*सिर पर शुद्ध शहद का लेप करना चाहिए। कुछ ही समय में सिर का दर्द खत्म हो जायेगा।

*आधा चम्मच शहद और एक चम्मच देशी घी मिलाकर सिर पर लगाना चाहिए। घी तथा शहद के सूखने के बाद दोबारा लेप करना चाहिए।

*यदि पित्त के कारण सिर में दर्द हो तो दोनों कनपटियों पर शहद लगायें। साथ ही थोड़ा शहद भी चाटना चाहिए।

*सर्दी, गर्मी या पाचन क्रिया की खराबी के कारण सिर में दर्द हो तो नींबू के रस में शहद को मिलाकर माथे पर लेप करना चाहिए।

*कागज के टुकड़ों पर शहद और चूना को मिलाकर माथे के जिस भाग में दर्द हो उस भाग पर रख देने से सिर का दर्द दूर हो जाता है।

*भोजन के साथ शहद लेने से सिर का दर्द दूर हो जाता है।

रतौंधी :

*शहद को सलाई या अंगुली की सहायता से काजल की तरह आंखों में सुबह के समय तथा रात को सोते समय लगाना चाहिए।

* काजल में शहद मिलाकर बराबर लगाते रहने से भी रतौंधी की बीमारी समाप्त हो जाती है।

*शहद को आंखों में काजल की तरह लगाने से रतौंधी रोग दूर होता है। आंखों की रोशनी भी बढ़ती है।

आंख में जलन :

* शहद के साथ निबौली (नीम का फल) का गूदा मिलाकर आंखों में काजल की तरह लगना चाहिए।

*शुद्ध शहद को सलाई या अंगुली की सहायता से काजल की तरह आंख में लगायें।

आंखों के रोग :

* एक ग्राम गुरुच का रस तथा आधा चम्मच शहद को मिला लें। फिर इसे आंखों में नियम से रोज सलाई से लगायें। आंखों की खुजली, दर्द, मोतियाबिंद तथा अन्य सभी रोगों के लिए यह उपयोगी अंजन (काजल) है।

* चार ग्राम गिलोय का रस लेकर उसमें दो ग्राम शहद मिलाकर लोशन बना लें। इसे आंखों में लगायें। आंखों के सभी रोगों में इससे लाभ होगा।

* रोज सुबह ताजे पानी से आंखों को छप्पा (पानी की छींटे) मारकर धोना चाहिए। इसके बाद दो बूंदे नीम का रस तथा चार बूंदे शहद मिलाकर आंखों में लगाना चाहिए।

* कड़वे तेल से बना हुआ काजल शुद्ध शहद के साथ मिलाकर आंखों में लगाना चाहिए।

मुंह के छाले :

* तवे पर सुहागे को फुलाकर शहद के साथ छालों पर लगाना चाहिए। इससे मुंह के छाले ठीक हो जाते हैं।

* छोटी इलायची को पीसकर बारीक चूर्ण बना लें। फिर शहद में मिलाकर छालों पर लगायें।

*फिटकरी को पानी में घोल लें और एक चम्मच शहद के साथ मिलाकर कुल्ला करें। यह कुल्ला भोजन करने से पहले सुबह, दोपहर तथा शाम को करना चाहिए।

*पेट में गर्मी ज्यादा हो तो त्रिफला का चूर्ण शहद के साथ लेना चाहिए। केवल आंवले का चूर्ण शहद के साथ लेने से भी पेट की गर्मी शांत होती है और मुंह के छाले ठीक होने लगते हैं।

आवाज का बैठ जाना :

* फूली हुई फिटकरी पीसकर शहद के साथ मिलाकर सेवन करें। इसमें पानी मिलाकर कुल्ला किया जा सकता है।

* मुलहठी का चूर्ण शहद के साथ चाटना चाहिए।

* कुलंजन मुंह में रखकर चूसने से भी आवाज खुल जाती है।

* 3 से 9 ग्राम बहेड़ा के चूर्ण को शहद के साथ सुबह और शाम सेवन करने से स्वरभंग (गला बैठना) और गले के दूसरे रोग भी ठीक हो जाते हैं।

* 1 कप गर्म पानी में 1 चम्मच शहद डालकर गरारे करने से आवाज खुल जाती है।

थूक के साथ बलगम आना :

*छाती पर शहद की मालिश करके गुनगुने पानी से धो लें। इससे थूक के साथ बलगम का आना बंद हो जाता है।

* रात्रि को सोने से पहले अजवायन का तेल छाती पर मलें।

*पिसी हुई हल्दी, अजवायन और सौंठ को मिलाकर एक चुटकी लेकर शहद में मिलाकर सेवन करें।

पायरिया :

* मसूढ़ों तथा दांतों पर शुद्ध शहद की मालिश करके गुनगुने पानी से कुल्ला करना चाहिए।

*नींबू का रस, नीम का तेल तथा शहद मिलाकर मसूढ़ों की मालिश करके कुल्ला कर लें।

* लहसुन, करेला, अदरक का रस निकालकर शहद में मिलाकर मसूढ़ों पर रोज लगाना चाहिए। तीन-चार दिन तक लगातार मालिश करने से पायरिया तथा मसूढ़ों के अन्य रोग खत्म हो जाते हैं।

खांसी की बीमारी :

* लाल इलायची लेकर इसे भून लें और चूर्ण बना लें, इसमें शहद मिलाकर सेवन करें।

*मुनक्का, खजूर, कालीमिर्च, बहेड़ा तथा पिप्पली-सभी को समान मात्रा में लेकर कूट लें और उसमें से दो चुटकी चूर्ण लेकर शहद में मिलाकर सेवन करें। 3 ग्राम सितोपलादि के चूर्ण को शहद में मिलाकर दिन में तीन बार चाटकर खाने से खांसी दूर हो जाती है।

* 5 ग्राम शहद में लहसुन के रस की 2-3 बूंदे मिलाकर बच्चे को चटाने से खांसी दूर हो जाती है।

* एक नींबू पानी में उबालें फिर निकालकर कांच के गिलास में निचोड़ लें। इसमें 28 मिलीलीटर ग्लिसरीन और 84 मिलीलीटर शहद मिलाकर हिलाएं। एक-एक चम्मच चार बार पीने से खांसी बंद हो जाती है।

*शहद खांसी में आराम देता है। 12 ग्राम शहद को दिन में तीन बार चाटने से कफ निकल जाता है और खांसी ठीक हो जाती है।

* थोड़ी सी फिटकरी को तवे पर भून लेते हैं। इस 1 चुटकी फिटकरी को शहद के साथ दिन में 3 बार चाटने से खांसी में लाभ मिलता है।

काली खांसी :

सबसे पहले रोगी की कब्ज को दूर करना चाहिए। इसके लिए एरण्ड का तेल पिलाया जा सकता है। इसके बाद चिकित्सा आरम्भ शुरू करनी चाहिए। चिकित्सा के लिए शहद में लौंग के तेल की एक बूंद तथा अदरक के रस की दस बूंदे मिलाकर सुबह, दोपहर और शाम को देनी चाहिए।

दमा:

*शहद में कुठार रस 4 बूंद मिलाकर दिन में 3-4 बार देना चाहिए। इससे दमा का रोग नष्ट हो जाता है।

*सोमलता, कूट, बहेड़ा, मुलेठी, अडूसा के पत्ते, अर्जुन की छाल तथा काकड़ासिंगी सबका एक समान मात्रा में लेकर पीस लें। इसमें से एक चम्मच चूर्ण शहद के साथ सेवन करें। प्यास लगने पर गर्म पानी पीयें।

पसलियों में दर्द

सांभर सींग को पानी में घिसकर शहद के साथ मिलाकर पसलियों पर लेप करना चाहिए।

शक्तिवर्द्धक :

एक कप दूध में एक चम्मच शहद मिलाकर सुबह के समय पीने से ताकत बढ़ती है।

जुकाम :

* शहद और अदरक का रस एक-एक चम्मच मिलाकर सुबह-शाम दिन में दो बार पीने से जुकाम खत्म हो जाता है और भूख बढ़ जाती है।

* 2 चम्मच शहद, 200 मिलीलीटर गुनगुना दूध और आधे चम्मच मीठे सोडे को एक साथ मिलाकर सुबह और शाम पीने से जुकाम, फ्लू ठीक हो जाता है। इसको पीने से बहुत पसीना आता है पर पसीना आने पर रोगी को हवा नहीं लगने देना चाहिए।

* 20 ग्राम शहद, आधा ग्राम सेंधानमक और आधा ग्राम हल्दी को 80 मिलीलीटर पानी में डालकर उबाल कर रख लें। कुछ देर बाद जब पानी हल्का सा गर्म रह जाये तो इस पानी को सोते समय पीने से जुकाम दूर हो जाता है।

बिच्छू का डंक :

बिच्छू के डंक मारे हुए स्थान पर शहद लगाने से दर्द कम हो जाता है।

जलन :

* नियमित सुबह 20 ग्राम शहद ठंडे पानी में मिलाकर सेवन करने से जलन, खुजली और फुन्सियों जैसी चर्म रोग जड़मूल से समाप्त हो जाती है।

* शरीर के जले हुए अंगो पर शहद लगाने से जलन दूर होती है। जख्म होने पर शहद को तब तक लगाते रहे जब तक कि जख्म ठीक ना हो जायें। जख्म ठीक होने के बाद सफेद निशान बन जाते हैं। उन पर शहद लगाकर पट्टी बांधते रहने से निशान मिट जाते हैं।

शीघ्रपतन :

स्त्री-संग सम्भोग से एक घण्टा पहले पुरुष की नाभि में शहद में भिगोया हुआ रूई का फोहा रखने से पुरुष का जल्दी स्खलन नही होता अर्थात पुरुष का लिंग शिथिल नहीं होता है।

बलगम युक्त खांसी :

* 5 ग्राम शहद दिन में चार बार चाटने से बलगम निकल कर खांसी दूर होती है।

*शहद और अडूसा के पत्तों का रस एक-एक चम्मच तथा अदरक का रस आधा चम्मच मिलाकर पीने से खांसी नष्ट हो जाती है।

उल्टी :

*गुड़ को शहद में मिलाकर सेवन करने से उल्टी बंद हो जाती है।

* उल्टी होने पर शहद को चाटने से उल्टी होना बंद हो जाती है।

*शहद में लौंग का चूर्ण मिलाकर चाटने से गर्भावस्था में उल्टी आने से छुटकारा मिलता है।

रक्तविकार :

बकरी के दूध में आठवां हिस्सा शहद मिलाकर पीने से खून साफ हो जाता है। इसका प्रयोग करते समय नमक और मिर्च का त्याग कर देना आवश्यक है।

यक्ष्मा या टी.बी. :

*ताजा मक्खन के साथ शहद का सेवन करने से क्षय रोग में लाभ होता है।

*शहद में करेले का चूर्ण डालकर चाटना चाहिए।

हाईब्लडप्रेशर :

दो चम्मच शहद और नींबू का रस एक चम्मच मिलाकर सुबह-शाम दिन में दो से तीन बार सेवन करने से हाई बल्डप्रेशर में लाभ होता है।

कान दर्द :

*कान में शहद डालने से कान की पीव और कान का दर्द नष्ट हो जाता है।

* कान में कनखजूरा सदृश जीव-जंतु घुस गया हो तो शहद और तेल मिलाकर उसकी कुछ बूंदे कान में डालने से लाभ होता है।

आंख आना :

* 1 ग्राम पिसे हुए नमक को शहद में मिलाकर आंखों में सुबह और शाम लगाऐं। सोनामक्खी को पीसकर और शहद में मिलाकर आंखों में सुबह और सांय लगाए।

*चन्द्रोदय वर्ति (बत्ती) को पीसकर शहद के साथ आंखों में लगाने से आंखों के रोग दूर होते हैं।

मलेरिया का बुखार :

शुद्ध शहद 20 ग्राम, सैंधानमक आधा ग्राम, हल्दी आधा ग्राम को पीसकर 80 ग्राम की मात्रा में गर्म पानी में डालकर रात को पीने से मलेरिया का बुखार और जुकाम ठीक हो जाता है।

फेफड़ों के रोग :

फेफड़ों के रोगों में शहद लाभदायक रहता है। श्वास में और फेफड़ों के रोगों में शहद अधिक प्रयोग करते हैं।

दांतों का दर्द :

* 1 चम्मच शहद में, लहसुन का रस 20 बूंद मिलाकर प्रतिदिन सुबह-शाम चाटें। इससे पायरिया, मसूढ़ों की सूजन, दर्द, मुंह की दुर्गन्ध आदि खत्म होती है।

*मसूढ़ों में सूजन व खून निकलने के कारण दांत हिलने लगते हैं। शहद अथवा सरसों के तेल से कुल्ला करने से मसूढ़ों का रोग नष्ट हो जाता है।

इन्फ्लुएन्जा :

* शहद में पीपल का 1 चुटकी चूर्ण मिलाकर चाटने से आराम मिलता है।

* 2 चम्मच शहद, 200 मिलीलीटर गर्म दूध, आधा चम्मच मीठा सोड़ा मिलाकर सुबह और शाम को पिलाने से इन्फ्लुएन्जा पसीना आकर ठीक हो जाता है।

दांत निकलना :

बच्चों के दांत निकलते समय मसूढ़ों पर शहद मलने से दांत निकलते समय दर्द में आराम रहता है।

निमोनिया :

निमोनिया रोग में रोगी के शरीर की पाचन-क्रिया प्रभावित होती है इसलिए सीने तथा पसलियों पर शुद्ध शहद की मालिश करें और थोड़ा सा शहद गुनगुने पानी में डालकर रोगी को पिलाने से इस रोग में लाभ होता है।

जीभ की प्रदाह और सूजन :

जीभ के रोग में शहद को घोलकर मुंह में भरकर रखने से जीभ के रोग में लाभ होता है।

गर्भनिरोध :

*चूहे की मींगनी शहद में मिलाकर योनि में रखने से गर्भ नहीं ठहरता है।

* शहद 250 ग्राम को हाथी की लीद (गोबर) का रस 250 मिलीलीटर की मात्रा में शहद के साथ ऋतु (माहवारी) होने के बाद स्त्रियों को सेवन कराने से गर्भधारण नहीं होता है।

खून की उल्टी :

लाख के पानी में शहद मिलाकर पीने से खून की उल्टी होना रुक जाती है।

मुंह के छाले :

नीलाथोथा लगभग 1 ग्राम का चौथा भाग को भुन पीसकर 10 ग्राम शहद में मिलालें। इस मिश्रण को रूई से छालों पर लगायें तथा लार बाहर निकलने दें। मुंह की गंदगी लार के रूप में मुंह से बाहर निकाल कर छालों को ठीक करती है।

गर्भावस्था का भोजन :

गर्भावस्था में महिलाओं के शरीर में रक्त की कमी आ जाती है। गर्भावस्था के समय रक्त बढ़ाने वाली चीजों का अधिक सेवन करना चाहिए। महिलाओं को दो चम्मच शहद प्रतिदिन सेवन करने से रक्त की कमी नहीं होती है। इससे शारीरिक शक्ति बढ़ती है और बच्चा मोटा और ताजा होता है। गर्भवती महिला को गर्भधारण के शुरू से ही या अंतिम तीन महीनों में दूध और शहद पिलाने से बच्चा स्वस्थ और मोटा ताजा होता है।

हिचकी का रोग :

*शहद में उंगली डूबोकर दिन में 3 बार चाटने से हिचकी से आराम मिलता है।

*शहद और काला नमक में नींबू का रस मिलाकर सेवन करने से हिचकी से आराम मिलता है।

*प्याज के रस में शहद मिलाकर चाटने से हिचकी बंद हो जाती है।

कान का दर्द :

*लगभग 3 ग्राम शहद, 6 मिलीलीटर अदरक का रस, 3 मिलीलीटर तिल का तेल और लगभग 1 ग्राम का चौथा भाग सेंधानमक को एक साथ मिलाकर इसकी थोड़ी सी बूंदे कान में डालकर उसके ऊपर से रूई लगा देने से कान से कम सुनाई देना, कान का दर्द, कान में अजीब-अजीब सी आवाजे सुनाई देना आदि रोग दूर हो जाते हैं।

*5 मिलीलीटर सूरजमुखी के फूलों का रस, 5 ग्राम शहद, 5 मिलीलीटर तिल का तेल और 3 ग्राम नमक को मिलाकर कान में बूंद-बूंद करके कान में डालने से कान का दर्द ठीक हो जाता है।

बहरापन:

शहद में समुद्रफेन को घिसकर कान में डालने से बहरेपन का रोग ठीक हो जाता है।

नपुंसकता :

शहद और दूध मिलाकर पीने से धातु (वीर्य) की कमी दूर होती है। और शरीर बलवान होता है।

कान का बहना :

शहद और नीम की गोंद को बराबर मात्रा में एक साथ मिलाकर कान में 2-2 बूंद डालने से कान मे से मवाद का बहना बंद हो जाता है।

कान के रोग :

*शहद की 3-4 बूंदे कान में डालने से कान का दर्द पूरी तरह से ठीक हो जाता है।

*कान को अच्छी तरह से साफ करके उसमे रसौत, शहद और और औरत के दूध को एक साथ मिलाकर 2-3 बूंदे रोजाना 3 बार कान में डालने से कान में से मवाद का बहना बंद हो जाता है।

कान में कुछ पड़ जाना :

रूई की एक बत्ती बनाकर शहद में भिगो लें और कान में धीरे-धीरे से घुमायें। ऐसा करने से कान में जितने भी छोटे-मोटे कीड़े-मकोड़े होगें वो बत्ती के साथ चिपककर बाहर आ जायेंगे।

घाव :

* पुराने से पुराने घाव में हरीतकी को पानी में पीसकर शहद के साथ मिलाकर लेप करने से घाव शीघ्र ही ठीक हो जाता है।

*शहद लगाने से घाव जल्द भरते है।

कौआ गिरना :

4 से 6 ग्राम शहद को कालक का चूर्ण 1 से 3 ग्राम मिलाकर दिन में 2 बार लेने से रोग में लाभ होता है।

पक्षाघात-लकवा-फालिस फेसियल, परालिसिस :

* लगभग 20 से 25 दिन तक रोजाना लगभग 150 ग्राम शहद शुद्ध पानी में मिलाकर रोगी को देने से शरीर का लकवा ठीक हो जाता है।

* लगभग 28 मिलीलीटर पानी को उबालें और इस पानी के ठंडा होने पर उसमें दो चम्मच शहद डालकर पीड़ति व्यक्ति को पिलाने से कैल्शियम की मात्रा शरीर में उचित रूप में आ जाती है जोकि लकवे से पीड़ति भाग को ठीक करने में मददगार होती है।

आंव रक्त (पेचिश) :

शहद में एक चुटकी अफीम मिलाकर और उसमें घिसकर चाटने से पेचिश के रोगी का रोग दूर हो जाता है।

भगन्दर :

शहद और सेंधानमक को मिलाकर बत्ती बनायें। बत्ती को नासूर में रखने से भगन्दर रोग में आराम मिलता है।

मोच :

मोच के स्थान पर शहद और चूना मिलाकर हल्की मालिश करने से आराम होता है।

प्रसव में देरी :

स्त्री को गुनगुने गर्म पानी के टब में बैठायें तथा शहद में भिगोये हुए कपडे.को योनि में रखे। इससे सर्दी का असर दूर हो जाता है और प्रसव हो जाता है।

प्यास अधिक लगना :

* शहद को मुंह में भरकर कुछ देर तक रखकर कुल्ला करें। इससे तेज प्यास शांत हो जाती है।

* पानी में शहद या चीनी मिलाकर पीने से गले की जलन व प्यास मिट जाती है।

*20 ग्राम शहद को मुंह में 10 मिनट तक रखें फिर कुल्ला कर दें। इससे अधिक तेज प्यास भी शांत हो जाती है।

जलोदर :

* 20 ग्राम शहद में 40 मिलीलीटर पानी डालकर उबालकर रख लें, फिर इस पानी को पिलाने से जलोदर की बीमारी में लाभ होता है।

*शहद और पीपल का चूर्ण छाछ में मिलाकर पीने से लाभ होगा।

मासिक स्राव :

शहद के साथ कबूतर की बीट मिलाकर खाने से रजोदर्शन (माहवारी) होता है और बांझपन दूर हो जाता है।

शीतपित्त :

* केसर 6 ग्राम, शहद 25 ग्राम रोगी को सुबह-शाम खिलाने से शीतपित्त में लाभ मिलता है।

* एक चम्मच शहद और एक चम्मच त्रिफला मिलाकर सुबह-शाम खाने से भी लाभ होता है।

मोटापा (स्थूलता) दूर करने के लिए :

120 ग्राम से लेकर 240 ग्राम शहद को 100 से 200 मिलीलीटर गुनगुने पानी में मिलाकर दिन में 3 बार खुराक के रूप में सेवन करें।

गिल्टी (ट्यूमर) :

चूना और शहद को अच्छी तरह से मिलाकर गिल्टी पर लगाने से रोग में आराम मिलता है।

मोटापा बढ़ाना :

शहद का रोज दूध में मिलाकर सेवन करने से मोटापा बढ़ता हैं।

नींद में चलना :

* शहद के साथ लगभग 1-2 ग्राम पोस्ता पीसकर इसको शहद में घोलकर रोजाना सोने से पहले रोगी को देने से अच्छी नींद आती है। इससे रोगी को आराम से नींद आ जाती है।

*शहद के साथ लगभग 3-9 ग्राम बहेड़ा के चूर्ण को रोगी को सुबह और शाम को सेवन करने से लाभ प्राप्त होता है।

नींद ना आना (अनिद्रा) :

*एक-एक चम्मच नींबू का रस और शहद को मिलाकर रात को सोने से पहले दो चम्मच पीने से नींद आ जाती है। जब नींद खुले तब दो चम्मच पुनः लेने पर नींद आ जाती है और यदि केवल पानी के गिलास में शहद की दो चम्मच डालकर पीने से नींद आ जाती है।

* शहद या शर्करा के शर्बत में पोस्तादाना को पीसकर इसको घोलकर सेवन करने से नींद अच्छी आती है।

पेट के कीड़े :

*दो चम्मच शहद को 250 मिलीलीटर पानी में डालकर दिन में दो बार सुबह और शाम पीने से लाभ होता है।

*थोड़ी मात्रा में सेवन करने से भी पेट के कीड़े समाप्त हो जाते हैं।

आधासीसी (माइग्रेन) :

*इस रोग में सूर्य उगने के साथ दर्द का बढ़ना और ढलने के साथ सिर दर्द का कम होना होता है, तो जिस ओर सिर में दर्द हो रहा हो उसके दूसरी ओर के नाक के नथुने में एक बूंद शहद डालने से सिर के दर्द में आराम मिलता है।

*रोजाना भोजन के समय दो चम्मच शहद लेते रहने से आधे सिर में दर्द व उससे होने वाली उल्टी आदि बंद हो जाती हैं।

नाक के रोग :

शहद या गुड़ के साथ गूलर के पके हुए फल को खाने से नाक से खून आना बंद हो जाता है।

आक्षेप कंपकंपाना :

*शहद के साथ लगभग 1 ग्राम का चौथा भाग से लगभग 1 ग्राम सुहागे की खील (लावा) को चटाने से आक्षेप और मिर्गी में बहुत आराम आता है।

*शहद के साथ लगभग 1 ग्राम का चौथा भाग जटामांसी का चूर्ण सुबह और शाम रोगी को देने से आक्षेप के दौरे ठीक हो जाते हैं।

पेट में दर्द :

*शहद का प्रयोग करने से खाना खाने के बाद होने वाले पेट दर्द समाप्त होते है।

* शहद और पानी मिलाकर पीने से पेट के दर्द में राहत मिलती है।

तंग योनि को शिथिल करना :

10 ग्राम शहद को 5 ग्राम देशी घी में मिलाकर योनि पर लगाने से तंग योनि शिथिल होती है।

भूलने की बीमारी :

शहद के साथ लगभग तीन ग्राम कलौंजी का सुबह के समय सेवन करने से भूलने की बीमारी दूर हो जाती है।

बुद्धि का विकास कम होना :

शहद के साथ लगभग 1 ग्राम का चौथा भाग चांदी की भस्म सुबह और शाम को लेने से बुद्धि के विकास में वृद्धि होती है।

छाती का दर्द :

शहद और पीपल का पीसा हुआ चूर्ण छाछ के साथ पीने से छाती के दर्द में लाभ मिलता है।

चिड़चिडापन और मन की उदासी दूर करना :

शहद के साथ गुल्म कुठार की लगभग 1 या 2 गोलियां सुबह और शाम को देने से चिड़चिड़ा स्वभाव और मन की उदासी दूर हो जाती है।

याददास्त बढ़ाना :

* शहद में लगभग 3 ग्राम कलौंजी का चूर्ण मिलाकर चाटने से याददास्त तेज हो जाती है।

* लगभग 30 ग्राम शहद के साथ 20 ग्राम घी मिलाकर भोजन के बाद रोजाना लेने से दिमाग की याददास्त तेज होती है।

खाज-खुजली :

*6 ग्राम से 10 ग्राम तक गर्म पानी में शहद मिलाकर 45 से 60 दिन तक लगातार पीने से हर प्रकार के चमड़ी के रोग, लाल चकते (निशान), खाज-खुजली ठीक हो जाते है। यहां तक की कोढ़ के रोग में भी आराम हो जाता है।

*शुद्ध आमलासार गन्धक को शहद में मिलाकर खाने से खुजली पूरी तरह से ठीक हो जाती है। गन्धक को रोगी के रोग के लक्षण के मुताबिक लगभग 1 ग्राम का चौथा भाग तक दे सकते है।

त्वचा के रोग :

*फुंसियों पर असली शहद लगाने से त्वचा के रोग जल्दी ठीक हो जाते हैं।

*काली मिट्टी में थोड़ा सा शहद डालकर शरीर में जहां पर फोड़े-फुंसिया हो वहां पर लगाने से लाभ होता है।

अकाउंटेंट्स वित्तीय अखंडता के आर्किटेक्ट और राष्ट्रीय शासन में भागीदार हैं: हरदीप सिंह पुरी

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

ICAI ने भारत मंडपम में 77वां स्थापना दिवस मनाया • ICAI AI एजेंट, एक अगली पीढ़ी का, AI-संचालित डिजिटल वर्कस्पेस लॉन्च किया दुनिया की सबसे बड़ी लेखा संस्था भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंट्स संस्थान (ICAI) ने 1 जुलाई, 2025 को 77वां चार्टर्ड अकाउंटेंट्स दिवस मनाया। इस अवसर पर नई दिल्ली के भारत मंडपम में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने CA. चरणजोत सिंह नंदा, अध्यक्ष ICAI और CA. प्रसन्ना कुमार डी, उपाध्यक्ष, ICAI की उपस्थिति में किया। इस अवसर पर आईसीएआई के केंद्रीय एवं क्षेत्रीय परिषद के सदस्य, आईसीएआई के सचिव सीए (डॉ.) जय कुमार बत्रा तथा पूर्व अध्यक्षगण भी उपस्थित थे। उद्घाटन भाषण के दौरान, माननीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री, हरदीप सिंह पुरी ने इस बात पर प्रकाश डाला, ₹आज, हम न केवल एक संस्था की विरासत, आपकी 77वीं वर्षगांठ का जश्न मना रहे हैं, बल्कि हम यहाँ ईमानदारी, परिश्रम और राष्ट्र निर्माण की भावना का जश्न मना रहे हैं जो इस महान पेशे को परिभाषित करती है। चार्टर्ड अकाउंटेंट वित्तीय ईमानदारी के वास्तुकार, पारदर्शिता के संरक्षक और राष्ट्रीय शासन में विश्वसनीय भागीदार के रूप में खड़े हैं। उनकी विशेषज्ञता आज ऑडिट और कराधान से कहीं आगे निकल गई है, कॉर्पोरेट रणनीति को आकार देने, स्थिरता और घरेलू और वैश्विक स्तर पर निवेशकों का विश्वास बनाने में। परिश्रम, ईमानदारी और विश्व स्तरीय मानकों के माध्यम से, इस पेशे ने वैश्विक आर्थिक महाशक्ति के रूप में भारत के उदय को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जैसे-जैसे देश 2047 तक विकसित भारत की ओर बढ़ रहा है, मुझे विश्वास है कि ICAI और CA बिरादरी हर क्षेत्र में विकास, विश्वास और स्थिरता को आगे बढ़ाते रहेंगे और भारत की विकास कहानी के अगले अध्याय को लिखने में मदद करेंगे। इस उल्लेखनीय मील के पत्थर पर ICAI और इसके सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई।₹ अपने अध्यक्षीय भाषण के दौरान, CA. आईसीएआई के अध्यक्ष चरणजोत सिंह नंदा ने कहा, ₹1700 सदस्यों से लेकर 47 देशों में फैले 5 लाख से अधिक सदस्यों तक, आईसीएआई ने पिछले 77 वर्षों में एक लंबा सफर तय किया है। राष्ट्र निर्माण में एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में आईसीएआई ने हमेशा भारत को विकसित भारत बनने की दिशा में योगदान देने वाली सरकारी पहलों का समर्थन किया है। हमारा पेशा तेजी से विकसित हो रहा है, एआई, ब्लॉकचेन और बड़े डेटा के साथ, उपकरण बदल सकते हैं, लेकिन हमारे मूल्य स्थिर रहने चाहिए।₹ धन्यवाद ज्ञापन करते हुए, सीए प्रसन्ना कुमार डी, उपाध्यक्ष, आईसीएआई ने कहा, ₹चार्टर्ड अकाउंटेंट भारतीय अर्थव्यवस्था के स्तंभ हैं और 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए राष्ट्र निर्माण में

भागीदार बने रहेंगे।₹ इस कार्यक्रम में पूंजी बाजार पर एक व्यावहारिक तकनीकी सत्र भी देखा गया, जिसे ज़ी बिजनेस के प्रबंध संपादक अनिल सिंघवी और पूंजी बाजार विशेषज्ञ विजय केडिया ने संबोधित किया। सीए दिवस के अवसर पर, ICAI ने 'ICAI AI एजेंट' लॉन्च किया - यह अपने कर्मचारियों के लिए डिज़ाइन किया गया एक अगली पीढ़ी का, AI-संचालित डिजिटल वर्कस्पेस है, जिसे अगले चरण में सदस्यों और छात्रों तक विस्तारित करने की योजना है। यह मील का पत्थर ICAI की एक स्मार्ट, AI-सक्षम पेशेवर पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण छलांग है।

इसके अलावा, ICAI ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास के लिए समर्पित एक समूह की भी स्थापना की। यह समूह लोगों पर केंद्रित दृष्टिकोण, कृषि-उद्यमिता को बढ़ावा देने, सतत विकास लक्ष्यों को स्थानीय बनाने और जमीनी स्तर पर सरकारी योजनाओं के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित करता है।

ICAI के 77वें स्थापना दिवस को श्रद्धांजलि देते हुए, भारत के पारंपरिक और लोक नृत्यों के माध्यम से ICAI की यात्रा को प्रदर्शित करते हुए 'विश्वासनिया' थीम पर एक सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुति की गई।

आईसीएआई के बारे में

भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंट्स संस्थान (आईसीएआई) भारत में चार्टर्ड अकाउंटेंसी के पेशे के विनियमन और विकास के लिए चार्टर्ड अकाउंटेंट्स अधिनियम, 1949 के तहत संसद के एक अधिनियम द्वारा स्थापित एक वैधानिक निकाय है। संस्थान भारत सरकार के कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय की प्रशासनिक देखरेख में कार्य करता है। 14.5 लाख से अधिक सदस्यों और छात्रों के साथ, आज आईसीएआई दुनिया का सबसे बड़ा पेशेवर अकाउंटेंसी निकाय है। आईसीएआई के पास भारत के भीतर 5 क्षेत्रीय परिषदों और 179 शाखाओं का एक विस्तृत नेटवर्क है और दुनिया भर में 47 देशों के 85 शहरों में 54 विदेशी अध्याय और 31 प्रतिनिधि कार्यालयों के साथ एक वैश्विक उपस्थिति है।

इंस्टाग्राम पर एक्टर के एआई जनरेटेड वीडियो से ठगा, ऑनलाइन निवेश का झांसा देकर लगाया 1.86 करोड़ का चूना

परिवहन विशेष न्यूज

दक्षिणी दिल्ली में एक व्यक्ति को फर्जी निवेश योजना में 1.86 करोड़ रुपये की ठगी का शिकार बनाया गया। जालसाजों ने एक एक्टर का फर्जी वीडियो इस्तेमाल कर पीड़ित को फंसाया और उच्च लाभ का लालच देकर पैसे ट्रांसफर करवाए। बाद में संपर्क बंद कर दिया। पीड़ित ने दिल्ली पुलिस में शिकायत दर्ज कराई जिसके बाद पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

दिल्ली : दक्षिणी दिल्ली के वसंत विहार इलाके में रहने वाले एक व्यक्ति को इंस्टाग्राम पर एक एक्टर का फर्जी वीडियो दिखाकर जालसाजों ने 1.86 करोड़ रुपये ठग लिए। यह ठगी एक फर्जी निवेश योजना के बहाने अंजाम दी गई, जिसमें एक प्रसिद्ध भारतीय एक्टर का वीडियो उपयोग कर उसे भरोसेमंद दिखाया गया था। माना जा रहा है कि ये वीडियो एआई जेनेरेट है। पुलिस जांच में जुटी है। पीड़ित ने जब इस वीडियो को देखा, तो वह उसमें किए गए उच्च रिटर्न के वादे से प्रभावित होकर फर्जी वेबसाइट पर पंजीकरण कर बैठा, जिसकी वजह से उसे चूना लगा गया।

जब जालसाजों ने रकम ट्रांसफर कराने के बाद संपर्क बंद कर दिया तो पीड़ित को ठगी का पता चला, जिसके बाद उन्होंने दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल की आईएफएसओ (इंटेलिजेंस फ्यूजन एंड स्ट्रैटेजिक आपरेशंस) यूनिट में शिकायत दर्ज कराई।

जानकारी के मुताबिक, पंजीकरण के कुछ ही समय बाद, खुद को निवेश सलाहकार बताने वाले कुछ लोगों ने इंटरनेट मीडिया एप्लिकेशन के जरिए पीड़ित से संपर्क करना शुरू किया।

उन्होंने ट्रेडिंग के नाम पर उन्हें विभिन्न बैंक खातों में पैसा ट्रांसफर करने को राजी किया। आरोपित उन्हें यह बताने लगे कि कब और कितने लाभ पर किस सिक्योरिटी को खरीदना या बेचना है। इसके अलावा, उन्होंने वीडियो काल के जरिए उच्च लाभ के आंकड़े दिखाकर उन्हें अधिक निवेश करने को प्रेरित किया। ठगों ने इस पूरे प्रकरण को वैध दिखाने के लिए एक जाली क्लाइंट एग्रीमेंट दस्तावेज भी भेजा, जिससे पीड़ित को विश्वास हो गया कि वह किसी असली ट्रेडिंग प्लेटफार्म पर निवेश कर रहा है। एक महीने की अवधि में, पीड़ित ने 1,86,42,475 रुपये विभिन्न बैंक खातों में ट्रांसफर कर दिए। इन खातों पर भी ठगों का नियंत्रण था और फंड को वहीं से हेरफेर किया गया।

दिल्ली के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले स्टूडेंट्स के लिए गुड न्यूज, सीएम रेखा गुप्ता ने कर दिया बड़ा एलान

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने दिल्ली सचिवालय में शिक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक की। उन्होंने स्कूलों के बुनियादी ढांचे को सुधारने साइंस लैब को आधुनिक बनाने और शिक्षकों की नियुक्ति में तेजी लाने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली के हर बच्चे को विश्वस्तरीय शिक्षा मिलनी चाहिए और सरकार शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने मंगलवार को दिल्ली सचिवालय में शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की। बैठक में स्कूलों के आधारभूत ढांचे, स्मार्ट क्लासरूम, साइंस लैब, स्टेडियम मरम्मत और शिक्षकों की नियुक्तियों सहित कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा हुई।

मुख्यमंत्री ने कहा, "दिल्ली का हर बच्चा चाहे किसी भी पृष्ठभूमि से आता हो, उसे समान अवसर और विश्वस्तरीय शिक्षा मिलनी चाहिए। शिक्षा केवल कक्षा तक सीमित नहीं, बल्कि पूरे वातावरण में दिखनी चाहिए।" मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि दिल्ली के सभी सरकारी स्कूलों में साइंस लैब आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित हों।

उन्होंने कहा कि प्रयोग आधारित शिक्षा से बच्चों की समझ, तार्किक क्षमता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित होगा। बैठक में मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि जिन स्कूल भवनों, कक्षाओं और शौचालयों की स्थिति खराब है, उनकी विस्तृत सूची जल्द तैयार की जाए और मरम्मत कार्यों को प्राथमिकता देते हुए युद्धस्तर पर पूरा किया जाए।

'शिक्षकों की नियुक्तियां शीघ्र सुनिश्चित हो'

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने शिक्षा विभाग को सभी रिक्त पदों को तत्काल भरने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा, "प्राथमिक से माध्यमिक तक हर विषय के लिए योग्य, प्रशिक्षित और प्रेरित शिक्षक नियुक्त किए जाएं। इसमें किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी।"

स्मार्ट क्लासरूम से डिजिटल शिक्षा को मिलेगी मजबूती-सीएम

बैठक में मुख्यमंत्री ने कहा कि पहले चरण में प्रस्तावित दो हजार स्मार्ट क्लासरूम के निर्माण और संचालन को तेजी से पूरा किया जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रत्येक स्मार्ट क्लासरूम में इंटरनेट कनेक्टिविटी, इंटरैक्टिव पेनल- प्रोजेक्टर, आडियो-विजुअल एड्स जैसी सुविधाएं अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराई जाएं, जिससे छात्रों को उन्नत शिक्षण वातावरण प्राप्त हो सके।

स्टेडियम के प्रवेश द्वार होंगे बेहतर-रेखा गुप्ता

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को त्यागराज स्टेडियम और छत्रसाल स्टेडियम के प्रवेश द्वारों को आधुनिक और भव्य बनाने के निर्देश दिए। साथ ही, इन स्टेडियमों के मरम्मत कार्यों को शीघ्र पूरा करने का भी आदेश दिया, ताकि खिलाड़ियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

अवैध झुग्गियों पर चले बुलडोजर से सुलगते सवालों के बीच अरविंद केजरीवाल द्वारा दिल्ली दंगल में कूदने के सियासी मायने

कमलेश पांडेय

देश की राजधानी और दिलवालों के शहर दिल्ली की अवैध झुग्गियों पर चले बुलडोजर से उपजते सवालों के बीच प्रमुख विपक्षी पार्टी आप के संयोजक अरविंद केजरीवाल भी अपने सुलगते आरोपों के साथ कूद पड़े हैं। इससे सत्ताधारी भाजपा की सियासी मुश्किलें बढ़नी स्वाभाविक हैं, जिससे बचने के लिए उसके नेता दलील दे रहे हैं कि कोर्ट के आदेशों के दृष्टिगत यह कार्रवाई चल रही है। लिहाजा इसमें भाजपा का कोई हाथ नहीं है जबकि दिल्ली के दंगल में कूदे अरविंद केजरीवाल अपने पुराने बयानों का हवाला देते हुए याद दिला रहे हैं कि चुनाव से पहले ही उन्होंने झुग्गियों पर होने वाली संभावित कार्रवाई के बारे में लोगों को आगाह कर दिया हूँ और अब उनका साथ मिला तो दिल्ली सरकार के खिलाफ आर-पार की लड़ाई उनकी पार्टी लड़ेगी।

इसलिए चर्चा है कि दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल एक बार फिर से यहां के सियासी दंगल में कूद पड़े हैं, प्रायः उसी अंदाज में जैसा कि वो चुनाव से पहले दिखाया करते थे। ऐसे में सवाल है कि आखिरि ऐसी क्या वजह रही कि उन्हें खुद ही मैदान में उतरने के लिए मजबूर होना पड़ा। वहीं दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री आतिशी मार्लेना और पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसौदिया, राज्यसभा सांसद संजय सिंह आदि के रहते हुए भी उन्हें किसी सेनानायक की तरह खुद ही सियासी मैदान में उतरना पड़ा जबकि दिल्ली विधानसभा चुनाव के बाद वो पंजाब का रुख कर चुके थे। वहीं, पंजाब व गुजरात विधानसभा उपचुनाव की जीत ने भी उन्हें उत्साहित किया है।

बताया जाता है कि भारतीय राजनीति में किसी भी चतुर नेता की सियासी मौत नहीं होती है बल्कि ब्रेक के बाद उसके फिर से उभरने के चांसेज बने रहते हैं बशर्ते कि उसे मुद्दे की समझ हो और जनसंघर्ष की ललक। ये दोनों चीजें केजरीवाल में कूट कूट कर भरी हैं। यही वजह है कि

दल्ली विधानसभा चुनाव के हारने के कई महीनों बाद अरविंद केजरीवाल एक बार फरि पूरी रौ में दिखे और दिल्ली सरकार से लेकर केंद्र सरकार तक पर फरि उसी तरह से अटैक कयिा जैसे वो पहले किया करते थे।

इसलिए लोगों के जेहन में यह सवाल कुरेद रहा है कि आखरि ऐसा क्या हुआ कि केजरीवाल को दल्ली के मैदान पर उतरना पड़ा जबकि दल्ली में शकिस्त के बाद उन्होंने पंजाब में डेरा डाल दिया था। इस बीच कुछ घटनाएं भी हुईं लेकिन वे दल्ली आने से बचे। इससे लोग कयास लगा रहे हैं कि शायद वो गम्भीरता पूर्वक दिल्ली में वापसी का रास्ता और मुद्दे दोनों तलाश रहे थे जो दल्ली की अवैध झुग्गियों पर चले बुलडोजर ने उन्हें दे दिया क्योंकि ये लोग ही तो उनके कोर वोटर्स रहे हैं।

यही वजह है कि जब उनके कोर वोटर्स की अवैध झुग्गियों पर बुलडोजर चला तो अरविंद केजरीवाल अपनी पूरी टीम के साथ पुनः दिल्ली दाखिल हो लिए और यहां के सियासी दंगल में जोरदार पलटवार के अंदाज में उतर गए। अपनी सोची समझी रणनीति के मुताबिक वो पहले दिल्ली सरकार, उसके बाद केंद्र सरकार पर जमकर बरसे। उन्होंने झुग्गी वासियों को याद दिलाते हुए कहा कि, 'चुनाव से पहले मैंने दिल्ली के गरीबों और झुग्गीवालों के लिए वीडियो जारी करके कहा था कि अगर बीजेपी की सरकार आ गई तो यह एक साल में ही झुग्गियां तोड़ देंगे। आज वही हो रहा है। ये सारी झुग्गियां तोड़ने का इरादा लेकर आए हैं।'

इससे स्पष्ट है कि केजरीवाल का मकसद साफ है कि अब दल्ली में दो-दो हाथ करने हेतु वो फरि से उतर गए हैं। ऐसे में सवाल फिर वही कि आखरि ऐसा क्या हुआ कि केजरीवाल को फरि दिल्ली के दंगल में उतरने

का मौका मिल गया? आखिर झुग्गियों पर बुलडोजर चला तो केजरीवाल को क्यों चुभा? जिससे वो फरि से दिल्ली के सियासी दंगल में उतरने को मजबूर हुए।

समझा जाता है कि दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की सरकार ने यहां पर वो कार्ड चल दिया जो केजरीवाल के लिए मुसीबत बन सकता था क्योंकि अगर वे इस वक्त नहीं बोलते, तो यहां की झुग्गियों का एक बड़ा वर्ग उनसे छूट जाता। इसलिए केजरीवाल ने कहा भी है कि, ₹दिल्ली की झुग्गियों में 40 लाख लोग रहते हैं. यदि ये इकट्ठे हो गए तो किसी की औकात नहीं है जो आपकी झुग्गी तोड़ने आ जाए।

राजनीतिक मामलों के जानकार बताते हैं कि यह सारा खेल इन 40 लाख लोगों यानी वोटर्स का है जिसके चलते अरविंद केजरीवाल पुनः अपना सियासी मैदान पाने और बचाने, दोनों के लिए एक सोची समझी रणनीति के तहत पुनः मैदान में कूदे हैं। इस प्रकार यदि विधानसभा चुनावों के आंकड़े देखें तो 2015 में आम आदमी पार्टी यानी आप को स्लम-वोट में लगभग 66प्रतिशत मिला था। वहीं, सीएसडीएस के सर्वे के मुताबिक 2020 में आम आदमी पार्टी को 61प्रतिशत वोट यहां मिले। लेकिन 2025 में यह आंकड़ा बदलता दिखा। सियासी कोढ़ में खाज यह कि सबसे ज्यादा स्लम वाली 10 सीटों में 7 बीजेपी को मिल गईं, जो आपके हार की वजह बनी लेकिन बीजेपी ने उनसे जो गद्दारी की है, उसका सियासी मजा तो वे तब चखाएंगे, जब पुनः यहां पर कोई चुनाव होंगे।

बताते चलें कि दिल्ली में 675 झुग्गी झोपड़ियां हैं जहां लगभग तीन लाख परिवार रहते हैं। ये कॉलोनियां यहां की कुल 70 विधानसभा क्षेत्रों में से 62 विधानसभा क्षेत्रों में फैली हुई हैं। खास बात यह कि इन विधानसभा क्षेत्रों में तकरीबन 40 फीसदी वोटर झुग्गी झोपड़ियों वाले हैं, जो किसी भी चुनाव में जीत हार तय करने की स्थिति में होते हैं। कुछ यही वजह है कि केजरीवाल समझते हैं कि अगर इन्हें छोड़ दिया तो दिल्ली का चुनाव आगे जीतना मुश्किल हो जाएगा क्योंकि इनमें से बहुत सारे वोटर्स केजरीवाल के कोर वोटर्स रहे हैं। आप की फ्री बिजली-पानी, बस यात्रा, मोहल्ला क्लीनिक जैसी सुविधाएं, इन लोगों को लुभाती रही हैं और केजरीवाल सरकार के ये बड़े लाभार्थी रहे हैं। इसलिए अब झुग्गी झोपड़ियों पर बुलडोजर चलने का मतलब है कि इन वोटर्स में यह भय पैदा किया जा रहा है। चतुर राजनीतिक खिलाड़ी केजरीवाल इस स्थिति का लाभ लेना चाहते हैं।

वहीं, दल्ली बीजेपी अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने केजरीवाल की इस रैली पर तीखा पलटवार करते हुए कहा कि, यह हारे हुए ठुकराए हुए और दिल्ली से भगाए गए लोगों का जमावड़ा है। किराए के लोगों को बुलाकर भीड़ इकट्ठा की गई। ये अर्बन नक्सलवादी विचारधारा मानने वाले लोग हैं। अरविंद केजरीवाल और उनकी पूरी टीम में अराजकवादी लोग हैं जो हमेशा संविधान के खिलाफ जाकर बात करते हैं।

वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

भाजपा को झटका, पार्षद सुमन टिंकू राजोरा बीजेपी को छोड़ "आप" में शामिल

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम में भाजपा को बड़ा झटका लगा है। मंगलवार को वार्ड 50 से पार्षद सुमन टिंकू राजोरा भाजपा को छोड़कर वापस आम आदमी पार्टी में शामिल हो गईं। ''आप'' मुख्यालय पर दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने पटका पहनाकर उन्हें और उनके पति टिंकू राजोरा को पार्टी में शामिल किया और ''आप'' परिवार में शामिल होने पर बधाई दी। इस दौरान एमसीडी में नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने कहा कि विपक्ष में रहकर भी आम आदमी पार्टी दिल्ली की गरीब जनता की मजबूत आवाज बनकर खड़ी है। हम भाजपा सरकार पर नजर रखे हुए हैं ताकि वह जनहित के काम करे।

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता व एमसीडी के नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने मंगलवार को पार्टी मुख्यालय में प्रेस वार्ता कर कहा कि आज बहुत हर्ष की बात है कि वार्ड नंबर 50 से निगम पार्षद सुमन टिंकू रजोरा और उनके पति टिंकू रजोरा भाजपा को छोड़कर दोबारा आम आदमी पार्टी के परिवार में शामिल हो गए हैं। "आप" दिल्ली की जनता, खासकर गरीब जनता की आवाज बनकर खड़ी हुई है। विपक्ष में रहते हुए भी आम आदमी पार्टी इस बात पर नजर रख रही है कि जनता के हित में काम हो। इससे प्रभावित होकर सुमन टिंकू रजोरा और उनके पति टिंकू रजोरा ने भाजपा को छोड़कर ''आप'' में आने का फैसला किया। हम इनका हार्दिक स्वागत करते हैं।

इस दौरान सुमन टिंकू रजोरा कहा कि मैं अपने आम आदमी पार्टी परिवार में वापस आकर बहुत खुश हूं। इस खुशी को बयां नहीं कर सकती। कुछ माह पहले मुझसे बहुत बड़ी गलती हुई थी, जब मैं ''आप'' को छोड़कर भाजपा में चली गई। मैं इसे अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी गलती मानती हूं। मैंने ऐसी गलती की और फिर भाजपा की सरकार बन गई। मैंने देखा कि भाजपा गरीबों पर अत्याचार कर रही थी। भाजपा ने वादा किया था कि जहां झुग्गी, वहां मकान देंगे, लेकिन बाद में उसने झुग्गीवालों को बेघर कर दिया। उनके सिर से छत छीन ली और उन्हें पूरी तरह अलग-थलग कर दिया।

सुमन टिंकू रजोरा कहा कि यह देखकर मुझे बहुत दुख हुआ। मुझे महसूस हुआ कि भाजपा में जाकर मैंने बहुत बड़ी गलती की। मैंने एमसीडी के चेयरमैन में अपनी गलती सुधारने की कोशिश की और "आप" प्रत्याशी को वोट देकर चेयरमैन बनवाया। तब जाकर मेरे दिल को ठंडक मिली। भाजपा एक ऐसी पार्टी है, जो गरीबों का साथ बिल्कुल नहीं देती। बीजेपी गरीबों को जड़ से मिटाना चाहती है। भाजपा को अरविंद केजरीवाल से कुछ सीखना चाहिए। अरविंद केजरीवाल जो कहते हैं, वह करते हैं। मेरा एक सपना है और रोज प्रार्थना करती हूं कि अरविंद केजरीवाल आने वाले समय में प्रधानमंत्री बनें।

द निश फाउंडेशन का "रिदम -9 उत्सव" प्रोग्राम संपन्न

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। द निश फाउंडेशन ने हर साल की तरह इस साल भी "रिदम -9 उत्सव" प्रोग्राम कराया जो सत्या ऑडिटोरियम , सत्यवती कॉलेज अशोक विहार दिल्ली में 29 जून ,रविवार 2025 को हुआ इसमें 100 से ज्यादा बच्चों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और अपनी संस्कृति अपने त्योहारों को डांस के माध्यम से प्रस्तुत किया ।

साथ ही द निश फाउंडेशन ने अपने कई बच्चों को सर्टिफिकेट देकर उनको शुभ मंगल कामना की बधाई दी । उनके इस अचीवमेंट अवार्ड के लिए उन बच्चों की अभिभावकों को स्टेज पर बुलाकर उनका सम्मान दिया और उनके बच्चों और उनके परिवार को बधाई दी ।

द निश फाउंडेशन के प्रेसिडेंट एवं निश डांस अकादमी के डायरेक्टर मिस्टर विवेक राजपूत , वाइस प्रेसिडेंट बलप्रीत राजपूत एवं उनकी पूरी टीम ने इस आयोजन को संपूर्ण किया ।

इसमें हमारे अतिथियों में श्री सिकंदर सिंह (आईपीएस), श्रीमती रिमझिम सिंह (एथनिक ब्लॉसम) , श्री राहुल गुप्ता साथ श्रीमती सारिका गुप्ता , श्री राजीव वत्स (इंस्पेक्टर), श्रीमान सुनील भारद्वाज (ASI), डॉ. लीना व्यास (छत्रसाल स्टेडियम), श्रीमती नीतू चौधरी , सरदार अमरिक सिंह (समाजसेवी) ,श्री प्रदीप मलान एवं हरप्रीत कौर (प्रवाह फाउंडेशन), बजिंग ब्रेन से सुमित चौधरी एवं अधिवक्ता संघ से श्री मोती प्रसाद , वीरेंद्र सोनकर , मोहन शर्मा , अमित ठाकुर , मनोज मित्तल , मिस साबिया खान सम्मिलित हुए !

साथ ही हमारे बॉलीवुड सितारो में महेश गहलोत और विकी चड्ढा एवं मिस प्रीति (ग्लोबल मिस इंडिया इंटरनेशनल) सम्मिलित हुए।

द निश फाउंडेशन को आगे बढ़कर प्रेम स्टूडियो जो देश भर में और देश के बाहर वीडियोग्राफी और फोटोग्राफी के लिए बहुत फेमस हैं जिसके मालिक गौरव सभरवाल उन्होंने अपनी फोटोग्राफी वीडियोग्राफी द निश फाउंडेशन को भेंट करी ।

हमारे एंकर पूजा सेठी एवं कमल शर्मा जिन्होंने पूरे मंच को संभाला और साथ ही लोगों को पूरे फंक्शन से जोड़कर रखा ,साथ ही रिचा फैंसी ड्रेस ,श्री आशीष माहेश्वरी (द मास्टर क्रिएटिव आर्ट्स) से इन्होंने बच्चों को ड्रेस और मेकअप के साथ स्टेज पर उतारा।

इसी के साथ श्रीमती अंजलि बिंद्रा (प्रेसिडेंट ऑफ इनर व्हील क्लब ,नोएडा) ने हमारे गैस्ट्रो के उपहार के लिए अपनी तरफ से बहुत अच्छे उपहार भेजें और यहां प्रभात स्पेशल स्कूल से बच्चों ने अपनी प्रतिभा को सबके सामने रखा जिसकी तैयारी निश डांस एकेडमी के टीचर कई समय से करवा रहे थे और उनकी मेहनत सफल हुई। इस स्कूल की कमान श्री आनंद गोहर जी ने संभाली । निश डांस एकेडमी में सीखने आए बच्चों के अभिभावकों श्रीमान शमी राय, श्रीमान रावेश कुमार ने बच्चों को सपोर्ट किया हम इन सब का तहे दिल से शुक्रिया करते हैं और साथ ही हम सभी आए पेरेंट्स का तहे दिल से शुक्रिया करते हैं और उनको उनके बच्चों के अच्छी परफॉर्मेंस के लिए बधाई देते हैं और साथ ही द निश फाउंडेशन आए हुए सभी मीडिया का शुक्रिया करते हैं कि वह हमारे बच्चों को एवं अभिभावकों को हर साल की तरह इस साल भी कवरेज करके उनके हौसलों को बुलंदियों तक ले जाते हैं।

आपातकाल के दौरान इंदिरा गांधी के समक्ष आरएसएस की समर्पणकारी भूमिका

(आलेख : सवेरा, अनुवाद : संजय पराते)

आपातकाल की 50वीं वर्षगांठ पर, उन काले दिनों को याद करते हुए भाजपा और आरएसएस धार्मिक उत्साह से भरे हुए हैं। वे इस दिन को 'संविधान हत्या दिवस' के रूप में मना रहे हैं। गृह मंत्री अमित शाह ने एक पुस्तक का विमोचन किया है, जिसमें इस बात की याद ताजा की गई है कि किस प्रकार प्रधानमंत्री मोदी, जो उस समय आरएसएस के प्रचारक थे, ने भूमिगत होकर विभिन्न संगठनात्मक कार्य किए थे। आरएसएस के मुखपत्र 'ऑर्गनाइजर' में आपातकाल के विभिन्न पहलुओं पर कई लेख हैं, जिनमें से एक लेख आपातकाल का विरोध करने में आरएसएस की भूमिका पर भी है।

इस सबके बीच, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि उस दौरान आरएसएस नेताओं द्वारा जो समझौते और समर्पण किए गए थे, उस सबको यहां कोई जगह नहीं मिलती। इस घिनौने अध्याय को छाती ठोकने वाली घोषणाओं की बौछार के नीचे दबा दिया गया है। इस अवसर पर इस दोहरेपन को याद करने की जरूरत है।

बालासाहेब देवरस द्वारा इंदिरा गांधी को लिखे गए पत्र

बालासाहेब देवरस उस समय आरएसएस के सरसंघचालक (सुप्रीमो) थे। आपातकाल के शुरुआती दिनों में उन्हें विपक्षी दलों के कई अन्य नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ गिरफ्तार किया गया था। बाद में पुणे की यरवदा जेल से उन्होंने प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और अन्य लोगों को कई पत्र भेजे, जिसमें उन्होंने अपने को जेल से रिहा करने की गुहार लगाई और आश्वासन दिया कि आरएसएस के कार्यकर्ता राष्ट्र निर्माण के लिए काम करेंगे। क्रिस्टोफ़ जैफ़रलॉट और प्रतिनव अनिल द्वारा लिखित "भारत की पहली तानाशाही : आपातकाल, 1975-1977" के निम्नलिखित अंशों पर एक नज़र डालें। मूल पत्र बालासाहेब देवरस द्वारा लिखित "हिंदू संगठन और सत्तावादी राजनीति" के परिशिष्ट में देखे जा सकते हैं।

22 अगस्त 1975 को लिखे गए पहले पत्र में उन्होंने लिखा था :

"15 अगस्त 1975 को आकाशवाणी से प्रसारित और राष्ट्र के नाम आपके संदेश को मैंने जेल से ध्यानपूर्वक सुना। आपका भाषण इस अवसर के लिए उपयुक्त और संतुलित था।"

ध्यान दें कि वे इंदिरा गांधी के उस भाषण का जिक्र कर रहे थे, जिसमें आपातकाल को व्यापक रूप से उचित ठहराने का प्रयास किया गया था। इस आपातकाल का मतलब था विपक्षी नेताओं को जेल में डालना, प्रेस पर सेंसरशिप लगाना, मौलिक अधिकारों को निलंबित करना, न्यायपालिका को बेड़ियों में जकड़ना और मजदूरों के सभी अधिकारों को छीन लेना। उन्हें यह सब "अच्छी तरह से संतुलित" लगता है।

उन्होंने 4 अगस्त 1975 को एक अध्यादेश के माध्यम से आरएसएस पर लगाए गए प्रतिबंध को हटाने के लिए आगे तर्क देते हुए कहा :

आरएसएस ने कभी भी ऐसा कुछ नहीं किया, जिससे सरकार के सुचारू संचालन, देश की आंतरिक सुरक्षा और शांति में बाधा उत्पन्न हो। संघ का उद्देश्य अखिल भारतीय हिंदू समुदाय को एकजुट करना, संगठित करना और उसका अनुकरण करना है। संगठन हमारे समाज को अनुशासित करने का प्रयास करता है... संगठन ने कभी भी हिंसा के कारणों की वकालत नहीं की है, न ही इसने किसी को ऐसे कृत्यों के लिए उकसाया है... यद्यपि संघ का क्षेत्र केवल हिंदू समुदाय तक ही सीमित है, फिर भी यहां किसी भी गैर-हिंदू समाज के खिलाफ कुछ भी नहीं सिखाया जाता है।

मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप कृपया उपरोक्त बातों को ध्यान में रखें और आरएसएस पर से प्रतिबंध हटा लें। यदि आप इसे उचित समझते हैं, तो आपसे मेरी मुलाकात मेरे लिए खुशी की बात होगी।

इस पत्र में संविधान के साथ विश्वासघात, लोकतंत्र के दमन या किसी अन्य अन्याय पर कोई विरोध या आपत्ति नहीं है -- थोड़ी-सी भी नहीं ! सुप्रीमो देवरस केवल यह तर्क दे रहे हैं कि केवल आरएसएस को ही छोड़ दिया जाए, क्योंकि यह सरकार के सुचारू संचालन में कभी बाधा नहीं बनेगा !

उन्होंने अपने पत्र का अंत इस प्रकार किया है : "मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप कृपया उपरोक्त बातों को ध्यान में रखें और आरएसएस पर से प्रतिबंध हटा लें। यदि आप इसे उचित समझें तो आपसे मेरी मुलाकात मेरे लिए खुशी की बात होगी।"

इंदिरा गांधी ने इस अपील का जवाब नहीं दिया। इसलिए बालासाहेब को 10 नवंबर 1975 को एक और पत्र लिखना पड़ा। तब तक कानून में बदलाव के कारण सुप्रीम कोर्ट ने इंदिरा गांधी को उनके लोकसभा क्षेत्र से हटाने के इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले को पलट दिया था। यह आपातकाल का प्रतीक था। लेकिन बालासाहेब के लिए यह खुशी मनाने का मौका था :

"मैं आपको बधाई देता हूं, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट के पांच न्यायाधीशों ने आपके चुनाव की वैधता घोषित कर दी है।"

फिर वे अपनी सोच बताते हैं : "हजारों आरएसएस कार्यकर्ताओं को मुक्त कर दिया जाए और संघ पर लगे प्रतिबंध हटा दिए जाएं। अगर ऐसा किया जाता है, तो लाखों आरएसएस स्वयंसेवकों की निस्वार्थ सेवा की शक्ति का उपयोग राष्ट्रीय उत्थान (सरकारी और गैर-सरकारी) के लिए किया जा सकेगा और जैसा कि हम सभी चाहते हैं, हमारा देश समृद्ध होगा।"

सरसंघचालक बालासाहेब ने इंदिरा गांधी की सेवा और उनके 'राष्ट्रीय उत्थान' और 'समृद्धि' के अभियान के लिए पूरे आरएसएस को समर्पित कर दिया है। इससे अधिक स्पष्ट समर्पण का कोई और बयान नहीं हो सकता।

प्रधानमंत्री ने इस अपील को भी नज़रअंदाज़ कर दिया। इसके बाद बालासाहेब ने तपस्वी संत और भूदान आंदोलन के नेता विनोबा भावे की ओर रुख किया, जो इंदिरा गांधी के ध्वजवाहक बन गए थे। 24 फरवरी 1976 को, जब उन्हें पता चला कि इंदिरा गांधी पवनार में भावे के आश्रम में उनसे मिलने आने वाली हैं, तो बालासाहेब ने भावे को पत्र लिखकर उनसे उनकी ओर से हस्तक्षेप करने के लिए कहा। यहाँ उन्होंने यह कहा :

मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप संघ के बारे में प्रधानमंत्री की गलत धारणा को दूर करने का प्रयास करें, जिसके परिणामस्वरूप आरएसएस के स्वयंसेवक रिहा हो जाएंगे, संघ पर लगा प्रतिबंध हट जाएगा और ऐसी स्थिति बनेगी कि संघ के स्वयंसेवक प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश की प्रगति और समृद्धि से संबंधित कार्यवाही के योजनाबद्ध कार्यक्रम में भाग ले सकेंगे।

ये और अन्य पत्र, जो बालासाहेब देवरस द्वारा महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री एस.बी.चव्हाण को लिखे गए थे, को चव्हाण ने 18 अक्टूबर 1977 को महाराष्ट्र विधानसभा में रखा था। चव्हाण को लिखे अपने पत्र में बालासाहेब ने उनसे आग्रह किया था कि वे इंदिरा गांधी को आरएसएस पर लगे प्रतिबंध को हटाने के लिए मना लें। आपातकाल के दौरान जेल में बंद कई लोगों ने बताया है कि कैसे आरएसएस के सदस्य माफ़ीनामे या अंडरटेकिंग (महाराष्ट्र सरकार द्वारा जारी किए गए प्रारूप) पर हस्ताक्षर करने के लिए उत्सुक थे, जिसमें आश्वासन दिया गया था कि हस्ताक्षरकर्ता आपातकाल का विरोध नहीं करेंगे। हस्ताक्षर करने वालों में डी.आर. गोयल (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, 2000 में), समाजवादी कार्यकर्ता बाबा अधव, (जनता वीकली, 1979 और सेक्युलर डेमोक्रेसी, 1977 में) और भारतीय लोक दल के नेता ब्रह्म दत्त, (फाइव हेडेड मॉन्स्टर, 1978) में शामिल हैं।

वाजपेयी की पैरोल और आरएसएस की आत्मसमर्पण योजना

विभिन्न स्रोतों के अनुसार, अटल बिहारी वाजपेयी आपातकाल के 21 महीनों में से 20 महीनों तक पैरोल पर रहे। पूर्व सांसद और भाजपा नेता सुब्रमण्यम स्वामी (द हिंदू, 2000) के अनुसार, आपातकाल की शुरुआत में अपनी गिरफ्तारी के तुरंत बाद उन्होंने सरकार विरोधी कोई भी गतिविधि न करने का वचन दिया था। वे पूरे समय अपने घर पर ही रहे, जबकि मोरारजी देसाई, जय प्रकाश नारायण आदि जैसे अन्य नेता जेलों में सड़ रहे थे।

स्वामी ने यह भी खुलासा किया कि आरएसएस द्वारा आत्मसमर्पण की एक योजना तैयार की गई थी और इसे जनवरी 1977 के अंत तक घोषित किया जाना था। स्वामी लिखते हैं कि आपातकाल के दौरान विरोध गतिविधियों के प्रभारी आरएसएस नेता माधवराव मुले ने नवंबर 1976 की शुरुआत में उनसे कहा कि स्वामी को "फिर से विदेश भाग जाना चाहिए, क्योंकि आरएसएस ने जनवरी 1977 के अंत में हस्ताक्षर किए जाने वाले आत्मसमर्पण के दस्तावेज़ को अंतिम रूप दे दिया था, और श्री वाजपेयी के आग्रह पर मुझे क्रोधित इंदिरा और भड़के हुए संजय को खुश करने के लिए बलिदान कर दिया जाएगा, जिनके नाम मैंने अपने अभियान द्वारा सफलतापूर्वक विदेश में बदनाम किए थे। मैंने उनसे संघर्ष के बारे में पूछा, और उन्होंने कहा कि देश में हर कोई 42वें संशोधन से सहमत हो गया है, और लोकतंत्र जैसा कि हम जानते थे, वह खत्म हो गया है।"

इस आत्मसमर्पण योजना के बारे में तत्कालीन इंटेलिजेंस ब्यूरो के प्रमुख टीवी राजेश्वर ने अपनी पुस्तक "इंडिया- द क्रूशियल इयर्स" में भी लिखा है। इंदिरा गांधी के तत्कालीन सूचना सलाहकार एचवाई शारदा प्रसाद के बेटे रवि विश्वेश्वरैया शारदा प्रसाद ने भी इस आत्मसमर्पण योजना के बारे में लिखा है। द प्रिंट, जून 2020 के अनुसार :

"नवंबर 1976 में, माधवराव मुले, दत्तोपंत ठेंगड़ी और मोरोपंत पिंगले के नेतृत्व में आरएसएस के 30 से ज़्यादा नेताओं ने इंदिरा गांधी को पत्र लिखकर वादा किया था कि अगर सभी आरएसएस कार्यकर्ताओं को जेल से रिहा कर दिया जाए, तो वे आपातकाल का समर्थन करेंगे। जनवरी 1977 से लागू होने वाले उनके 'आत्मसमर्पण के दस्तावेज़' को मेरे पिता एच.वाई. शारदा प्रसाद ने आगे बढ़ाया था।"

हालाँकि, इस अपमानजनक आत्मसमर्पण की ज़रूरत नहीं पड़ी, क्योंकि इंदिरा गांधी चुनाव कराने की ओर बढ़ गईं - जिसमें वे मार्च 1977 में बुरी तरह हार गईं।

सत्याग्रह और सहयोग

सच तो यह है कि आपातकाल के प्रति आरएसएस ने दोहरा रवैया अपनाया था। इसने विपक्ष के नेतृत्व वाली लोक संघर्ष समिति से खुद को जोड़ रखा था, जिसमें समाजवादी और अन्य लोग शामिल थे, लेकिन इसने इंदिरा गांधी सरकार के साथ भी संपर्क बनाए रखा, जैसा कि ऊपर दिए गए संक्षिप्त विवरण में देखा जा सकता है। क्रिस्टोफ जैफरलॉट और प्रतिनव अनिल द्वारा उनकी पुस्तक में दिए गए अनुमानों के अनुसार, उस समय आरएसएस और इसके सभी संबद्ध संगठनों की सदस्यता लगभग 20 से 30 लाख थी। हालांकि, आपातकाल के खिलाफ विरोध प्रदर्शनों में इसकी ताकत दिखाई नहीं दी और जैसे-जैसे समय बीतता गया, निराशा और आत्मसमर्पण की भावना बढ़ती गई। आपातकाल के प्रति उनके दोहरे रवैये के रूप में इसे देखा जा सकता है।

इसका नतीजा यह हुआ कि जमीनी स्तर पर कई आरएसएस कार्यकर्ताओं ने आत्मसमर्पण कर दिया। उत्तर प्रदेश में, जनसंघ इकाई ने जून 1976 में सरकार को समर्थन देने का वादा किया। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के 34 विधायक कांग्रेस में शामिल हो गए। ये वे राज्य हैं, जहाँ जनसंघ और आरएसएस की मजबूत उपस्थिति है। सरकार की शुरुआती कार्रवाई में एबीवीपी और आरएसएस के हजारों कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया गया था। इन लोगों के लिए जेल में रहना शायद बहुत मुश्किल काम था, जैसा कि पहले उल्लेख किए गए अंडरटेकिंग पर हस्ताक्षर करने के बाद बाहर निकलने की कोशिश कर रहे बंदियों की संख्या में वृद्धि से स्पष्ट है। सरकार के अनुसार, 4 प्रतिशत बंदियों का संबंध आरएसएस से था। बहरहाल, आरएसएस खुद दावा करता है कि सही आंकड़ा 33 प्रतिशत है।

जो भी हो, यह तथ्य कि आरएसएस के शीर्ष नेतृत्व का एक प्रभावशाली तबका समझौता करने और आत्मसमर्पण करने के लिए इच्छुक था, इसका अच्छी तरह से दस्तावेजीकरण हो चुका है। भाजपा/आरएसएस द्वारा आज आपातकाल का विरोध करने वालों में आगे रहने का दिखावा करने के लिए की जा रही हड़बड़ी को इसी पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर देखा जाना चाहिए।

(साभार : 'पीपुल्स डेमोक्रेसी'। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।

अंतरराष्ट्रीय डाक्टर्स डे पर वृंदावन बाल विकास परिषद ने किया चिकित्सकों को सम्मानित

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। बाल विकास परिषद के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय डाक्टर्स डे पर वृंदावन में कार्यरत चिकित्सकों को सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि विप्र गौरव परशुराम शोभायात्रा समिति के अध्यक्ष धर्मेंद्र गौतम ने कहा कि धरती पर चिकित्सक को भगवान का दूसरा रूप माना जाता है। आज के वर्तमान भागदौड़ वाले जीवन में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा, जो चिकित्सक के पास न जाता हो। उन्होंने कहा कि यदि वास्तव में दिखा जाए तो चिकित्सक हमारे जीवन के केयर टेकर है।

विशिष्ट अतिथि अमित गौतम एडवोकेट ने कहा कि चिकित्सक भगवान के समान समाज में आदर का भाव पाते है। ऐसे है समस्त चिकित्सकों का दायित्व बनता है कि वह रोगी के जीवन की रक्षा भगवान के भक्त की तरह ही करें।

उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल के अध्यक्ष पवन ठाकुर ने कहा कि समाज में चिकित्सकों की भूमिका सदैव अग्रणी रही है। चिकित्सक गंभीर से गंभीर बीमारी और दुर्घटना के समय व्यक्ति के लिए

नवजीवन प्रदान करने वाला धरती का भगवान होता है।

इससे पूर्व डॉ. एस.एस. जायसवाल, डॉ. प्रशांत नाथ गुप्ता, डॉ. प्रशांत गौतम, डॉ. सोनल गौड़, डॉ. शैली गुप्ता एवं डॉ. हर्षित नाथ गौतम को परिषद पदाधिकारियों ने पटुका ओढ़ाकर, स्मृति चिन्ह और मिष्ठान आदि भेंटकर कर सम्मानित किया। इस अवसर डॉ. सचिन अग्रवाल, मुकेश कृष्ण शर्मा, जितेंद्र कुमार गौतम, गोकुल शर्मा, आशीष चौहान आदि की उपस्थिति विशेष रही।

ग्रीष्मकालीन अवकाश के बाद प्रथम दिन विद्यालय आगमन पर बच्चों को बांटी पाठ्य सामग्री

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृंदावन। परिक्रमा मार्ग स्थित बिन्दु सेवा संस्थान में ग्रीष्मकालीन अवकाश के उपरांत स्कूलों में बच्चों का आगमन एक उत्सव के रूप में मनाया गया।जिसके अंतर्गत बच्चों को शिक्षा से जोड़ने व उनमें शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए प्रथम दिवस अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए सर्वप्रथमम विद्यालय परिवार द्वारा मां सरस्वती का पूजन किया गया।साथ ही टीका लगाकर बच्चों का स्वागत किया।

निदेशक पूर्णेन्दु गोस्वामी ने कहा कि सरकार बच्चों को शिक्षा से जोड़ने की नीति पर लगातार कार्य कर रही है।ताकि देश का भविष्य शिक्षित और सुरक्षित बन सके।

कार्यक्रम के अंतर्गत भगवान परशुराम शोभायात्रा समिति, उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष आशीष गौतम चिंटू भैया के सहयोग से आज उनकी लाड़ली बिटिया एकांक्षी की याद में उसके जन्मदिन पर स्कूल में निर्धन व असहाय परिवारों के अध्ययनरत बच्चों को पेंसिल, रबर, कटर, स्किल कॉपी, पाठ्य एवं खाद्य सामग्री का वितरण किया गया।

पार्थकृष्ण गौतम ने कहा कि बच्चों को पढ़ने के

लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास समाज में सभी को करना चाहिए। यदि बच्चे शिक्षित होंगे, तभी हमारा समाज व राष्ट्र खुशहाल होगा और प्रगति के पथ पर आगे बढ़ पाएगा।

इस अवसर पर विष्णु गोला, प्रधानाचार्य सुशीला परिहार, गुंजन सक्सेना, रचना, अंजलि शर्मा, रेणु, चंद्रनारायण, चैतन्य कृष्ण शर्मा, अर्जुन कुशवाह आदि की उपस्थिति विशेष रही।

ट्रंप का वन बिग ब्यूटीफुल बिल सीनेट में पारित बनाम मस्क की नई राजनीतिक पार्टी

ट्रंप-मस्क की लड़ाई-अमेरिकी राजनीति अर्थव्यवस्था और वैश्विक प्रभाव के लिए महत्वपूर्ण दुष्टपरिणाम ला सकती है- जनहित में मतभेद सुलझाना जरूरी-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ देख रही थी कि पिछले कुछ महीनो से कैसे अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप दुनियाँ में चल रहे अनेको युद्धों को रोकने के लिए रुचि दिखा रहे हैं, जिसमें शामिल हैउनके 12 बार दोहराना कि भारत-पाक युद्ध विराम उन्होंने करवाया,सीरिया से प्रतिबंध हटाना,रूस यूक्रेन युद्ध विराम में रुचि,ईरान इजरायल में युद्ध विराम सहित इस दिशा में अनेकों कार्य कर रहे हैं। हालांकि इसके बावजूद युद्ध विराम देशों में तनाव तल्ख़ बढ़ी हुई है, परंतु उनकी कोशिशों को रेखांकित करना होगा, उनको नोबेल शांति पुरस्कार की उम्मीद को भी रेखांकित करना होगा। हालांकि इस पुरस्कार के दावेदार अनेकों लोग अनेकों वर्षों से वैश्विक शांति पर काम कर रहे हैं, जिसमें उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी समर्पित कर दी है।अभी 1जुलाई 2025 को अमेरिका में एक तरह से ट्रंप-मस्क के बीच भिड़ंत जुबानी शाब्दिक जंगबाजी एक तरह से गृहयुद्ध से गिर गए हैं।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि जिस दोस्ती के साथ ट्रंप-मस्क चुनाव में जनता का विश्वास अर्जित कर जीत हासिल किए व अमेरिका को मेकिंग ग्रेट अमेरिका अगेन के वादे के विपरीत तगड़ी भिड़ंत कर जुबानी जंग बाजी कर अमेरिका के मतदाताओं का विश्वास भंग करके माहौल खराब करने की ओर अग्रसर कर अमेरिका की राजनीतिक, आर्थिक स्थिति सहित अपने रुतबे को कम कर दुनियाँ में कम करने से बेहतर रहेगा कि आपसी समझौता कर स्थिति को गंभीरता की ओर जाने से बचने की जरूरत है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,ट्रंप-मस्क की लड़ाई,अमेरिकी राजनीति, अर्थव्यवस्था और वैश्विक प्रभाव के लिए महत्वपूर्ण दुष्टपरिणाम ला सकती है-जनहित में मतभेद सुलझाना जरूरी।

साथियों बात अगर हम ट्रंप-मस्क के टकराव को राजनीतिक आर्थिक दृष्टिकोण से देखें तो, यह एक दिलचस्प प्रश्न है !अमेरिका में ट्रंप और मस्क के बीच का विवाद एक राजनीतिक और आर्थिक शक्ति के टकराव का प्रतीक है।डोनाल्ड ट्रंप, एक शक्तिशाली राजनीतिक व्यक्तित्व हैं, जिनके पास एक मजबूत समर्थक आधार है। उनकी राजनीतिक शक्ति और प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। दूसरी ओर, मस्क एक सफल उद्योगपति और व्यवसायी हैं,जिनके पास अरबों डॉलर की संपत्ति है। उनकी कंपनियां, जैसे कि टेस्ला और स्पेसएक्स, विश्व स्तरपर प्रसिद्ध हैं और उनके पास एक मजबूत आर्थिक आधार है। इस विवाद में, यह कहना मुश्किल है कि किसकी शक्ति अधिक प्रभावी होगी। लेकिन यहाँ कुछ बातें हैं जिन पर विचार किया जा सकता है:ट्रंप की राजनीतिक शक्ति और समर्थक आधार उनके लिए एक मजबूत पक्ष हो सकता है।मस्क की आर्थिक शक्ति और उनकी कंपनियों की वैश्विक पहुंच उनके लिए एक मजबूत पक्ष हो सकती है।हालांकि, यह भी ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि अमेरिका में न्यायपालिका और मीडिया की स्वतंत्रता भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है इस विवाद के निपटारे में ट्रंप और मस्क के बीच विवाद का अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है (1) बाजार की अस्थिरता: टेस्ला और अन्य कंपनियों के शेयरों की कीमतों में उतार-चढ़ाव हो सकता है,जिससे बाजारकी अस्थिरता बढ़ सकती है। (2) निवेश पर प्रभाव: यदि विवाद बढ़ता है, तो निवेशकों का विश्वास कम हो सकता है,जिससे निवेश में कमी आ सकती है।(3) आर्थिक विकास पर प्रभाव: यदि विवाद का समाधान नहीं निकलता है, तो यह अमेरिकी अर्थव्यवस्था के विकास को

प्रभावित कर सकता है। (4) रोजगार पर प्रभाव: यदि टेस्ला जैसी कंपनियों को नुकसान होता है, तो इससे रोजगार के अवसरों पर भी प्रभाव पड़ सकता है हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था बहुत बड़ी और विविध है, और एक विवाद का इसके समग्र प्रदर्शन पर बहुत अधिक प्रभाव नहीं पड़ने की संभावना है।

साथियों बात अगर हम ट्रंप-मस्क की तगड़ी भिड़ंत व जुबानी जंगबाजी की करें तो,मस्क और ट्रम्प के बीच कर छूट और खर्च में कटौती को लेकर वाकयुद्ध फिर से शुरू हो गया है। मस्क का कहना है कि वह एक नई राजनीतिक पार्टी बना सकते हैं। ट्रम्प ने टेस्ला के सीईओ पर इलेक्ट्रिक वाहन सब्सिडी को लेकर हमला बोला है। मस्क ने रिपब्लिकन सीनेटरों द्वारा पारित किए गए,बिल की आलोचनाकी। उनका कहना है कि इससे नौकरियां खत्म हो जाएंगी और उभरते उद्योग पिछड़ जाएंगे। ट्रम्प ने मस्क पर इलेक्ट्रिक व्हीकल सब्सिडी को लेकर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि मस्क को इतिहास में सबसे ज्यादा सब्सिडी मिल सकती है। सब्सिडी के बिना उन्हें अपना कारोबार बंद करके दक्षिण अफ्रीका वापस जाना पड़ सकता है। संभवतः अमेरिका के पिछले राष्ट्रपति चुनाव में ट्रंप के खास सिपाहसालार रहे मस्क को अब ट्रम्प के फैसले रास नहीं आ रहे हैं? इन दोनों के बीच विवाद बढ़ता जा रहा है। यह विवाद टैक्स में छूट और खर्चों में कटौती को लेकर है। मस्क ने रिपब्लिकन पार्टी के बिल की आलोचना की है। उन्होंने कहा कि यह बिल नौकरियों को खत्म कर देगा। यह नए उद्योगों को भी नुकसान पहुंचाएगा। मस्क ने एक्स पर लिखा कि यह बिल रिपब्लिकन पार्टी के लिए राजनीतिक आत्महत्या होगा। सीनेट में इस बिल पर लंबी बहसचली व बिल पारित हो गया,मस्क ने कहाथा कि वह अगले साल कांग्रेस के उन सदस्यों को हटाने के लिए काम करेंगे जो इस बिल को पास करेंगे। कुछ घंटे बाद, मस्क ने एक और पोस्ट में उन्होंने लिखा था,अगर यह बिल पास हो जाता है, तो अगले दिन 'अमेरिका पार्टी' का गठन किया जाएगा।उन्होंने आगे कहा,हमारे देश को डेमोक्रेट - रिपब्लिकन से अलग'एक पार्टी' के विकल्प की जरूरत है ताकि लोगों को वास्तव में अपनी बात रखने का मौका मिले। मस्क के इस पोस्ट को एक्सः पर 3.2 करोड़ बार देखा गया।डोनाल्ड ट्रम्प ने ट्रुथ सोशल पर लिखा कि मस्क जानते हैं कि वे ईवी जनादेश के खिलाफ हैं। लोगों को इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए। ट्रम्प ने लिखा,एलन को शायद इतिहास में किसी भी इंसान से ज्यादा सब्सिडी मिलती है, और बिना सब्सिडी के एलन को शायद अपना कारोबार बंद करके दक्षिण अफ्रीका वापस जाना पड़ेगा।राष्ट्रपति ने यह भी कहा कि इससे देश के लिए कुछ लागत बचत हो सकती है। उन्होंने पोस्ट किया,कोई और रॉकेट लॉन्च, सैटेलाइट या इलेक्ट्रिक कार उत्पादन नहीं होगा और हमारे देश के बहुत सारे पैसे बचेंगे। शायद हमें डीओजीई को इसपर अच्छी तरह से ध्यान देना चाहिए? बहुत सारे पैसे बचाए जा सकते हैं !

साथियों बात अगर हम 1 जुलाई 2025को देर रात सीनेट में पारित वन बिग ब्यूटीफुल बिल की करें तो, ट्रंप का 'वन बिग ब्यूटीफुल बिल' सीनेट से मामूली अंतर के साथ पास हो गया। इस बिल को पास कराने में उपराष्ट्रपति जेडी वेंस अहम कड़ी साबित हुए। ट्रंप के महत्वाकांक्षी कर छूट और खर्च कटौती वाले इस विधेयक के पक्ष और विपक्ष में 50-50 वोट पड़े, जिसके बाद वेंस ने अपना वोट डालकर इसे मंजूरी दिलाई। मुकाबला तब देखने को मिला, जब सीनेट के बहुमत नेता जॉन थून ने दो उदारवादियों को अपने पक्ष में कर लिया, जो डेमोक्रेट्स के पक्ष में झुके हुए थे। ट्रंप ने अमेरिकी कांग्रेस को बिल पारित करने के लिए 4 जुलाई की समय सीमा दी है, जिसमें सैन्य खर्च में 150 बिलियन डॉलर की वृद्धि और अमेरिकी राष्ट्रपति के सामूहिक निर्वासन कार्यक्रम का प्रावधान है।बिल में ट्रंप के पहले कार्यकाल के कर कटौती में 4.5 ट्रिलियन डॉलर का विस्तार करने का प्रावधान है।इसमें मेडिकेड स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रम पर 1.2 ट्रिलियन डॉलर तक की कटौती का प्रस्ताव है। इससे लगभग 8.6 मिलियन कम आय वाले और विकलांग अमेरिकियों को उनके स्वास्थ्य कवरेज से वंचित होना पड़ सकता है। यह विधेयक हरित ऊर्जा टैक्स क्रेडिट सेअरबों डॉलर भी वापस लेताहै,पर्यावरण अधिवक्ताओं ने ईवी कर क्रेडिट को वापस लेने पर चिंता जताई है। गैर-अमेरिकी नागरिकों द्वारा विदेशों में पैसे भेजने पर टैक्स लगाने का प्रावधान है। प्रारंभिक प्रस्तावःइस बिल में मूल रूप से 5पेर्सेंट रेमिटेंस टैक्स लगाने का प्रस्ताव था, लेकिन बाद में इसे संशोधित करके 3.5पेर्सेंट कर दिया गया, जैसा कि टीवी9 भारतवर्ष में बताया है। वर्तमान संशोधनःसीनेट ने अब इसे और कम करके 1पेर्सेंट कर दिया है। इससे भारत में आने वाले रेमिटेंस में भी वृद्धि होने की संभावना है, बिजनेस स्टैंडर्ड ने रिपोर्ट किया है। इस बिल के लागू होने से, भारत में रेमिटेंस में वृद्धि होने और प्रवासियों को आर्थिक रूप से लाभ होने की उम्मीद है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि ट्रंप का वन बिग ब्यूटीफुल बिल सीनेट में पारित बनाम मस्क की नई राजनीतिक पार्टी अमेरिका पार्टी,विश्व की नज़रें ट्रंप-मस्क की तगड़ी भिड़ंत और जुबानी जंगबाजी पर लगी ट्रंप-मस्क की लड़ाई,अमेरिकी राजनीति, अर्थव्यवस्थाऔर वैश्विक प्रभाव के लिए महत्वपूर्ण दुष्टपरिणाम ला सकती है-जनहित में मतभेद सुलझाना ज़रूरी है।

क्या होता है पीक आवर, जिसके दौरान अब दोगुना किराया वसूलेंगे ओला-उबर जैसी कैब कंपनियां

परिवहन विशेष न्यूज

ओला-उबर जैसे ऐप बेस्ड कैब सर्विसेज को लेकर सरकार ने मोटर व्हीकल एग्रीगेटर गाइडलाइंस 2025 जारी की हैं। पीक ऑवर में अब एग्रीगेटर दोगुना किराया चार्ज कर सकेंगे। कैंसिलेशन पर भी जुर्माना लगेगा। सरकार जल्द ही एग्रीगेटर लाइसेंस के लिए ऑनलाइन पोर्टल विकसित करेगी। ड्राइवरों के लिए 5 लाख का हेल्थ और 10 लाख का टर्म इंश्योरेंस अनिवार्य होगा। शिकायतों के लिए ग्रिवांस ऑफिसर की नियुक्ति भी की जाएगी।

नई दिल्ली। भारत में Ola-Uber जैसे ऐप बेस्ड कैब सर्विसेज लोगों की जिंदगी का अहम हिस्सा बन चुकी हैं। चाहे ऑफिस जाना हो, बाजार या रेलवे स्टेशन, कैब सर्विस आज के समय की जरूरत बन गई है, लेकिन अक्सर किराए, ड्राइवर के बर्ताव और कैंसलेशन को लेकर पैसेंजर और ड्राइवरों दोनों की परेशानियां सामने आती थीं। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने हाल ही में मोटर व्हीकल एग्रीगेटर गाइडलाइंस 2025 जारी की हैं। आइए विस्तार में जानते हैं कि इनमें क्या-क्या बदलाव किए गए हैं और इसका सीधा असर कैब यूजर्स और ड्राइवरों पर कैसे पड़ेगा?

पीक आवर क्या होता है?

सबसे पहले ये जान लें कि गाइडलाइंस में पीक आवर (Peak Hours) शब्द बार-बार आ रहा है। असल में पीक आवर वह समय होता है जब कैब की डिमांड सबसे ज्यादा होती है। जैसे- सुबह ऑफिस के लिए निकलने का समय, शाम को ऑफिस से लौटने का समय या कोई त्योहारी सीजन। इस समय सड़कों पर भीड़ ज्यादा होती है और लोग जल्दी कैब बुक करना चाहते हैं। इसलिए एग्रीगेटर्स इस समय किराया बढ़ाकर चार्ज करते हैं, जिसे डायनैमिक प्राइसिंग कहा जाता है।

पीक आवर में अब डबल किराया चार्ज कर सकेंगे एग्रीगेटर

नई गाइडलाइंस के मुताबिक, कैब कंपनियां अब पीक आवर के दौरान बेस फेयर का दो गुना तक किराया वसूल सकती हैं। पहले यह सीमा 1.5 गुना थी, यानी अगर किसी राइड का बेस फेयर 100 रुपये है, तो पीक टाइम में अब अधिकतम 200 रुपये चार्ज किए जा सकते हैं। इससे एग्रीगेटर्स को भी ज्यादा कमाई का मौका मिलेगा और ड्राइवरों को बेहतर कमाई का लाभ मिल सकता है। वहीं, नॉन-पीक आवर यानी कम भीड़भाड़ के समय में, न्यूनतम किराया बेस फेयर का कम से कम 50% रखना अनिवार्य होगा। इससे यात्रियों को सस्ते किराए का फायदा मिल सकता है।

डेड माइलेज के लिए भी किराया मिलेगा

नई गाइडलाइंस के अनुसार, बेस फेयर कम से कम 3 किलोमीटर के लिए तय किया जाएगा। इसका मकसद डेड माइलेज कवर करना है। डेड माइलेज का मतलब है वह दूरी, जो ड्राइवर बिना सवारी के तय करता है, जैसे- किसी पैसेंजर को लेने के लिए खाली गाड़ी लेकर जाना। इससे ड्राइवरों को बेहतर मुआवजा मिलेगा और उनका नुकसान कम होगा।

बेस फेयर कौन तय करेगा?

नई गाइडलाइंस के तहत अलग-अलग कैटेगरी की गाड़ियों के लिए बेस फेयर राज्य सरकार तय करेगी, यानी Ola-Uber जैसी कंपनियों को वही किराया बेस मानना होगा जो राज्य सरकार तय करेगी। राज्यों को इन नियमों को लागू करने के लिए तीन महीने का समय दिया गया है।

कैंसलेशन पर लगेगा जुर्माना

कई बार ड्राइवर बिना वजह राइड कैंसल कर देते हैं, जिससे यात्रियों को दिक्कत होती है। वहीं, कुछ यात्री भी बुकिंग के बाद कैंसिल कर देते हैं। नई गाइडलाइंस में इस पर सख्त प्रावधान किए गए हैं। अगर ड्राइवर बिना किसी वाजिब कारण के राइड कैंसल करता है, तो उस पर कुल किराए का 10 प्रतिशत (अधिकतम 100 रुपये तक) जुर्माना लगेगा। इसी तरह, अगर यात्री भी बिना किसी वाजिब वजह के राइड कैंसल करता है, तो उस पर भी यही जुर्माना लगेगा। इससे कैंसलेशन के मामलों में कमी आ सकती है और यूजर्स का भरोसा भी बढ़ेगा।

एग्रीगेटर लाइसेंस के लिए बनेगा ऑनलाइन पोर्टल

सरकार जल्द एक ऐसा ऑनलाइन पोर्टल विकसित करेगी, जहां से एग्रीगेटर कंपनियां लाइसेंस के लिए आवेदन कर सकेंगी। लाइसेंस फीस 5 लाख रुपये तय की गई है। लाइसेंस पांच साल के लिए वैध रहेगा। इससे कंपनियों को कागजी झंझट से मुक्ति मिलेगी और प्रक्रिया ज्यादा पारदर्शी होगी। ड्राइवरों के लिए अनिवार्य इंश्योरेंस होगा। ड्राइवरों की सुरक्षा और उनके कल्याण के लिए भी गाइडलाइंस में अहम प्रावधान किए गए हैं। इसके तहत एग्रीगेटर को अपने ड्राइवरों के लिए कम से कम 5 लाख रुपये का हेल्थ इंश्योरेंस देना होगा। इसके अलावा, 10 लाख रुपये का टर्म इंश्योरेंस देना भी अनिवार्य होगा। यह कदम ड्राइवरों और उनके परिवारों के लिए बड़ा सुरक्षा कवच साबित होगा।

शिकायतों के लिए ग्रिवांस ऑफिसर अनिवार्य

नई गाइडलाइंस में हर एग्रीगेटर को एक ग्रिवांस ऑफिसर (शिकायत अधिकारी) नियुक्त करना होगा। यह अधिकारी यात्रियों और ड्राइवरों की समस्याओं का समाधान करेगा। इससे सर्विस क्वालिटी में सुधार आने की उम्मीद है।

हुंडई क्रेटा बनी 2025 की पहली छमाही में सबसे ज यादा पसंद की जाने वाली एसयूवी, देती है एलीवेट, सेल्टोस को चुनौती

परिवहन विशेष न्यूज

साउथ कोरियाई वाहन निर्माता हुंडई की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से ऑफर की जाने वाली Hyundai Creta ने नया रिकॉर्ड बनाया है। इस एसयूवी को साल 2025 की पहली छमाही में सबसे ज यादा खरीदा गया है। इसमें किस तरह के फीचर्स मिलते हैं। इससे किन एसयूवी को चुनौती मिलती है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में किसी भी अन्य सेगमेंट के वाहनों के मुकाबले एसयूवी सेगमेंट के वाहनों को सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है। इस सेगमेंट में सभी वाहन निर्माताओं की ओर से वाहनों को ऑफर किया जाता है। हुंडई की ओर से क्रेटा एसयूवी को इसी सेगमेंट में बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। Hyundai Creta एसयूवी ने किस तरह की उपलब्धि को हासिल किया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Hyundai Creta ने हासिल की उपलब्धि

हुंडई मोटर इंडिया की ओर से मिड साइज एसयूवी के तौर पर Hyundai Creta की बिक्री की जाती है। निर्माता के मुताबिक इस एसयूवी को साल 2025 की पहली छमाही में सबसे ज्यादा पसंद किया गया है। इसके साथ ही यह एसयूवी पहली छमाही के तीन महीनों (मार्च, अप्रैल, जून) में भी बेस्ट सेलिंग एसयूवी के तौर पर उपलब्धि हासिल कर चुकी है।

अधिकारियों ने कही यह बात

हुंडई मोटर इंडिया के सीओओ तरुण गर्ग ने कहा कि CRETA सिर्फ़ एक उत्पाद नहीं है, यह 12 लाख से ज्यादा भारतीय परिवारों के लिए एक भावना है। पिछले एक दशक में, CRETA ने लगातार SUV स्पेस को नए सिरे से परिभाषित किया है और भारत में Hyundai की बढ़ोतरी का एक मज़बूत स्तंभ बना हुआ है। जून 2025 में सबसे ज़्यादा बिकने वाला मॉडल बनना, भारतीय ग्राहकों द्वारा ब्रैंड को दिए गए प्यार और भरोसे का प्रमाण है।

कैसे हैं फीचर्स

हुंडई की ओर से क्रेटा एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाता है। इस एसयूवी में 17 इंच अलॉय व्हील्स, एलईडी हेडलाइट्स, एलईडी डीआरएल, सीक्वेंशल टर्न इंडीकेटर, शॉर्क फिन एंटीना, ड्यूल टोन एक्सटीरियर और इंटीरियर, लेदर सीट्स, रियर विंडो सनशेड, पैनोरमिक सनरूफ, ड्यूल जोन ऑटो एसी, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, इलेक्ट्रिक पार्किंग ब्रेक, वायरलेस फोन चार्जर, ईको, नॉर्मल और स्पोर्ट्स मोड्स, स्नो, मड और सैंड ट्रैक्शन मोड्स, क्रूज कंट्रोल, की-लैस एंट्री, फ्रंट कंसोल आर्मरेस्ट के साथ स्टोरेज, रिमोट इंजन स्टार्ट के साथ स्मार्ट की, इलेक्ट्रिक टेलगेट रिलीज, रियर एसी वेंट्स, रियर वाइपर और वॉशर, टिल्ट और टेलीस्कोपिक स्टेयरिंग व्हील, आईएसजी, कूल्ड ग्लोव बॉक्स, 10.25 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, बोस के आठ स्पीकर ऑडियो सिस्टम, एंड्राइड ऑटो, एपल कार प्ले, 10.25 इंच डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, ब्लूलिंक तकनीक, ओटीए अपडेट्स, होम टू कार के साथ एलेक्सा जैसे फीचर्स मिलते हैं।

कितना दमदार इंजन

Hyundai Creta में इंजन के तीन विकल्प मिलते हैं। जिसमें 1.5 लीटर पेट्रोल नेचुरल एस्पिरेटिड इंजन से 115 पीएस पावर और 143.8 न्यूटन मीटर टॉर्क मिलता है। दूसरे पेट्रोल इंजन के तौर पर 1.5 लीटर टर्बो इंजन मिलता है जिससे 160 पीएस की पावर और 253 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। तीसरे विकल्प के तौर पर 1.5 लीटर की क्षमता का डीजल इंजन मिलता है। जिससे इसे 116 पीएस की पावर और 250 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इन विकल्पों के साथ 6स्पीड मैनुअल, आईवीटी, ऑटोमैटिक और 7स्पीड डीसीटी ट्रांसमिशन के विकल्प मिलते हैं।

कितनी है कीमत

हुंडई की ओर से क्रेटा को पेट्रोल के साथ ही डीजल इंजन के कई विकल्पों में ऑफर किया जाता है। निर्माता की ओर से इस एसयूवी की एक्स शोरूम कीमत 11.10 लाख रुपये से शुरू होती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 20.50 लाख रुपये है।

किनसे है मुकाबला

हुंडई की क्रेटा को मिड साइज एसयूवी के तौर पर ऑफर किया जाता है। इस एसयूवी का बाजार में सीधा मुकाबला Honda Elevate, Kia Seltos, Maruti Suzuki Grand Vitara, Toyota Urban Cruiser Hyryder, Tata Harrier, Mahindra Scorpio, MG Hector जैसी एसयूवी के साथ होता है।

बारिश में भी सफर होगा सुरक्षित, इन 5 आसान तरीकों से करें अपनी कार की देखभाल

बारिश के मौसम में कार चलाने के लिए तैयारी करना ज़रूरी है। वाइपर सही होने चाहिए ताकि साफ़ दिखाई दे। टायर घिसे हुए नहीं होने चाहिए और उनमें सही हवा का प्रेशर होना चाहिए ताकि फिसलन से बचा जा सके। ब्रेक की जांच कराएं ताकि वे ठीक से काम करें। हेडलाइट टेल लाइट और फॉग लैंप सही होने चाहिए। बैटरी की भी जांच करवाएं।

नईदिल्ली। बारिश का मौसम आते ही तपती गर्मी से राहत मिल जाती है। बारिश का मौसम आने के साथ ही कार ड्राइविंग से जुड़ी कई समस्याएं भी आ जाती है। इसमें फिसलन भरी सड़कें, जलभराव और भारी बारिश के कारण कम हुई विजिबिलिटी सफर को जोखिम भरा बना सकती है। ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि आपकी कार इस मौसम के लिए पूरी तरह से तैयार हो। इसे देखते हुए हम यहां पर आपको कुछ ऐसे मेंटेनेंस जरूरी टिप्स के बारे में बता रहे हैं, जिन्हें आपको मानसून आते ही अपनी कार में करवा लेना चाहिए।

मानसून से पहले कार में जरूर करें ये 5 जरूरी मेंटेनेंस चेक

वाइपर्स: बारिश में आपकी सबसे पहली जरूरत साफ रास्ता देखना होता है। बारिश के दौरान आपको साफ रास्ता दिखाने का काम कार में लगे हुए वाइपर्स करते हैं। अगर वाइपर के रबर ब्लेड कठोर हो गए हैं या उनमें दरारें हैं, तो वे शीशे पर पानी फैलाने का काम करेंगे। ऐसी स्थिति में आपको तुरंत इन्हें बदलवा देना चाहिए। कार के वाइपर वॉटर टैंक को पूरा भरें और उसमें एक अच्छा विंडशील्ड क्लीनर भी मिलाएं ताकि शीशे पर जमी गंदगी आसानी से साफ हो सके।

टायर्स: गीली और फिसलन भरी सड़कों पर टायर्स की भूमिका सबसे अहम हो जाती है। अगर आपके टायर घिसे हुए हैं, तो उनकी पकड़ कमजोर हो जाएगी और पानी पर फिसलने (हाइड्रोप्लेनिंग) का खतरा बढ़ जाएगा। अपने टायर की गहराई (ट्रेड) के चेक करें। अगर यह बहुत कम है, तो टायर बदलने का यही सही समय है। टायर में एयर प्रेशर हमेशा सही रखें, क्योंकि यह ब्रेकिंग और कंट्रोल दोनों को सीधे तौर पर प्रभावित करता है।

ब्रेक्स: मानसून में नमी और पानी के कारण ब्रेक लगने की कैपेसिटी पर असर पड़ सकता है। अगर ब्रेक लगाते समय किसी भी तरह की तेज आवाज (जैसे चीं-चीं) आती है या आपको ब्रेक लगाने में ज्यादा जोर लगाना पड़ रहा है, तो इसे बिल्कुल भी नजरअंदाज न करें। तुरंत किसी भरोसेमंद मैकेनिक से ब्रेक पैड्स और डिस्क की जांच कराएं।

लाइट्स और बैटरी: बारिश और अंधेरे में कार की लाइट्स की आपको साफ रास्ता दिखाने का काम करती है। मानसून आते ही यह जरूर चेक करें कि आपकी हेडलाइट्स, टेल लाइट्स, फॉग लैंप्स और इंडिकेटर्स सही से काम कर रहे हैं। अगर हेडलाइट का कवर पीला या धुंधला हो गया है, तो उसे पॉलिश करवा लें। बारिश में वाइपर, एसी और लाइट्स का इस्तेमाल ज्यादा होता है, जिससे बैटरी पर लोड बढ़ता है। बैटरी के टर्मिनल्स को साफ रखें और अगर बैटरी 2-3 साल से ज्यादा पुरानी है तो उसे चेक जरूर करवा लें।

कार को जंग लगने से बचाएं: बारिश के मौसम में कार पर लगातार पानी और कीचड़ पड़ने से इसके निचले हिस्से में जंग लगने का खतरा बढ़ जाता है। इससे बचने का सबसे अच्छा तरीका है कि अपनी कार पर अच्छी क्वालिटी की एंटी-रस्ट कोटिंग करवाएं। यह आपकी कार की बॉडी को लंबे समय तक सुरक्षित रखेगा।

फेरारी ने पेश की दमदार सुपरकार अमाल्फी, महज 3.3 सेकंड में पकड़ लेती है 0-100km की रफ्तार

फेरारी ने अपनी नई ग्रैंड टूरर Ferrari Amalfi को पेश किया है जो Roma का स्थान लेगी। यह पिछले मॉडल से अधिक शक्तिशाली है और इसमें बेहतर एयरोडायनामिक्स हैं। Amalfi में 3.9-लीटर का ट्विन-टर्बो V8 इंजन है जो 640hp की पावर और 760Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह कार 3.3 सेकंड में 0 से 100 किमी/घंटा की गति पकड़ सकती है। इसमें नया इंटीरियर और 10.25-इंच का टचस्क्रीन है।

नई दिल्ली। सुपरकार बनाने वाली कंपनी फेरारी ने अपनी सबसे किफायती ग्रैंड टूरर Roma की जगह पर नई Ferrari Amalfi को ग्लोबल लेवल पर पेश किया है। कंपनी ने इसे पिछले मॉडल की तुलना में Amalfi को ज्यादा दमदार परफॉर्मेंस और बेहतर एयरोडायनामिक्स के साथ लाई गई है। इसे रोमा वाले ही प्लेटफॉर्म पर ही तैयार किया गया है। आइए जानते हैं कि नई Ferrari Amalfi को किन खासियतों के साथ लेकर आया गया है?

काफी दमदार है इंजन

Ferrari Amalfi में 3.9-लीटर का ट्विन-टर्बो V8 इंजन का इस्तेमाल किया गया है। इस इंजन को और भी ज्यादा पावरफुल बनाने के लिए री-ट्यून किया गया है। यह इंजन 640hp की पावर और 760Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 8-स्पीड डुअल-क्लच ऑटोमैटिक गियरबॉक्स से जोड़ा गया है। इसका इंजन पहले से ज्यादा बेहतर परफॉर्मेंस दें, इसके लिए हल्का कैमशाफ्ट और नया ECU (इंजन कंट्रोल यूनिट) को लगाया गया है। इन बदलावों की वजह से यह कार महज 3.3 सेकंड में 0 से 100 किलोमीटर प्रति घंटे की स्पीड पकड़ लेती है। वहीं, इसे 0 से 200 किलोमीटर प्रति घंटे की स्पीड पकड़ने में महज 9 सेकंड लगता है। इसकी टॉप स्पीड 320 किलोमीटर प्रति घंटा है।

इसका हर पैनल एकदम नया

फेरारी ने दावा किया है कि इसकी खिड़कियो को छोड़कर इसका हर बॉडी पैनल बिल्कुल नया है। इसके सामने की तरफ बड़े बदलाव किए गए हैं। इसमें आगे तरफ Purosangue SUV जैसा लुक दिया गया है। इसमें पतले हेडलैम्प्स को एक ब्लैक बार से जोड़ा गया है जो इसे एक मॉडर्न टच देता है।

कार से बेहतर फ्लो के लिए नए अंडरबॉडी लिप्स और एक रिडिजाइन किया गया एक्टिव रियर विंग है। इसका साइड प्रोफाइल काफी हद तक पहले जैसा ही है। इसमें फ्लश-फिटिंग डोर हैंडल और 20-इंच के व्हील्स दिए गए हैं।

इंटीरियर काफी ज्यादा प्रीमियम

कार के केबिन में कई अहम बदलाव किए गए हैं। इसमें गियर सिलेक्टर, की स्लॉट और वायरलेस चार्जिंग पैड दिया गया है। इसमें 8.4-इंच के वर्टिकल टचस्क्रीन की जगह अब 10.25-इंच का बड़ा लैंडस्केप टचस्क्रीन दिया गया है, जो वायरलेस एप्पल कारप्ले और एंड्रॉइड ऑटो को सपोर्ट करता है। इसमें फिजिकल बटन्स की वापसी की गई है। इससे ड्राइविंग के दौरान इन्हें इस्तेमाल करना ज्यादा आसान होगा। रोमा की तरह, अमाल्फी में भी पीछे की तरफ दो सीटें दी गई हैं। जब तक अमाल्फी का कन्वर्टिबल (ड्रॉप-टॉप) वर्जन नहीं आ जाती है, तब तक फेरारी रोमा स्पाइडर की बिक्री जारी रखेगी।

वित्तीय अभाव के बीच अनुसंधान क्षेत्रों

विजय गर्ग

इन दिनों वैज्ञानिक शोध और नवाचारों में गहरा दखल रखने वालों के बीच अनुसंधान परिवेश पर गंभीर विमर्श चल रहा है कि इस मद में सरकारी और निजी क्षेत्रों से वित्तीय सहायता अगर सिमटने लगेगी तो नवाचार और वैज्ञानिकों के भविष्य का क्या होगा! शोध अनुसंधान क्षेत्रों के लिए विश्व र में वित्तीय सहायता विभिन्न स्रोतों से आती है, जिनमें सरकारी एजेंसियां, निजी संस्थाएं और कंपनियां शामिल हैं। अर्थशास्त्रियों का मानना है कि यदि अनुसंधान तंत्र सही रखते हुए सैद्धांतिक रूप से पूंजी और श्रम की गतिशीलता से सभी प्रतिबंध हटा दिए जाएं, तो दुनिया में प्रति वर्ष अर्थव्यवस्था में 95 लाख करोड़ डालर तक की वृद्धि संभव है। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह एक उच्च-स्तरीय अनुमान है, क्योंकि इसमें इसमें अकुशल और कुशल न प्रतिभाओं के लिए प्रतिबंधों में ढील के तमाम लाभ शामिल। हैं। उद्यमशील आविष्कार की गतिविधियों और घनिष्ठ सहयोग के माध्यम से नवाचार को आगे बढ़ाया जाता है। विदेशी । प्रतिभाओं को आकर्षित की कुशल करने में अमेरिका प्रवासियों की उद्यमशीलता और आविष्कारशील गतिविधि की जांच करने के लिए एक अच्छा अवसर प्रदान करता आ रहा है। लगभग पैंतालीस फीसद कंपनियों की स्थापना आप्रवासी परिवारों से ही संभव हुई है आज ऐसी तीस लाख से अधिक आप्रवासी प्रतिभाएं कुशल उद्यमी रूप में स्थापित हो चुकी हैं। अमेरिका के अलावा यूरोप और एशिया के देशों में भी ऐसा ही चलन देखा गया है।₹

'वैश्विक चुनौतियां अनुसंधान कोष' (जीसीआरएफ) विकासशील देशों के जीवन और अवसरों को बेहतर बनाने के सामने खड़ी चुनौतियों के समाधान लिए अत्याधुनिक अनुसंधानों और नवाचारों का समर्थन करता है। साथ ही, दुनिया के सतत विकास लक्ष्यों में हाथ बंटाता है। अब अमेरिका के अनुसंधान कोष में कटौती के बीच वैज्ञानिकों का भविष्य और शोध। कार्य एक बार पुनः अनिश्चितता से घिर गया है। नेशनल इंस्टीट्यूट आफ हेल्थ (एनआइएच), अंतरिक्ष एजेंसी नासा नेशनल साइंस फाउंडेशन (एनएसएफ) आदि प्रमुख एजेंसियों अनुसंधान कोष में ट्रंप सरकार अरबों डालर की कटौती कर दी है।

नेतृत्व करता र और उल्लेखनीय है कि दशकों तक अमेरिका विज्ञान और तकनीक में वैश्विक करता रहा है। इंटरनेट, मोबाइल फोन, कैंसर और दिल की बीमारियों के इलाज जैसी कई क्रांतिकारी शोध और खोज अमेरिका के विश्वविद्यालयों अनुसंधान एजेंसियों की देन रही हैं, लेकिन अब पहली बार वैज्ञानिक समुदाय के बीच एक असुरक्षा की भावना फैल रही है, खासकर युवा शोधकर्ताओं के बीच, जिनका भविष्य वित्तीय मदद टिका होता है। इस बीच, फ्रांस और जर्मनी जैसे कई देश अमेरिकी वैज्ञानिकों को यह भरोसा दिला रहे हैं कि उनके शोध में कोई राजनीतिक या वैचारिक अड़ंगा नहीं होगा। इन योजनाओं में अमेरिकी वैज्ञानिकों की भी दिलचस्पी देखी जा रही है।

कई देशों ने अपने प्रतिभा परिदृश्य में बेहतर सुधार किए हैं, जबकि कुछ के लिए यह क्षेत्र एक चुनौती बना हुआ है। अमेरिका अपने उत्कृष्ट वैज्ञानिकों और कुशल तकनीकी प्रतिभाओं के लिए जाना जाता है। कनाडा लीड्स ने तो इस दिशा में गंभीर पहल करते हुए अपने देश के लिए एक भर्ती अभियान शुरू किया है, जिसका उद्देश्य अमेरिका से युवा वैज्ञानिकों को आकर्षित करना है। स्विट्जरलैंड को दुनिया का सबसे प्रतिभा प्रतिस्पर्धी देश माना जाता है, क्योंकि यह कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने, आकर्षित करने और बनाए रखने की क्षमता के लिए जाना जाता है। वैश्विक असमानताएं सतत विकास लक्ष्यों तक पहुंचने में एक बाधा बन सकती हैं। अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए प्रतिभाओं को आकर्षित करने की आज हर देश की प्राथमिक आवश्यकता है दुनिया भर में एआइ, हरित ऊर्जा, रोबोटिक्स और अन्य महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में कौशल रखने वाली प्रतिभाओं की मांग बढ़ रही है। इसके लिए प्रतिस्पर्धा मुख्य रूप से तीन क्षेत्रों में चल रही है- विज्ञान और प्रौद्योगिकी, वाणिज्यिक नवाचार और शिक्षा अधिकतर सरकारों ने सामरिक उपायों पर ध्यान केंद्रित किया है, लेकिन प्रतिभा में सार्थक भू- राजनीतिक बढ़त हासिल करने के लिए साहसिक, नए और रणनीतिक उपायों की जरूरत होती है। हालांकि, अधिकांश देश वैश्विक प्रतिभा का दोहन करने के लिए वृद्धिशील और सामरिक दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, लेकिन शुरुआती संकेत बताते हैं कि अत्यधिक कुशल प्रतिभाओं के लिए प्रतिस्पर्धा भू-राजनीतिक क्षेत्र में स्थानांतरित होने लगी है।

प्यू अनुसंधान केंद्र के अनुसार, दस में से आठ लोग आप्रवास सुधार का समर्थन करते हैं, जो मांग में मिचन करते है, 1 में कुशल प्रतिभाओं के पक्ष में हैं। दूसरी तरफ, ट्रंप प्रशासन अत्यधिक कुशल प्रतिभाओं के लिए योग्यता-आधारित प्रणाली के तहत अवैध पर नकेल कसता जा रहा है। इस बीच, जापान और कई यूरोपीय व मध्य पूर्वी देशों की कुशल अप्रवासियों के लिए अपनी सीमाएं खोलने में दिलचस्पी है, लेकिन उनके प्रयास प्रायः लालफीताशाही के कारण बाधित होते रहे हैं। इसी क्रम में चीन ने तो में ही प्रतिभा योजना शुरू 1 2008 म की थी, जिसका उद्देश्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी में चीनी मूल की प्रतिभाओं को अन्य देशों से वापस लाना है, ताकि नवाचार को बढ़ावा दिया जा सके और देश को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में मजबूत किया जा सके। यूरोपीय संघ और कंपनियां प्रतिद्वंद्वी देशों से उदार प्रस्तावों के साथ संपर्क में ब्रिटेन की एआई इसी क्रम हैं, जिसमें सबसिडी, कर छूट और कर छूट और विनियमन शामिल हैं। कई देश अपने विश्वविद्यालयों में छात्रों और शोधकर्ताओं को आकर्षित -राजनीतिक बढ़त चाहते हैं। जर्मनी अंतरराष्ट्रीय शोध को बढ़ावा देने

के उद्देश्य से महत्त्वाकांक्षी छात्रवृत्ति कार्यक्रम चला रहा है। वह हर वर्ष 200 देशों के लगभग डेढ़ लाख छात्रों और शोधकर्ताओं को अनुदान देता है। एक सच्चाई यह भी है कि आधुनिक वैश्विक होड़ में विकास, प्रतिभा से आगे निकलता जा रहा है। विकसित दुनिया के अधिकांश भाग में धीमी वृद्धि और राजकोषीय मितव्ययिता के कारण कई कंपनि कंपनियों को का कुछ उभरते बाजारों की काफी आकर्षक लग रही है, लेकिन

मजबूत अर्थव्यवस्थाएं और बढ़ती आय इसमें एक जटिलता है। ब्राजील, रूस, भारत और चीन जैसे देशों में प्रतिभा खोज और उसे बनाए रखना तेजी से मुश्किल होता जा रहा है। ऐसे में में शोध- - -समर्थित ढांचा नीति निर्माताओं को बेहतर कामयाबी की दिशा में ले जा सकता है, जबकि उन्नत अर्थव्यवस्थाओं का रुख प्रवासी प्रतिभाओं को सक्रिय रूप से मजबूत आकार देने के बजाय बहुधा प्रतिक्रियात्मक है। दूसरी तरफ, चौंकाने वाला सच यह भी है कि पिछले दशकों में विविध नवाचार--प्रयासों का अपेक्षित लाभांश नहीं मिला है। ऐसे में कुशल प्रतिभाओं के लिए प्रवासन रणनीति को नए सिरे से परिभाषित करना होगा। व्यापक सैद्धांतिक और अनुभवजन्य शोध का लाभ उठाने के लिए वैश्विक प्रतिभा-प्रवास सूचकांक विकसित करना होगा। हालांकि, बाजार की ताकतें निश्चित रूप से परिणामों को प्रभावित कर रही हैं, लेकिन दुर्लभ प्रतिभा-संसाधनों का असमान वितरण बाधक साबित हो रहा है। ऐ में कुशल आप्रवासी प्रतिभाओं की राह में रोड़े बिछाने के लिए वैज्ञानिक शोध- अनुसंधानों और नवाचारों की वित्तीय मदद बाधित करना कितना विवेक सम्मत है, इसे स्वतः ही समझा जा सकता है।

यूपीएससी क्रैक करना लगातार बने रहने के बारे में है

भारत की सबसे अधिक प्रतिस्पर्धी और प्रतिष्ठित परीक्षाओं में से एक यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा (सीएसई) को क्रैक करने का मंत्र लगातार प्रयासों, समर्पण और अत्यधिक ध्यान का पर्याय है।

कई यूपीएससी टॉपर्स ने दोहराया है कि परीक्षा को क्रैक करने के पीछे सफलता सिर्फ बुद्धिमत्ता और कड़ी मेहनत नहीं है। उम्मीदवारों के लिए यह आवश्यक है कि वे लंबे समय तक, अक्सर वर्षों तक ध्यान और निरंतरता बनाए रखें।

उम्मीदवारों के लिए एक सप्ताह, एक महीने या यहां तक कि तीन महीने तक लगातार रहना आसान हो सकता है। यदि आपका लक्ष्य यूपीएससी 2024 परीक्षा है, तो आपको डेढ़ साल तक स्थिरता के उस स्तर को बनाए रखने की आवश्यकता है। और सुझावों के साथ आपकी मदद करने के लिए, हमने आपकी तैयारी की रणनीति को ध्यान में रखते हुए 7 बिंदुओं को संकलित किया है।

1.। समयसीमा के साथ लक्ष्य निर्धारित करना इस प्रक्रिया में पहला कदम अपने लक्ष्य को निर्धारित करना और समयसीमा स्थापित करना है। उदाहरण के लिए, यूपीएससी को सफलतापूर्वक क्रैक करने के लिए एक शुरुआत के लिए 6 महीने की अवधि शायद बहुत कम है। इसके बजाय, उम्मीदवार को अगले साल अपनी टाइमलाइन को आगे बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। एक साथ अतिरिक्त कार्यों को जुटना अधिक बोझ हो सकता है और लगातार बने रहने के लिए प्रतिकारक कार्य कर सकता है। इसके बजाय, उम्मीदवारों को कार्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए और दूसरे पर जाने से पहले एक को खत्म करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

2.। एक व्यापक रणनीति के लाभ ध्यान दें कि समय सारिणी और रणनीति बनाना एक ऐसी चीज है जिसमें विशेषज्ञता और कौशल की आवश्यकता होती है। पता है कि आपकी विशिष्ट रणनीति या समय सारिणी आपके लिए काम करेगी क्योंकि पिछले कुछ रैंकर की रणनीतियों ने उनके लिए काम किया था। आपकी रणनीति में उन सभी कारकों और चर को शामिल करना चाहिए जिनका आपकी तैयारी पर प्रभाव पड़ता है। इसमें तैयारी, सीखने की शैली और कोचिंग शुल्क, किराया आदि जैसे वित्तीय कारकों के लिए दैनिक / साप्ताहिक आधार पर आवश्यक समय शामिल है। एक को छोटे, औसत दर्जे का और प्रबंधनीय चंक्स में साल भर की पढ़ाई की तैयारी से अधिक को तोड़ना होगा। जरूरत पड़ने पर मदद मांगने में शर्म महसूस न करें। यदि आपके पास इसकी सहायता करने के लिए कोई नहीं है, तो यूपीएससी संरक्षक का मार्गदर्शन और विशेषज्ञता प्राप्त करें।

3। अपने सीखने का मूल्यांकन करें

यूपीएससी सीएसई परीक्षा की तैयारी के लिए अध्ययन और पढ़ने के लंबे समर्पित घंटों की आवश्यकता होती है। यूपीएससी की तैयारी सिर्फ अकेले पढ़ने के बारे में नहीं है। आपको विश्लेषण करना, बनाए रखना और सीखना चाहिए कि आप जो भी पढ़ रहे हैं उसका उपयोग कैसे करें, कुछ ऐसा जो उत्तर लेखन के समान है। याद रखें कि आप केवल वही सुधार सकते हैं जो आप माप सकते हैं। इसलिए, अपनी प्रगति की निगरानी करना और परीक्षणों के माध्यम से जो कुछ भी आपने कवर किया है उसका मूल्यांकन करना आवश्यक हो जाता है। प्रीलिम्स मॉक, मेन्स उत्तर लेखन और आकाओं और साथियों के साथ चर्चा को आपकी तैयारी के पहले सप्ताह से शामिल किया जाना चाहिए।

4। एक प्रतिक्रिया-सुधार लूप बनाएं किसी विशिष्ट कार्य को पूरा करने के लिए आपको न केवल अपने लिए बल्कि उस व्यक्ति या प्रणाली के प्रति जवाबदेह होना चाहिए। यूपीएससी के संरक्षक, कई संस्थानों में, ऐसी प्रणाली स्थापित करते हैं जिसके माध्यम से आपकी योजना, लक्ष्य निर्धारण, निगरानी, मूल्यांकन और प्रतिक्रिया-सुधार लूप को एक में व्यवस्थित किया जाता है। वे अपने अमूल्य अनुभव का उपयोग करने में मदद करने के लिए आप अपने लक्ष्यों से डायवर्ट नहीं होगा। इस प्रकार, आपको अन्य लोगों के प्रति जवाबदेही को आउटसोर्स करना चाहिए और अपनी तैयारी को पूरा करना चाहिए।

5.। दैनिक सुधार पर ध्यान दें यूपीएससी की सफलता समय की अवधि में छोटे औसत दर्जे के लाभ के बारे में है। याद रखें, स्थिरता हमेशा तीव्रता को हरा देती है। नए लक्ष्य निर्धारित करना आसान है। हालांकि, लगातार सुधार प्रदर्शित करना एक दैनिक पीस है। इसलिए, अपने दैनिक दिनचर्या और लक्ष्यों के अनुरूप रहने के लिए अपने उपयुक्त जीवन-बचत हैक की योजना बनाएं और चयन करें।

6। लंबे समय तक अलगाव से बचें आप थक जाएंगे, और कुछ ही हफ्तों में जला हुआ महसूस करेंगे। जब आप पूरी तरह से बाहर निकल जाते हैं तो अपनी बैटरी को रिचार्ज करने का इंतजार न करें। व्यायाम, पाठ्येतर गतिविधियों, या किसी भी शारीरिक गतिविधि के साथ अपने यूपीएससी समय सारिणी में विराम शामिल करें। एक सामान्य लक्ष्य रखते हुए अत्यधिक प्रेरित व्यक्तियों के समूह के साथ तैयारी करना आपको केवल आगे ले जाएगा और आपको अपने लक्ष्य पर अधिक ध्यान केंद्रित करेगा। साथ ही, आप थकावट भी महसूस नहीं करेंगे।

7.। भावनात्मक स्थिरता बनाए रखना यूपीएससी की सफलता के प्रति एक और परिप्रेक्ष्य इस 1.5 साल की लंबी यात्रा के दौरान भावनात्मक रूप से फिट रह रहा है। आपकी उच्चतम स्तर की निरंतरता को प्राप्त करने में सबसे बड़ी बाधा इसका भावनात्मक बिट है। हर अब और फिर, डर या अवसाद जैसे नकारात्मक विचारों से खुद को घेरने की प्रवृत्ति होती है। नकारात्मक विचारों और भय या अवसाद जैसे भावनात्मक मुद्दों को हल करने के बजाय, कई इनसे बचते हैं। हालांकि, आपको यह समझना होगा कि भावनात्मक परेशानियों को नजरअंदाज करने से ही समस्याएं खराब होंगी। यह आपके यूपीएससी आकाओं, शिक्षकों, दोस्तों और परिवार पर भरोसा करने का समय है। उनसे बात करें और उनके साथ कुछ गुणवत्ता समय बिताएं।

लिंग समावेशी शिक्षा छात्रों को संवेदनशील बनाने में मदद करेगी

विजय गर्ग

शिक्षा छात्रों को संवेदनशील बनाने में मदद करेगी एनसीईआरटी को पाठ्यक्रम को अधिक लिंग समावेशी बनाने के लिए परिचय देने वाले परिवर्तनों की प्रकृति के बारे में सावधान रहने की आवश्यकता है

लिंग समावेशी शिक्षा छात्रों को संवेदनशील बनाने में मदद करेगी एक बड़े समाज का प्रतिनिधित्व करता है एक लिंग समावेशी शिक्षा माता-पिता के बीच चिंता पैदा करेगी क्योंकि उनका दृष्टिकोण उनके बच्चे तक सीमित है। शिक्षकों के रूप में, हमें केवल एक से अधिक छात्रों को संभालना होगा, जो लिंग समावेशी शिक्षा को एक आवश्यकता बनाता है। जबकि सभी लिंगों के बारे में जागरूकता छात्रों के बीच सरफेसिंग शुरू हो गई है, उन्हें इस मामले में संवेदनशील बनाया गया है ताकि वे अन्य लिंगों का पता लगाने के लिए 'प्रवृत्ति' से गुमराह न हों, यह स्कूल की जिम्मेदारी बन जाए।

सही जानकारी बहुत जरूरी है लिंग संतुलन जैसे संवेदनशील विषयों के मामले में, विशेष रूप से युवा छात्रों के लिए जानकारी की कमी है। इंटरनेट पर अपर्याप्त तथ्य इस संबंध में औपचारिक शिक्षा को अनिवार्य बनाते हैं। जबकि NCERT पाठ्यक्रम को और अधिक लिंग समावेशी विषयों को पेश करने के लिए संशोधित करने की प्रक्रिया में है, यह उस तरीके के बारे में सावधान रहना चाहिए जिसमें वह सामग्री का परिचय देता है, क्योंकि उनकी पुस्तकों का अध्ययन छात्रों द्वारा स्पेक्ट्रम भर में किया जाता है और इसका दूरगामी प्रभाव पड़ता है।

समझ सम्मान की ओर ले जाती है स्कूल कुछ समय से समावेशी शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दे रहे हैं। छात्रों को पुरुष, महिला और अन्य लिंग के बारे में पढ़ाने से उन्हें अपने 'अलग' सहपाठियों को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी। एक बदले हुए रवैये से सभी छात्रों को फायदा होगा, क्योंकि इससे उनके साथियों के जीवन विकल्पों का सम्मान होगा। इसके अलावा, स्कूलों को माता-पिता और शिक्षकों को लिंग संतुलित पाठ्यक्रम की अवधारणा के साथ बोर्ड पर आने में मदद करने के लिए सेमिनार आयोजित करना चाहिए।

छात्रों को अधिक सहिष्णु बनाना समावेश समाज का एक आदर्श बन गया है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमारे छात्रों के माइंड-सेट में कुछ ऐसा होना चाहिए जो उन्हें औपचारिक पाठ्यक्रम के माध्यम से सिखाया जाना चाहिए। हमारी युवा पीढ़ी उन व्यक्तियों द्वारा सामना किए जा रहे मुद्दों के प्रति असंवेदनशील और असहिष्णु हो गई है जो किसी भी अर्थ में 'अलग' हैं। इस प्रकार, एनसीईआरटी को लिंग समावेशी विषयों को सूक्ष्म तरीके से लाने की आवश्यकता है जो सभी हितधारकों को अधिक स्वीकार करने वाला दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करता है।

हमारे रासायनिक उद्योगों का हरियाली

विजय गर्ग

चिंताओं को गहरा करना हमारे ग्रह का गर्म होना ₹हरा₹ बनाया है और लोकप्रिय शब्द "टिकाऊ". 'ग्रीन होने' का अर्थ है पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने के लिए कदम उठाना। स्थिरता का उद्देश्य उन परिवर्तनों के लिए है जो आर्थिक वास्तविकताओं के साथ पर्यावरणीय चिंताओं को संतुलित करते हैं। आप जो भी शब्द का उपयोग करते हैं, पर्यावरणीय खतरों को कम करने या समाप्त करने का साझा लक्ष्य हमें हरे रसायन विज्ञान की ओर इशारा करता है। और यह क्षेत्र हमें विषाक्तता और प्रदूषण से दूर ले जाता है। 1998 में पॉल अनास्तस और जॉन वार्नर द्वारा पेश किए गए ग्रीन केमिस्ट्री के 12 सिद्धांत, मूल बातों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जैसे कि रासायनिक प्रक्रियाओं में सुरक्षित सॉल्वेंट्स और अभिकर्मकों को अपनाना; ऊर्जा कुशल तरीकों को डिजाइन करना जो सुरक्षित रसायनों की ओर ले जाते हैं जो यथासंभव गैर-विषैले होते हैं और इसके लिए भी नहीं पर्यावरण में बहुत लंबा; और कचरे को रोकना (ताकि आप न करें साफ करने के लिए कुछ भी है)। ग्रीन केमिस्ट्री को कैसे काम पर रखा जा सकता है, इसका एक चित्रण बायोडीजल के उत्पादन से आता है। इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन, एक हरे ईंधन मिशन के हिस्से के रूप में, गैर-खाद्य तेल बीजों जैसे कि जट्रोफा से बायोडीजल का उत्पादन करता है (हिंदी में जमाल घोटा और तमिल में कट्टुकोताई)। बीजों में 30% से अधिक तेल होता है सामग्री, और पेड़ कम वर्षा और

खराब मिट्टी के साथ भूमि में बढ़ता है। जैव डीजल ट्रांससेस्टेरिफिकेशन प्रतिक्रिया से उत्पन्न होता है, जहां बीज के तेल को मेथनॉल के साथ बायोडीजल और बायप्रोडक्ट ग्लिसरॉल की उपज के लिए प्रतिक्रिया दी जाती है, जो व्यावसायिक रूप से उपयोगी है। कार्बन पदचिह्न को कम करने के लिए, मेथनॉल को बायोमास से प्राप्त किया जाना चाहिए। रासायनिक प्रतिक्रियाओं को उत्प्रेरक द्वारा फैलाया जाता है। बायोडीजल उत्पादन को एक क्षार द्वारा सुगम बनाया गया है। सोडियम हाइड्रॉक्साइड का उपयोग अक्सर किया जाता है, लेकिन इसे धोने से अपशिष्ट जल उत्पन्न होता है, जिसमें होता है पर्यावरण में जारी होने से पहले इसका इलाज किया जाना है। कैल्शियम ऑक्साइड एक है हरियाली विकल्प क्योंकि यह एक ठोस है, और इसका 95% बाद में पुनर्प्राप्त किया जा सकता है प्रत्येक उत्पादन चक्र। मनुफैक में बहुत जहरीले पदार्थों का उपयोग किया जाता है फार्मा उत्पादों की भी संरचना। इनमें से कुछ कारखानों के आसपास, हवा में एक मजबूत गंध होती है जो आपको नेलपॉलिश की याद दिलाती है: विलायक टोल्यूने व्यापक रूप से पेरासिटामोल और कई अन्य दवाओं के संश्लेषण या निष्कर्षण में उपयोग किया जाता है। यह एक न्यूरोटॉक्सिन है।

हरित पहलों ने ऐसे अस्थिर कार्बनिक यौगिकों के धीमे प्रतिस्थापन का नेतृत्व किया है, जो कम विषैले, बायोडिग्रेडेबल हैं, और बायोमास स्रोत से उत्पादित किए जा सकते हैं गन्ने की तरह। हरी रसायन विज्ञान का एक और सिद्धांत जो रसायनज्ञ हैं परमाणु अर्थव्यवस्था की ओर काम करना पसंद है। इसका उद्देश्य इनपुट में मौजूद कई परमाणुओं को शामिल करना है वांछनीय उत्पाद में मिश्रण। बायोडीजल उत्पादन प्रक्रिया में डी ऊपर लिखा, हरे रसायन विज्ञान 90% की परमाणु अर्थव्यवस्था में परिणाम है। यह नहीं है बायप्रोडक्ट, ग्लिसरॉल में परमाणुओं को 'दूर' ले जाने के कारण 100%। लेकिन फिर, एक स्थायी पहल में, ग्लिसरॉल स्वयं पॉलिमर, सौंदर्य प्रसाधन आदि बनाने के लिए एक इनपुट के रूप में काम करेगा। परमाणु अर्थव्यवस्था पर ध्यान उन उद्योगों में और भी महत्वपूर्ण है जहां द्वारा उत्पाद बहुत जहरीले होते हैं। ग्रीन केमिस्ट्री की श्रेष्ठता का एक अच्छा उदाहरण है बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस-पिलानी के हैदराबाद परिसर में केमिस्टों से आते हैं। उनकी हरी विधि कैंसर रोधी दवा टैमोक्सीफेन और संबंधित दवा उम्मीदवारों के दवा उत्पादन के लिए लागत प्रभावी होने के दौरान 100% परमाणु अर्थव्यवस्था है और बड़ी मात्रा में इन दवाओं को बनाने में सक्षम (तन्मय चटर्जी और सहयोगियों, ग्रीन केम।, 2023, वॉल्यूम। 25, 779)। इस तरह के तरीके वादा निभाते हैं हमारे परिवेश पर कम प्रभाव।

भविष्य महिला है: स्टेम में महिलाओं की बढ़ती भूमिका

विजय गर्ग

विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित में महिलाओं की बढ़ती भूमिका - कैरियर पथ सामूहिक रूप से स्टेम के रूप में जाना जाता है। ड्राइविंग प्रगति और एक अभिनव, भविष्य केंद्रित भावना को बढ़ावा देने में महिलाओं के अद्वितीय दृष्टिकोण और विचार आवश्यक हैं। जैसे, यह देखने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है कि स्टेम में महिलाओं की संख्या बढ़ रही है। यह रोमांचक प्रवृत्ति जारी रहेगी क्योंकि अधिक युवा लड़कियों को स्कूल में इन विषयों का पता लगाने के लिए प्रेरित किया जाता है और जैसा कि अधिक कंपनियां न केवल टीम में, बल्कि नेतृत्व की स्थिति में भी महिलाओं के होने के महत्व को पहचानती हैं।

स्टेम खोज और अवसर के साथ काम करते हुए, सबसे गतिशील कैरियर संभावनाओं में से कुछ प्रदान करता है। अगले दशक में 10.8% की अनुमानित वृद्धि दर के साथ, स्टेम में कुशल पेशेवरों की मांग निर्विवाद है। फिर भी, इस तेजी से वृद्धि के बावजूद, महिलाओं को काफी कम प्रतिनिधित्व दिया जाता है, जो कुल कर्मचारियों का 48% बनाते हुए स्टेम श्रमिकों का केवल 35% बनाते हैं।

हमें स्टेम में अधिक महिलाओं की आवश्यकता क्यों है बढ़ती मांग। एसटीईएम के तेजी से विकास और विकास ने श्रमिकों और विशेषज्ञता की मांग को बढ़ा दिया है। कार्यबल में महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में लगातार बढ़ रही है और तेज दर से है। उन्होंने पूर्व-महामारी की तुलना में अब काम करने वाली अधिक महिलाओं के साथ महामारी के बाद के कार्यबल में एक मजबूत वापसी की है। इसके अतिरिक्त, महिलाएं सभी डिग्री स्तरों पर पुरुषों की तुलना में अधिक दरों पर कॉलेज में भाग ले रही हैं और स्नातक कर रही हैं। महिलाओं ने समान प्रतिनिधित्व के लिए अपनी लड़ाई में महत्वपूर्ण प्रगति की है और यह समय एसटीईएम क्षेत्र उनके महत्व और योगदान को पहचानता है।

नवाचार। स्टेम समुदाय यह समझने का प्रयास करता है कि दुनिया कैसे काम करती है और रचनात्मकता और नवाचार के माध्यम से अपनी जटिल चुनौतियों से निपटती है। इस स्मारकीय उपलब्धि को प्राप्त करने के लिए महिलाओं से इनपुट की आवश्यकता होती है। अद्वितीय पृष्ठभूमि, अनुभव और दृष्टिकोण को एक साथ लाकर, हम विचारों और खोजों को आधार बनाने की अधिक क्षमता को अनलॉक करते हैं।

विविध आवाजों के मिश्रण के बिना, महत्वपूर्ण समस्याओं की पहचान करना और प्रभावी ढंग से हल करना काफी अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है। स्टेम में महिलाओं के बिना, दुनिया एक मूल्यवान दृष्टिकोण पर बाहर याद करेंगे और नवाचार केवल भुगतना होगा।

व्यापार विकास। अनुसंधान से पता चलता है कि महिलाओं को एक प्रतिस्पर्धी लाभ और विकास के लिए आवश्यक माना जाना चाहिए। लिंग-विविध नेतृत्व टीमों वाली कंपनियां बिना किसी की तुलना में वित्तीय रूप से बेहतर प्रदर्शन करती हैं और 1,000 कंपनियों के 12-देश के अध्ययन में पाया गया है कि कंपनियों में बेहतर मूल्य सृजन की संभावना 27% अधिक थी और 21% से अधिक औसत लाभप्रदता होने की संभावना थी जब वे लिंग विविधता के लिए शीर्ष में थे नीचे के क्वार्टाइल में उन लोगों की तुलना में लैंगिक विविधता।

इसके विपरीत, कम से कम लिंग, जातीय और सांस्कृतिक विविधता वाली कंपनियों को अन्य सभी कंपनियों की तुलना में औसत लाभ प्राप्त करने की

संभावना 29% कम थी। विश्व स्तरीय प्रतिभा को आकर्षित करने और इष्टतम प्रदर्शन प्राप्त करने के लिए, कंपनियां महिलाओं को टेबल पर लाने वाले मूल्य को नजरअंदाज करने का जोखिम नहीं उठा सकती हैं।

संभावित कमाई। स्टेम करियर लंबी अवधि के कैरियर स्थिरता के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर के साथ महिलाओं को पेश करते हैं। स्वास्थ्य सेवा, इंजीनियरिंग और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्र समाज के कामकाज और भविष्य को आकार देने के लिए आवश्यक हैं। स्टेम करियर भी अक्सर उच्च-औसत वेतन के साथ आते हैं। स्टेम नौकरियों में महिलाएं गैर- स्टेम व्यवसायों में उन लोगों की तुलना में 33% अधिक कमाती हैं और पुरुषों के सापेक्ष एक छोटे वेतन अंतर का अनुभव करती हैं, हालांकि वेतन असमानता अभी भी मौजूद है।

ये वित्तीय लाभ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। न केवल वे व्यक्तिगत महिलाओं के व्यक्तिगत और पेशेवर विकास में योगदान करते हैं, बल्कि वे महिलाओं को अधिक आर्थिक सफलता और सुरक्षा प्राप्त करने में भी मदद करते हैं और लिंग वेतन अंतर को कम करते हैं।

कैसे स्टेम हमारे भविष्य को आकार देता है एसटीईएम में महिलाओं को शामिल करना विज्ञान और नवाचार के भविष्य को आकार देने के लिए आवश्यक है। वर्तमान महिला नेता अगली पीढ़ी का समर्थन करने और विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित के क्षेत्रों को फिर से परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आकाओं, रोल मॉडल और अधिवक्ताओं के रूप में, वे क्षेत्र में अन्य महिलाओं के लिए और युवा लड़कियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं जो पहले से कहीं अधिक इन भूमिकाओं में महिला प्रतिनिधित्व देख रहे हैं। उनकी उपस्थिति युवा लड़कियों को सशक्त बना सकती है, जिनकी एसटीईएम शिक्षा में रुचि है, एक नए प्रकाश में अपने भविष्य की कल्पना करें।

वक्फ पर सियासत

वक्फ संशोधन कानून पर फिर सियासत सुलगने लगी है। बिहार में विधानसभा चुनाव अक्तूबर में हो सकते हैं, लिहाजा सियासत ध्रुवीकरण में तबदील होने लगी है। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने एक जनसभा को संबोधित करते हुए हुंकार भरी कि यदि 'इंडिया' गठबंधन चुनाव में जीता, तो वक्फ कानून को कूड़ेदान में फेंकने का काम करेगा। यह बिहार की 17.7 फीसदी मुस्लिम आबादी को अपने पक्ष में लामबंद करने की सियासत है। जनसभा का आयोजन 'इमारत-ए-शरिया' नामक कट्टरपंथी मुस्लिम संगठन ने किया था, लिहाजा 'शरिया कानून' लागू करने की भी हुंकारें भरी गईं। भारत में सभी राज्य, यहां तक कि पंचायतें भी, संविधान से संचालित होते हैं। ये तमाम हुंकारें महज चुनावी हैं, क्योंकि ये असंवैधानिक हैं। यह देश भी इस्लामी नहीं है। फिर भी ये हुंकारें संसद के लिए गंभीर चुनौती हैं, संसद को धमका रही हैं कि उसके दोनों सदनों में पारित विधेयक और राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के हस्ताक्षर के बाद बने कानून को कूड़ेदान में फेंकने का आह्वान किया गया है। संविधान के अनुच्छेद २५६ और २५७ में स्पष्ट प्रावधान हैं कि राज्य केंद्र द्वारा बनाए गए कानून को खारिज नहीं कर सकते। कृषि कानूनों का संदर्भ भिन्न है। वहां प्रधानमंत्री के आग्रह पर संसद ने अध्यादेशी कानूनों को निरस्त करने के प्रस्ताव पारित किए थे। कैबिनेट ने यह करने का आग्रह किया था। विपक्ष उन कानूनों का जो उल्लेख कर रहा है, वह गलत और सियासी है। बहरहाल वक्फ जैसे कानून को राज्य सरकारें लागू करें अथवा न करें, उसके भी स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं, लेकिन राज्य के पास केंद्रीय कानून को नकारने की संवैधानिक शक्तियां नहीं हैं। दिलचस्प है कि 'नमाजवाद' की सियासत करने वाले अनुच्छेद 14,15, २५, २६, २९ की भी दुहाई दे रहे हैं कि वक्फ संशोधन कानून बना कर उनके मौलिक और मजहबी अधिकारों का हनन किया गया है। लेकिन वक्फ महज मजहबी मामला नहीं है। यह अकूत संपत्तियों के जरिए व्यापक भ्रष्टाचार और कब्जेबाजी का मामला है। यह विधेयक पारित करने से पहले संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) बनाई गई थी, जिसमें विपक्ष ने बराबर के विमर्श में शिरकत की थी। बहरहाल भारत के वक्फ बोर्डों के पास करीब 9.4 लाख एकड़ जमीन है, जो सेना और रेलवे के बाद सर्वाधिक है। करीब 8.7२ लाख संपत्तियां वक्फ के अधीन हैं। वक्फ ट्रिब्यूनल में 40,951 मुकदमे विचाराधीन हैं, जिनमें कई मामले मुसलमानों की ही शिकायत के आधार पर दर्ज किए गए हैं। बेहद अहम सवाल है कि इतने अमीर वक्फ बोर्डों के बावजूद औसत मुसलमान गरीब, अनपढ़, साधनहीन क्यों है? वक्फ कानून में पहली बार संशोधन नहीं किए गए हैं। मौजूदा सरकार वक्फ की संपत्तियों का डिजिटलीकरण कर उन्हें पारदर्शी बनाना चाहती है। प्रशासनिक स्तर पर कलेक्टर की भूमिका भी तय करना चाहती है। राजस्व रिकॉर्ड को सिलसिलेवार बनाना चाहती है। सबसे अहम संशोधन यह है कि वक्फ से जुड़े विवाद सिर्फ ट्रिब्यूनल तक ही सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि उन्हें उच्च न्यायालय तक में चुनौती दी जा सकती है। बहरहाल अभी मामला सर्वोच्च अदालत के विचाराधीन है। कुल 5 याचिकाओं पर सुनवाई जारी है। सर्वोच्च अदालत ने सिर्फ २ प्रावधानों पर ही अंतरिम रोक लगाई है। अंतरिम निर्देश पर शीर्ष अदालत ने ३० मई को अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था। दरअसल 5 मई को यह मामला नई न्यायिक पीठ को सौंपना पड़ा, क्योंकि तत्कालीन प्रधान न्यायाधीश सेवानिवृत्त हो गए थे। अब मौजूदा प्रधान न्यायाधीश जस्टिस बीआर गवई पीठ का नेतृत्व कर रहे हैं। सर्वोच्च अदालत के फैसले के बाद स्पष्ट होगा कि वक्फ संशोधन कानून यथावत रहता है अथवा कुछ संशोधनों पर अदालत की लाल लकीर चलती है, लेकिन इस मुद्दे पर कमोबेश बिहार को दोफाड़ कर दिया है। वहां चुनाव हिंदू बनाम मुसलमान पर ही होंगे, यह सियासत से साफ लगता है। अलबत्ता देश में समान नागरिक संहिता लागू करने का एक अच्छा अवसर सरकार ने गंवा दिया है। वक्फ पर कानून बनाने के बजाय सभी धर्मों पर एक ही कानून संशोधित कर बना देना चाहिए था। मंदिरों के कायदे-कानून भी अलग-अलग हैं। यदि धर्म पर भी एक ही कानून बन जाता, तो विसंगतियां कम होतीं और अकेले वक्फ का बवाल भी पैदा न होता।

3 जुलाई 2025 अमरनाथ यात्रा विशेष आलेख शीर्षक
कश्मीर की लाइफ लाइन है बाबा अमरनाथ यात्रा

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

कश्मीर में धारा 370 हटाये जाने के इतने साल बाद अब अगर जम्मू कश्मीर की अवाम से पूछे कैसा अनुभव हो रहा है तो वह मंद मंद मुस्काते हुए कहते हैं कि आजादी क्या होती है और लोकतंत्र किसे कहते हैं अब हमें पता चला। धीरे-धीरे भारतीय लोकतंत्र के अनुरूप जम्मू कश्मीर का हर एक क्षेत्र में विकास की गंगा जमुनी संस्कृति हिलोरें ले रही है। कल तक सिर्फ प्राकृतिक वह बहार की सुंदरता के लिए कश्मीर अच्छा दिखता था पर जब जनमानस की नजरों में कश्मीर की जनता का आत्ममंथन किया गया, तो पता चला कि यह के लोगों में मानवीय मूल्यों के प्रति समभाव है। धरातल पर सुविधाओं की मजबूत डोर ने बहुत उच्चाईया दे दी है। तभी तो इतने बड़े पहलगाम हमलें के बाद भी वहां का जनजीवन अस्त-व्यस्त नहीं हुआ, कुछ दिन जरूर रुका। अब अवागमन के साधन में रेल की सुविधा भी मिल रही है, उसी के साथ एक दूसरे में आत्मविश्वास भी बड रहा है। वहीं लोगों के दिलों में आतंक का खौफ मिट गया है। तभी तो जम्मू कश्मीर और भी खुबसूरत नजर आ रहा है। इसी के बीच बाबा बर्फानी की अमरनाथ यात्रा शुरू हो रही है। यहां यात्रा कश्मीर की लाइफ लाइन है। भारत ने अपना अभिन्न अंग कश्मीर को बना रखा है। भारत की सुंदरता का खुबसूरत मुकूट कश्मीर की धरती है, जो हम सभी के लिए जन्नत है, वह तो सिर्फ कश्मीर में हैं। इस भागदौड़ व आपाधापी भरें जीवन में तनाव बहुत है और जीवन से सुकून के पल चंद ही है। इसलिए अगर हम इसे तलाश रहे हैं तो कुछ समय जरूर बिताए कश्मीर की इन वादियां में जो हमे बुलाती है। क्योंकि कश्मीर में कूदरत की असली चित्रकारी देखने को हमें मिलतीं है। कश्मीर की इस अदभुत सुंदरता को देख मन प्रफुल्लित हो जाता है। मन होता है कि वह जायें बार-बार जाये। अब जब वहां सज गया है बाबा बर्फानी का यहां दरबार तो यात्रा में जीवन का सार हम तलाशें। इतने वर्षों से जिस बुरे दौर में और आंतक के काले नकाब के कारण घाटी की प्रचीनतम सभ्यता धूमिल हो रही थी। अब वह खुली हवा में सांस लेने लगी है। जहां शाम को गोली बारुद का धमाका सुनाई देता था आज उसी राज्य में भविष्य निरंतर आगे बढ़ रहा है। डर खौफ का आतंकी साया का वह दौर पुराना था अब विकासशील कश्मीर में फिर से वही दिव्य यात्रा की अलौकिक छबि निकलें को तैयार हैं। पवित्र धाम में फिर भोले के भक्तों का तांता लगेगा। भोले का दरबार अब फिर सज गया है वहीं बाबा बर्फानी का दरबार लग गया है। डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी का सपना उनके पटल पर घुमाने लगा था। जम्मू कश्मीर की पीड़ा तकलीफ़ आतंक व दुश्मन देश पाकिस्तान का हस्तक्षेप के कारण कश्मीर का भविष्य दांव पर लगा हुआ था। वहां के स्थानीय राजनेताओं ने अपने ही परिवारवाद का भाग्य संवारा जनमानस का नहीं। वहीं के हुक्मरानों ने अवाम की पैरवी नहीं की क्योंकि उनकी राजनीति की विरासत खत्म हो जाती? सबसे पहले भारत सरकार में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बहुमत के दम पर कानूनी लड़ाई के साथ लोकतंत्र व संविधान के अनुरूप धारा 370 के उस जहर को निकाला। जो गुलामी का प्रतीक थी, जम्मू कश्मीर के विकास में अवरोध था। जैसे ही धारा 370 हटीं उसके बाद खुले आसमान में हर एक क्षेत्र में जम्मू कश्मीर लेह लद्दाख के हिस्से में खुशनुमा माहौल बना हुआ है। अब जम्मू कश्मीर में लोकतंत्र का साथ मिल रहा है, प्रदेश सरकार भी केन्द्र के साथ मिलकर अब विकासशील कश्मीर की बात करती हैं। यह बहुत बड़ी बात है। भारत सरकार ने देश का मस्तक गर्व से ऊंचा कर दिया, फिर विकास की पटरी पर जम्मू कश्मीर का हर एक परिवार हर एक तबके के व्यक्ति को केन्द्र सरकार की सुविधाओं का शुद्ध रूप से लाभ मिलने लगा है। अब तारें जमी पर आ गये है डल झील का वह शिकरा हो या अन्य रोजगार की गारंटी बन गई है और यहां के युवाओं व उन लाखों लोगों के लिए जीवन यापन का साधन बन चुकी है, तभी तो यह यात्रा कश्मीर की लाइफ लाइन मानीं जाती है। कश्मीर पर्यटन के क्षेत्र में सिरमौर बना हुआ है। राज्य के सभी लोग नये कश्मीर की कहानी लिख रहे हैं। जिससे पर्यटकों की लगातार बढ़ती संख्या से रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं। वहीं शिक्षा के क्षेत्र में स्कूल कालेज भी अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर रहे हैं कश्मीर के लोग पूरी दुनिया में भारत का नाम रोशन कर रहे हैं। यह तभी हो रहा है जब घाटी में अमन-चैन शांति का माहोल बना हुआ है। इतने बड़े संघर्ष के बाद जब युद्ध के हालात में वहां के लोगो ने अभी हिम्मत नहीं हारी तो आज जिस प्रकार वहां जनजीवन फिर से पटरी पर आ गया है। यहां बहुत बड़ी बात है, अब वह का नौजवान गलत दिशा में अपने कदम नहीं बढ़ते है। उनका भविष्य बम बंदुक व पत्थरों के हाथों में नहीं है यही सच्चाई कश्मीर के दृष्टी पटल की है जब भारतीय लोकतंत्र के साथ संस्कृति सभ्यता व संविधान की बातों से आज जम्मू कश्मीर मजबूती से खड़ा हुआ है। पुराने दिनों में संगीनों के साये में फौज का कड़ा पहरा रहता था वहीं अब नौजवानों के चेहरों में मुस्कान है क्योंकि फिजा रंगीन है, और खुशनुमा माहौल व सकारात्मक प्रयासों से सब कुछ अच्छा है। वहीं राजनीतिक दलों की पीढीयों में भी अभिव्यक्ति की आजादी के साथ साथ अधिकार भी पहले से ज्यादा बढ़े हैं, और लोकतांत्रिक व्यवस्था में बोलने पर प्रतिबंध या डर का माहौल अब नहीं है। अब इस आधुनिक युग में भारत के कश्मीर राज्य में युवा पीढ़ी कश्मीर को आगे बढ़ने हेतु पूरी ईमानदारी व कत्तर्व्य निष्ठ होकर काम कर रही हैं। जम्मू कश्मीर के लोग अपने राज्य की कला संस्कृति साहित्य सभ्यता का प्रसार प्रचार करने के लिए अब भारत को अपना मानने वाले खुश मिजाज आवाम अपने पंखों को फैला कर विकासशील कश्मीर का नया इतिहास लिख रही है। विकासित भारत में जम्मू कश्मीर का इतिहास व भविष्य दोनों बहुत प्रेरणादायक है खुशहाली की अविरल धारा झेलम चीनार के इतिहास में चलने हेतु तैयार है। विश्व शांति व अहिंसा प्रेम व सौहार्द और अपनी गंगा जमुनी तहजीब के चलते हमेशा से भाईचारे को बढ़ावा देता संदेश भारत के लिए अच्छा है। यह तो वक्त की आंधियों ने जम्मू कश्मीर को पिछड़ा कर दिया था। अब वर्तमान में सब कुछ अच्छा हो रहा है, गुलशन में नफरत मिट गई है और दिलों से आपसी प्रेम बढ़ रहा है। दुरियां मजहब की खत्म हो गई है अब सिर्फ पड़ोसी दुश्मन

पाकिस्तान ही नापाक हरकत करता है बाकी तो राज्य में दोस्ती-यारी की बात होती है। दुश्मनी से किसका भला हुआ है, लड़ाई झगडे से हिंसात्मक वातावरण निर्मित होता है। जिससे मानवता का झरण होता है इंसानियत के सच्चे रास्ते पर चल कर ही सच्चाई की जीत होती है। देश के लिए आगे बढ़ने में जम्मू-कश्मीर का साथ मिलने के बाद पर्यटन विभाग के क्षेत्र में बहुत संभावना बढ़ गई है। तभी तों अब बदलाव की इबादत लिखीं जा रही है। जिससे पर्यटन के क्षेत्र में लोगों को व्यवसाय व उद्योग धंधा मिलेगा। विदेशों में बड़े बड़े इवेंट करने की जगह पर जम्मू कश्मीर में बड़े आयोजन करें। फिर देखिए भारत की उन्नति में चार चांद कैसे लगाते हैं। अब नये कश्मीर में सकारात्मक ऊर्जा के साथ अपना नाम देश दुनिया में रोशन कर रहा है। इसी के चलते और भी खुबसूरत हो गया है यह जो नये भारत का नया कश्मीर है। वहीं यह रास्ते भी इस धरती को स्वर्ग बना रहे हैं। चारों ओर विकास हो रहा है। वहीं सोनमर्ग टनल कश्मीर के लोगों के लिए विकास की इबादत है। विकसित भारत में पर्यटन क्षेत्र प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का सपना अब साकार हो रहा है जम्मू कश्मीर में सिर्फ विकास ही विकास हो रहा है। इससे जम्मू कश्मीर के पर्यटन व युवाओं को रोजगार की नई मंजिल जरूर मिल रही है। वहीं दैनिक आजिविका के लिए इस तरह की राह आवाम के साथ मिलकर चलने से ही सम्भव हुई हैं। यहां अब वर्तमान में जीवन सुलभ होता जा रहा है। सोनमर्ग टनल श्री नगर लेह मार्ग खुलते हुए रास्तों में यह 12 किलोमीटर लम्बी टनल कश्मीर में फिर भारत का गौरव तिरंगा शान से लहराया रहा है। हिमस्खलन भूस्खलन की बाधाओं से बचाने के लिए यह बहुत उपयोगी सुधार किए गया है। इसी से यात्रा और भी सुगम होगी। श्री नगर व सोनमर्ग की यह टनल आजिविका के साधन के रास्तों को खोला जाना यहां के स्थानीय लोगों के लिए खुशनुमा है वहीं यात्रा में पर्यटकों की परेशानी भी दूर होगी। इस समय कठिन डगर जरूर है पर उसी में से मोती तलाशते हुए भारत की शान को बढ़ते लोगों को सलाम। भारत के इस नये जम्मू कश्मीर की ऐसी ही विकास यात्रा देखकर मन प्रफुल्लित हो जाता है। अब समृद्ध व विकसित भारत की कहानी भी कहें रहा है। वर्तमान परिदृश्य में थोड़ी परिस्थिति जटिल हो गई है पर विश्वास व मन में श्रद्धा भाव बना हुआ है। भोले के सच्चे भक्तों में वही जोश देखकर 140 करोड़ भारतीयों में उमंगता बनी हुई है। वैसे तो भोले बाबा बहुत सरल भाव में उपलब्ध हो जातें हैं, क्योंकि उनके नाम के अनुरूप वह भोले होते हैं। कश्मीर की इस हरी-भरी वादियों में 3 जुलाई 2025 से बर्फ में पहाड़ों के बीच प्रचीनतम गुफा में अमरनाथ जी के दर्शन हम भक्तों को होगे। उस सुन्दरता के आगे स्वर्ग का वैभव भी फिखा है। पहलगाम से लेकर गुफा तक का रास्ता सौंदर्य प्रकृति की चित्रकारी का अनुपम नमुना है। यहां की हरियाली और कहीं भी देखने को नहीं मिलती है। क्योंकि हम लोगों ने ईंट पत्थरों के जंगलों में रहने की आदत बना लीं है इसलिए प्राकृतिक सुंदरता से हम दूर हो गये है। इसलिए अमरनाथ यात्रा में हमें वसुंधरा के करीब ले जाती है। इस यात्रा से आध्यात्मिक सुख का एहसास होता है क्योंकि इसी रास्ते से भगवान भोलेनाथ व पार्वती माता एकान्त में अमर कथा का रसपान करने गुफा में गए थे। तो प्रभु ने भी अपने सभी गणो का त्याग कर के गुफा में प्रवेश किया था। इसीलिए आज भी उसी मार्ग से यात्रा होती है और भक्त उस पवित्र अमरनाथ जी की गुफा में प्रवेश करते हैं। पिस्सू टॉप, गणेश टॉप, शेषनाग आदि सभी रमणीय स्थलों से यह यात्रा आगे बढ़ती है। यहां पर जाने से ऐसा लगता है कि संसारिक मोह-माया सब कुछ खत्म हो चुकी है, और हम सभी यात्रा कर रहे हैं और चलते जा रहें हैं। यही शक्ति जो अद्भुत है शिवशंकर भोलेनाथ यानी बाबा बर्फानी की जो हमें आलोकित दुनिया में ले जातीं हैं और हम सभी भोले की भक्ति में रम जाते हैं। जय भोले से पूरा यात्रा मार्ग गुंजायमान हो जाता है। यहां हम सभी का मन पवित्र हो जाता है। तभी संसारिक दृष्टि में अमरनाथ जी की यात्रा जम्मू कश्मीर के लिए लाइफ लाइन मानीं जाती है।

"CET के नाम पर कोचिंग माफिया: हरियाणा में शिक्षा का बढ़ता सौदा"

कुकुरमुत्तों की तरह उगते कोचिंग सेंटर: CET या लूट की नई राह? CET का चक्रव्यूह और कोचिंग का जाल

डॉ. सत्यवान सौरभ

हरियाणा में CET परीक्षा लागू होने के बाद जिस रफ्तार से कोचिंग सेंटर गली–गली उग आए हैं, वह न केवल शिक्षा के व्यवसायीकरण का प्रमाण है, बल्कि बेरोजगार युवाओं की मजबूरी का क्रूर दोहन भी है। बिना किसी नियमन, मान्यता या गुणवत्ता के ये संस्थान बच्चों का भविष्य बेचने में लगे हैं। सरकार को इस पर तत्काल संज्ञान लेना चाहिए और शिक्षा को सेवा के रूप में स्थापित करने की दिशा में कदम उठाने चाहिए।

हरियाणा जैसे राज्य में जहां युवाओं की सबसे बड़ी चिंता बेरोजगारी है, वहां जब सरकार ने CET (Common Eligibility Test) जैसे साझा प्रवेश परीक्षा की घोषणा की, तो यह एक सुनहरे अवसर की तरह सामने आया। परंतु इस व्यवस्था ने कोचिंग माफिया को जो मौका दिया, वह अब शिक्षा की जड़ों को खोखला कर रहा है। गांव-गांव, शहर-शहर 'CET Specialist' के नाम पर खुले हजारों कोचिंग संस्थानों ने शिक्षा को व्यापार और छात्रों को ग्राहक बना दिया है।

शिक्षा के नाम पर छल

CET ने जैसे ही अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, वैसे ही कोचिंग सेंटरों की बाढ़ आ गई। हर गली-मोहल्ले में बिना किसी अनुभव या विषय विशेषज्ञता के लोग "सरकारी नौकरी की गारंटी" का सपना बेचने लगे। उनके पोस्टर-होर्डिंग्स "100% सफलता का दावा", "पहले बैच से चयनित विद्यार्थी" जैसी भ्रामक सूचनाओं से भरे होते हैं। हकीकत यह है कि इनमें से अधिकांश संस्थान न पंजीकृत हैं, न मान्यता प्राप्त, न ही उनके पास प्रशिक्षित शिक्षक हैं।

बेरोजगार युवाओं की मजबूरी

राज्य में बेरोजगारी दर देश में सबसे अधिक है। युवा सरकार की ओर देख रहा है, लेकिन उसे रास्ता केवल कोचिंग सेंटरों के माध्यम से दिखाया जाता है। एक मध्यम वर्गीय या ग्रामीण छात्र 20–30 हज़ार रुपये की भारी-भरकम फीस भरता है, किताबें और टेस्ट सीरीज़ अलग से लेता है, और महीने भर के भीतर उसे समझ आ जाता है कि वह सिर्फ एक और 'ग्राहक' था, 'विद्यार्थी' नहीं।

शिक्षा या धोखाधड़ी?

इन कोचिंग संस्थानों में न तो कोई सिलेबस की स्पष्टता होती है, न ही परीक्षा की तैयारी की वैज्ञानिक योजना। केवल पुरानी सरकारी परीक्षाओं के रट्टा आधारित प्रश्न, कुछ पीडीएफ नोट्स और मॉक टेस्ट के नाम पर दिखावा। छात्र दिन भर का समय और हज़ारों रुपये खर्च कर केवल भ्रम के घेरे में फंस जाता है।

सरकार की भूमिका और विफलता

शिक्षा विभाग या परीक्षा प्राधिकरण की ओर से कोई स्पष्ट गाइडलाइन या निगरानी तंत्र नहीं है कि कौन-सा संस्थान चलाने की अनुमति प्राप्त है, कौन शिक्षक योग्य है। न कोई लाइसेंस प्रणाली है, न शिकायत निवारण तंत्र। सरकार CET लागू करती है, लेकिन उससे जुड़ी कोचिंग माफिया की जवाबदेही से आंखें मूंद लेती है।

क्या कोचिंग ज़रूरी है?

सवाल यह है कि क्या सरकारी नौकरी की तैयारी के लिए कोचिंग अनिवार्य हो चुकी है? अगर हां, तो क्या यह सरकार की शिक्षा प्रणाली की विफलता का प्रमाण नहीं? और अगर नहीं, तो फिर कोचिंग संस्थानों को छात्रों को "भविष्य की गारंटी" देने का अधिकार किसने दिया?

शिक्षा का अर्थ बदल रहा है

आज शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान, विवेक, और सेवा का भाव नहीं रहा। अब शिक्षा 'इंवेस्टमेंट' है और नौकरी उसका 'रिटर्न'। और इस सोच को सबसे ज़्यादा बढ़ावा मिला है कोचिंग उद्योग ने। ₹CET क्लियर कराओ, फिर ग्रुप-C पक्की₹ – इस तरह के नारों ने युवाओं की ऊर्जा और उत्सुकता को सिर्फ एक पंक्ति की परीक्षा में सीमित कर दिया है।

जब शिक्षा व्यापार बन जाती है...

शिक्षा जब व्यापार बनती है तो उसका सबसे बड़ा नुकसान गरीब और ग्रामीण छात्र उठाते हैं। उनके पास न अतिरिक्त संसाधन होते हैं, न विकल्प। वह सोचता है कि फीस भर ली तो शायद नौकरी पक्की, लेकिन यह 'शायद' ही उसका सबसे बड़ा धोखा बन जाता है।

समाधान क्या हो?

1. कोचिंग संस्थानों का पंजीकरण अनिवार्य किया जाए
– गुणवत्ता, शिक्षक योग्यता, शुल्क की सीमा तय हो।
2. सरकारी पोर्टल पर मान्यता प्राप्त कोचिंग सेंटरों की सूची प्रकाशित हो
– छात्रों को जानकारी हो कि कहां दाखिला लेना सुरक्षित है।
3. सरकार CET की तैयारी के लिए फ्री ऑनलाइन कंटेंट उपलब्ध कराए
– E-Vidya पोर्टल, YouTube चैनल, मुफ्त मॉक टेस्ट की व्यवस्था।
4. शिकायत तंत्र लागू हो
– जहां छात्र गलत विज्ञापन या गुमराह करने की शिकायत कर सके।
5. शिक्षकों की योग्यता की जांच हो
– कोई भी व्यक्ति केवल व्यापारिक मंशा से शिक्षण न कर सके।
6. कोचिंग संस्थानों पर टैक्स और सामाजिक ऑडिट लागू हो
– जिससे शिक्षा पारदर्शी और जवाबदेह बने।

भविष्य की राह

हरियाणा जैसे राज्य में CET एक सही पहल हो सकती थी यदि उसके साथ नियोजित तैयारी और पारदर्शिता जुड़ी होती। लेकिन वर्तमान में यह कोचिंग माफिया के लिए 'सुनहरा अवसर' बन गया है और छात्रों के लिए एक 'कठिन धोखा'।

समय की मांग है कि सरकार केवल परीक्षा आयोजित करने तक सीमित न रहे, बल्कि उसकी तैयारी, संसाधन और उससे जुड़े व्यावसायिक शोषण पर भी निगरानी रखे। शिक्षा को एक सेवा की तरह देखना चाहिए, न कि बाज़ार का उत्पाद।

"शिक्षा संकल्प है, सौदा नहीं। प्रतियोगिता संघर्ष है, शिकार नहीं। कोचिंग सुविधा हो, मजबूरी नहीं।"

– डॉ. सत्यवान सौरभ

विकास नहीं विनाश है प्लास्टिक का साथ

[हमारी सुविधा, प्रकृति की सजाः प्लास्टिक – वो ज़हर जो दिखाई नहीं देता]

धरती की कोख से हर दिन कुछ नया जन्म लेता है—पेड़, पौधे, जीवन, साँसें। लेकिन आज उस कोख में एक ऐसी चीज पनप रही है, जो न तो जीवन देती है, न ही साँसों को सहारा। वह है प्लास्टिक—वह ज़हर, जो चुपके-चुपके हमारी मिट्टी, पानी और हवा को निगल रहा है। हर बार जब हम बाजार से सब्जियाँ या सामान लाते हैं, एक चमकदार प्लास्टिक बैग हमारे हाथों में होता है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा कि यही बैग, जो हमें सुविधा लगता है, किसी गाय की आंत में फंसकर उसकी जान ले सकता है? या किसी समुद्री जीव की साँसों को हमेशा के लिए रोक सकता है? 3 जुलाई को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री दिवस हमें यही सवाल पूछता है—क्या हमारी छोटी सी सुविधा धरती के भविष्य से ज्यादा कीमती है?

प्लास्टिक बैग, जो कभी आधुनिकता और सुविधा का प्रतीक था, आज पर्यावरण के लिए अभिशाप बन चुका है। विश्व स्तर पर हर साल लगभग 500 बिलियन प्लास्टिक बैग उपयोग किए जाते हैं, यानी प्रति मिनट लगभग 1 मिलियन बैग। इनमें से अधिकांश बैग एक बार इस्तेमाल के बाद कचरे के ढेर में, नदियों में, या समुद्रों में पहुँच जाते हैं। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) के अनुसार, हर साल 8 मिलियन मीट्रिक टन प्लास्टिक समुद्रों में प्रवेश करता है, जिससे समुद्री जीवों की 100,000 से अधिक मौतें होती हैं। ये आँकड़े डरावने हैं, लेकिन इससे भी भयावह है वह तथ्य कि प्लास्टिक को पूरी तरह विघटित होने में 500 से 1,000 साल तक लग सकते हैं। इस दौरान यह माइक्रोप्लास्टिक में टूटकर हमारे खाद्य चक्र में घुस जाता है। वैज्ञानिक अनुमान लगाते हैं कि एक औसत व्यक्ति हर हफ्ते लगभग 5 ग्राम माइक्रोप्लास्टिक—यानी एक क्रेडिट कार्ड के वजन के बराबर—निगल लेता है। यह सोचकर ही मन सिहर उठता है कि हम अनजाने में अपने शरीर को प्लास्टिक का भंडार बना रहे हैं।

प्लास्टिक बैग की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि यह सस्ता और आसानी से उपलब्ध है। इसकी सर्वसुलभता ने हमें इसकी लत लगा दी है। दुकानों पर हम बिना सोचे प्लास्टिक बैग ले लेते हैं, भले ही वह कुछ मिनटों के लिए ही उपयोग हो। भारत में हर साल लगभग 56 लाख टन प्लास्टिक कचरा उत्पन्न होता है, जिसमें से एक बड़ा हिस्सा सिंगल-यूज़ प्लास्टिक बैग का है। ये बैग नालियों को जाम करते हैं, बाढ़ का कारण बनते हैं, और मिट्टी की उर्वरता को नष्ट करते हैं। नेशनल जियोग्राफिक की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में हर साल 3 लाख से अधिक गायें प्लास्टिक खाने के कारण मर जाती हैं। फिर भी, हमारी आदतें नहीं बदलतीं। क्या यह उचित है कि हमारी सुविधा के लिए नदियाँ दम तोड़ें, खेत बंजर हों, और जीव-जंतु तड़प-तड़प कर मरें?

लेकिन इस अंधेरे में भी आशा की किरण है। बदलाव संभव है, और यह बदलाव हमसे शुरू होता है। अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री दिवस हमें याद

दिलाता है कि छोटे-छोटे कदम बड़े परिणाम ला सकते हैं। कपड़े या जूट का थैला अपनाना, दुकानदार को पॉलिथीन देने से मना करना, और बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना—ये वो बीज हैं, जो एक हरे-भरे भविष्य को जन्म दे सकते हैं। विश्व भर में कई देश इस दिशा में प्रेरणादायक कदम उठा रहे हैं। केन्या ने 2017 में सिंगल-यूज़ प्लास्टिक बैग पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया, जिसमें उल्लंघन करने वालों के लिए जुर्माना और जेल की सजा तक का प्रावधान है। यूरोपीय संघ ने 2021 तक सिंगल-यूज़ प्लास्टिक को चरणबद्ध तरीके से हटाने का लक्ष्य रखा, और कई देशों ने प्लास्टिक बैग पर कर लगाकर उनके उपयोग को हतोत्साहित किया। भारत में भी महाराष्ट्र, तमिलनाडु, और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों ने प्लास्टिक बैग पर कठोर प्रतिबंध लगाए हैं। लेकिन कानून तभी प्रभावी होंगे, जब हम, नागरिक, उन्हें व्यवहार में अपनाएँ। विकल्प हमारे सामने हैं। जूट, कपास, और बायोडिग्रेडेबल सामग्री से बने थैले न केवल पर्यावरण के लिए सुरक्षित हैं, बल्कि टिकाऊ और स्टाइलिश भी हैं। कई स्टार्टअप और स्थानीय कारीगर इनके निर्माण में लगे हैं, जो न केवल पर्यावरण की रक्षा करते हैं, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा देते हैं। उदाहरण के लिए, भारत में 'चलो बैग' और 'बायोबैग' जैसे ब्रांड्स ने बायोडिग्रेडेबल और पुनर्चक्रण योग्य थैलों को लोकप्रिय बनाया है। इसके अलावा, कुछ शहरों में 'थैला बैंक' जैसी पहल शुरू हुई हैं, जहाँ लोग कपड़े के थैले उधार ले सकते हैं और उपयोग के बाद लौटा सकते हैं। ये छोटे-छोटे प्रयास दिखाते हैं कि बदलाव की शुरुआत हो चुकी है।

हमें यह समझना होगा कि प्लास्टिक बैग का बहिष्कार केवल पर्यावरणीय कदम नहीं, बल्कि एक नैतिक दायित्व है। यह उस धरती के प्रति हमारी जिम्मेदारी है, जिसने हमें जीवन दिया। यह उन जीव-जंतुओं के प्रति हमारा कर्तव्य है, जो हमारी गलतियों की सजा भुगत रहे हैं। और सबसे बढ़कर, यह हमारी आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारा वादा है कि हम उन्हें एक ऐसी धरती सौंपेंगे, जहाँ साँस लेना आसान होगा, जहाँ नदियाँ स्वच्छ होंगी, और जहाँ जीवन पनपेगा, न कि प्लास्टिक।

3 जुलाई का यह दिन केवल एक तारीख नहीं है। यह एक आह्वान है—हमारे भीतर के उस योद्धा को जगाने का, जो सुविधा से ज्यादा प्रकृति को चुने। यह वह दिन है, जब हम अपने घर से, अपनी गली से, अपने बाज़ार से एक नई शुरुआत कर सकते हैं। हर बार जब हम एक प्लास्टिक बैग को मना करते हैं, हम एक साँस बचाते हैं—किसी पक्षी की, किसी मछली की, या शायद अपनी ही।

आइए, इस अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री दिवस पर एक संकल्प लें। वह थैला, जो हमारे हाथ में है, आखिरी हो। वह पन्नी, जो हमारी सुविधा बनती है, आखिरी हो। क्योंकि बदलाव का पहला कदम हमेशा असहज होता है, लेकिन वही कदम इतिहास रचता है। हम इतिहास रचें—एक स्वच्छ, हरित, और प्लास्टिक-मुक्त भविष्य का इतिहास। एक ऐसी धरती का, जहाँ फिर से फूल खिलें, नदियाँ गाएँ, और जीवन मुस्कुराए। यह हमारा वादा है, हमारा संकल्प है—न केवल आज के लिए, बल्कि हर उस कल के लिए, जो हमारी प्रतीक्षा कर रहा है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

महिला आरक्षण की दहलीज़ पर लोकतंत्र: अब दलों को जिम्मेदारी उठानी होगी

2023 में पारित नारी शक्ति वंदन अधिनियम भारत में राजनीति के स्वरूप को बदलने का ऐतिहासिक अवसर है। हालांकि इसका क्रियान्वयन 2029 के लोकसभा चुनाव से पहले संभव है, लेकिन यह तभी सफल होगा जब राजनीतिक दल अभी से महिलाओं के लिए अनुकूल वातावरण बनाएँ। केवल आरक्षित सीटें देना पर्याप्त नहीं; दलों को आंतरिक कोटा, वित्तीय सहयोग, प्रशिक्षण, मेंटरशिप और निर्णयकारी भूमिका में महिलाओं को प्राथमिकता देनी होगी। अगर यह मौका चूक गया तो आरक्षण भी दिखावा बन जाएगा। समावेशी और सशक्त लोकतंत्र के लिए अब निर्णायक और नीतिगत पहल ज़रूरी है।

– प्रियंका सौरभ

2023 में पारित नारी शक्ति वंदन अधिनियम, यानी संविधान का 106वां संशोधन, भारत के लोकतांत्रिक ढांचे में महिलाओं के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने का ऐतिहासिक प्रयास है। यह अधिनियम लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण सुनिश्चित करता है, लेकिन इसकी सफलता महज संविधान में दर्ज होने से नहीं होगी—बल्कि इस पर अमल करने की राजनीतिक इच्छाशक्ति से तय होगी। वर्ष 2029 के आम चुनावों में यदि यह आरक्षण प्रभावी होता है, तो यह न केवल भारत के लोकतंत्र के लिए निर्णायक मोड़ होगा, बल्कि महिलाओं के नेतृत्व की दिशा भी तय करेगा। इसके लिए राजनीतिक दलों को अभी से व्यापक और दूरदर्शी कदम उठाने होंगे।

भारतीय राजनीति में महिलाओं की उपस्थिति हमेशा सीमित रही है। 2024 में चुनी गई 18वीं लोकसभा में सिर्फ 74 महिलाएं चुनकर आईं, जो कुल सीटों का मात्र 13.6% हैं। यह आंकड़ा 2019 की तुलना में भी घटा है और वैश्विक औसत 26.9% से काफी पीछे है। राज्य विधानसभाओं की स्थिति और भी चिंताजनक है, जहां औसतन केवल 9% ही महिलाएं विधायक हैं। यह न केवल लैंगिक असमानता को दर्शाता है बल्कि नीति-निर्धारण की उस प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है जिसमें आधी आबादी की हिस्सेदारी नगण्य है।

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी के निम्न स्तर के कई सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारण हैं। सबसे बड़ा कारण है भारतीय समाज की गहरी पैठी हुई पितृसत्तात्मक सोच। महिलाओं को पारिवारिक भूमिकाओं तक सीमित कर दिया जाता है, जिससे नेतृत्व के अवसर स्वाभाविक रूप से पुरुषों को मिलते हैं। 'सरपंच पति' जैसी प्रथाएँ इस सोच को और भी स्पष्ट करती हैं।

राजनीतिक दलों के भीतर भी यह धारणा प्रचलित है कि महिलाएं चुनाव जीतने की दृष्टि से कमज़ोर प्रत्याशी होती हैं। लेकिन यह एक मिथक है, जिसे हाल के आंकड़े खारिज करते हैं। उदाहरण के लिए, 2024 लोकसभा चुनाव में महिलाएं केवल 9.6% उम्मीदवार थीं, लेकिन उनकी सफलता दर पुरुषों से अधिक थी – उन्होंने 13.6% सीटें जीतीं।

महिलाओं के सामने आर्थिक संसाधनों की कमी भी एक बड़ी बाधा है। भारत में चुनाव लड़ना अत्यंत महंगा है, और अधिकांश महिलाएं—खासकर ग्रामीण व पिछड़े वर्गों से—स्वतंत्र रूप से इतने संसाधन नहीं जुटा सकतीं। इसके अलावा, राजनीति का वातावरण भी महिलाओं के लिए असुरक्षित और शत्रुतापूर्ण रहता है। उन्हें ट्रोलिंग, चरित्र हनन, और मानसिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है, जिससे उनका आत्मविश्वास डगमगाता है।

राजनीतिक दलों में महिलाओं के लिए मार्गदर्शन, प्रशिक्षित नेतृत्व विकास, और निर्णय लेने वाली इकाइयों में शामिल करने जैसी संस्थागत व्यवस्थाएँ भी अक्सर अनुपस्थित रहती हैं। महिला मोर्चा बनाकर उन्हें पार्टी के मुख्य ढांचे से अलग कर दिया जाता है, जिससे वे सत्ता के निर्णायक केंद्रों से दूर रह जाती हैं।

2029 के आरक्षण को सार्थक बनाने के लिए राजनीतिक दलों को अब से ही तैयारी करनी होगी। सबसे पहला कदम है—स्वैच्छिक आंतरिक कोटा। टिकट वितरण में 33% महिला उम्मीदवारों को प्राथमिकता देना केवल आरक्षण की तैयारी नहीं, बल्कि समावेशी लोकतंत्र की दिशा में पहल होगी। ऑस्ट्रेलिया की लेबर पार्टी जैसी मिसालें बताती हैं कि आंतरिक कोटा राजनीति की संस्कृति को सकारात्मक रूप से बदल सकते हैं।

दूसरा आवश्यक कदम है—वित्तीय सहायता और संरचित प्रशिक्षण। राजनीतिक दलों को महिला उम्मीदवारों के लिए अलग चुनावी फंड बनाना चाहिए ताकि वे चुनावी खर्च का बोझ उठा सकें। कनाडा का जूडी लामार्श फंड इसका अच्छा उदाहरण है। साथ ही, पंचायतों और नगरपालिकाओं में सक्रिय महिला प्रतिनिधियों को विधानसभा और संसद स्तर के लिए तैयार करने का नेतृत्व कार्यक्रम भी चलाया जाना चाहिए।

महिलाओं को पार्टी की कोर कमेटियों, नीति निर्माण इकाइयों और प्रवक्ता मंडल में भी सक्रिय भूमिका देनी चाहिए। केवल महिला मोर्चा या सांस्कृतिक आयोजनों तक सीमित रखकर नेतृत्व नहीं उभरेगा। IUML जैसी पार्टियों ने हाल ही में कोर नेतृत्व में महिलाओं को शामिल किया है—अन्य दलों को भी यही दिशा लेनी चाहिए।

मेंटोरशिप भी एक सशक्त उपकरण हो सकता है। अनुभवी महिला नेता अगर नवोदित उम्मीदवारों को मार्गदर्शन दें, तो आत्मविश्वास, नीति की समझ, और रणनीतिक कौशल विकसित हो सकता है। इसके साथ ही, पार्टी के भीतर महिलाओं के खिलाफ उत्पीड़न या असम्मानजनक व्यवहार को रोकने के लिए सख्त आचार संहिता और त्वरित कार्रवाई की व्यवस्था ज़रूरी है।

राजनीतिक दलों के प्रयासों के साथ-साथ मीडिया और नागरिक समाज की भी भूमिका अहम है। मीडिया को महिला नेताओं की नीतिगत भूमिका, वैचारिक दृष्टिकोण और सामाजिक योगदान पर केंद्रित करना चाहिए—ना कि उनके पहनावे, निजी जीवन या विवादों पर। नागरिक संगठनों को भी प्रशिक्षण, जनजागरण और महिला नेतृत्व को प्रोत्साहित करने की दिशा में पहल करनी चाहिए।

महिलाओं का राजनीति में प्रतिनिधित्व केवल लैंगिक समानता का सवाल नहीं, बल्कि लोकतंत्र की गुणवत्ता का भी मापदंड है। यदि प्रतिनिधित्व का आधार केवल पुरुषों की पहुंच और दबदबे तक सीमित रहेगा, तो लोकतंत्र का स्वरूप अधूरा ही रहेगा। महिला आरक्षण केवल एक नीति नहीं, बल्कि नेतृत्व को समावेशी, संवेदनशील और संतुलित बनाने का औजार है।

2029 का चुनाव भारत के लिए एक ऐतिहासिक अवसर लेकर आएगा। लेकिन यदि राजनीतिक दल अभी से महिला नेतृत्व को गढ़ने में निवेश नहीं करते—तो यह आरक्षण भी केवल सत्ता में वंशवाद और प्रतीकात्मकता का विस्तार बनकर रह जाएगा।

अब वक्त है कि दल "औरतों के लिए सीट छोड़ने" की बात नहीं करें, बल्कि "औरतों को नेतृत्व के लिए खड़ा करने" की पहल करें। लोकतंत्र को मजबूत बनाने का यही असली रास्ता है।

जवानी की दौड़: क्या सौंदर्य की चाहत जानलेवा हो सकती है ?

[जवानी का वादा या स्वास्थ्य से खिलवाड़? एंटी-एजिंग पर सवाल]

जवानी की चाहत और सौंदर्य का जुनून आज समाज में एक ऐसी लहर बन चुका है, जो लोगों को अपनी चपेट में ले रहा है। चिकनी त्वचा, बेदाग चेहरा, और उम्र को ठेंगा दिखाने का सपना—यह वह आकर्षण है, जो लाखों लोगों को एंटी-एजिंग उपचारों की ओर खींच रहा है। बोटॉक्स, डर्मल फिलर्स, ग्लूटाथियोन इंजेक्शन—ये नाम आज आम हो चुके हैं। ये उपचार चंद मिनटों में यौवन का वादा करते हैं, लेकिन क्या इनके पीछे छिपे खतरे उतने ही चमकदार हैं? हाल ही में 42 वर्षीय अभिनेत्री शेफाली जरीवाला की अचानक मृत्यु ने इस सवाल को हर किसी के सामने ला खड़ा किया। उनकी मौत ने न केवल एक परिवार को तोड़ा, बल्कि समाज को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या सौंदर्य की कीमत जान से चुकानी पड़ सकती है?

शेफाली की मौत का कारण बना एक एंटी-एजिंग इंजेक्शन, जिसने उनकी सांसों की डोर छीन ली। पुलिस सूत्रों के अनुसार, इंजेक्शन लेने के तुरंत बाद उनका ब्लड प्रेशर खतरनाक रूप से गिर गया। वह बेहोश हो गईं और अस्पताल पहुंचने से पहले ही उनकी जिंदगी खत्म हो चुकी थी। जांच में उनके घर से ग्लूटाथियोन और विटामिन-सी जैसे इंजेक्शनों की शीशियां मिलीं, जिनका वह लंबे समय से इस्तेमाल कर रही थीं। यह घटना एक दुखद हादसा नहीं, बल्कि एक चेतावनी है—जवानी की दौड़ में बिना सोचे-समझे कदम उठाना कितना घातक हो सकता है।

उम्र बढ़ना प्रकृति का अटल नियम है। जैसे-जैसे साल गुजरते हैं, त्वचा पर झुर्रियां, महीन रेखाएं, और ढीलापन नजर आने लगता है। लेकिन समाज में सौंदर्य और जवानी के प्रति बढ़ता जुनून लोगों को इस प्राकृतिक प्रक्रिया को रोकने के लिए बेताब कर रहा है। सोशल मीडिया पर चमकते चेहरों और सेलिब्रिटीज़ की तस्वीरों ने जवानी को एक सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक बना दिया है। नतीजा? लोग बोटॉक्स, डर्मल फिलर्स, और

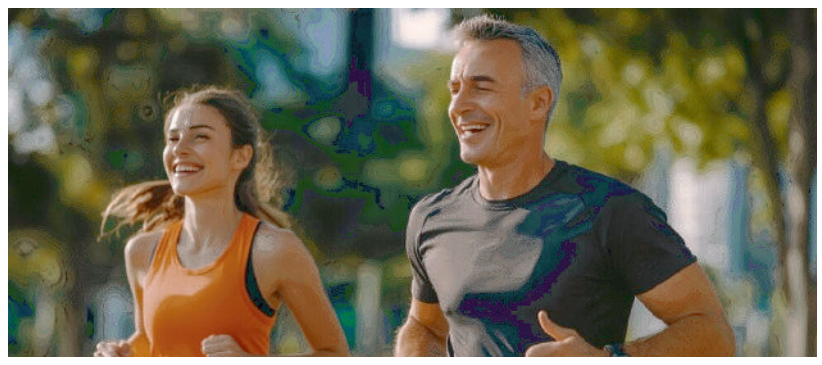

ग्लूटाथियोन जैसे उपचारों की ओर भाग रहे हैं। बोटॉक्स एक शक्तिशाली इंजेक्शन है, जो चेहरे की मांसपेशियों को रिलैक्स करके झुर्रियों को कम करता है। अमेरिका के फूड एंड ड्रग्स एडमिनिस्ट्रेशन (एफडीए) ने इसे कॉस्मेटिक उपयोग के लिए दो दशक पहले मंजूरी दी थी। डर्मल फिलर्स त्वचा में कोलेजन की कमी को पूरा करते हैं, जिससे चेहरा भरा-भरा और युवा दिखता है। ग्लूटाथियोन, एक एंटीऑक्सीडेंट, त्वचा को गोरा करने और कोशिकाओं को नुकसान से बचाने का दावा करता है। ये उपचार सुनने में जादुई लगते हैं, लेकिन इनके पीछे छिपे जोखिमों को नजरअंदाज करना भारी पड़ सकता है।

शेफाली की मृत्यु ने इन उपचारों की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। विशेषज्ञ बताते हैं कि ग्लूटाथियोन जैसे इंजेक्शन, जो पूरी तरह से एफडीए-अनुमोदित नहीं हैं, कई बार गंभीर साइड इफेक्ट्स का कारण बनते हैं। इनमें एनाफाइलेक्सिस (गंभीर एलर्जी रिएक्शन), स्टीवन जॉनसन सिंड्रोम, या त्वचा से जुड़ी गंभीर बीमारियां शामिल हैं। अगर ये इंजेक्शन गैर-प्रशिक्षित व्यक्तियों या अनधिकृत केंद्रों में दिए जाएं, तो खतरा कई गुना बढ़ जाता है। अप्रैल 2024 में यूएस सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (सीडीसी) ने एक चेतावनी जारी की थी, जिसमें 25 से 59 वर्ष की 22 महिलाओं में बोटॉक्स के गंभीर दुष्प्रभाव देखे गए। इनमें से 11 को अस्पताल में भर्ती करना पड़ा, क्योंकि बोटॉक्स के टॉक्सिन्स उनके नर्वस सिस्टम तक फैल गए थे। यह स्थिति इतनी गंभीर थी कि मृत्यु तक हो सकती थी। जांच में सामने आया कि ये सभी इंजेक्शन गैर-प्रशिक्षित व्यक्तियों या गैर-चिकित्सकीय केंद्रों में लिए गए थे। यह साफ करता है कि गलत हाथों में ये उपचार जिंदगी के लिए खतरा बन सकते हैं।

ग्लूटाथियोन, जो त्वचा को गोरा करने और जवानी बनाए रखने के लिए लोकप्रिय है, भी जोखिमों से मुक्त नहीं। एक सीनियर डर्मटोलॉजिस्ट के अनुसार, ग्लूटाथियोन का असर तभी तक रहता है, जब तक इसे लिया जाता है। लेकिन इसकी उच्च खुराक या गलत इस्तेमाल लिवर और किडनी पर अतिरिक्त दबाव डाल सकता है। खाली पेट दवाएं लेने से ब्लड प्रेशर में अचानक कमी आ सकती है, जैसा कि शेफाली की मृत्यु के मामले में संदेह जताया गया है। गलत डोज से एलर्जी रिएक्शन, त्वचा की बीमारियां, या ब्लड प्रेशर में खतरनाक उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि इन दवाओं से सीधे हार्ट अटैक का खतरा भले न हो, लेकिन परोक्ष रूप से ये अंगों पर दबाव डालकर स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान पहुंचा सकती हैं।

सौंदर्य के प्रति समाज का जुनून इस समस्या को और बढ़ा रहा है। सोशल मीडिया और सेलिब्रिटी संस्कृति ने जवानी को एक अनिवार्य सामाजिक मानक बना दिया है। हर कोई उम्र के निशानों को मिटाने की होड़ में शामिल है, लेकिन इस दौड़ में हम यह भूल जाते हैं कि हर व्यक्ति का शरीर अलग होता है। एक व्यक्ति के लिए सुरक्षित दवा दूसरे के लिए जहर बन सकती है। विशेषज्ञ जोर देते हैं कि एंटी-एजिंग उपचार से पहले मरीज का पूरा मेडिकल इतिहास जांचना अनिवार्य है। अगर किसी को पहले से हृदय रोग, लिवर, या किडनी की समस्या है, तो इन दवाओं का प्रभाव और भी गंभीर हो सकता है। कार्डियोलॉजिस्ट और डर्मटोलॉजिस्ट से परामर्श के बिना ये उपचार लेना आत्मघाती साबित हो सकता है।

यह दुखद घटना हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम जवानी की चाहत में अपनी सेहत को दांव पर लगा रहे हैं? एंटी-एजिंग उपचार निश्चित रूप से त्वचा में निखार और आत्मविश्वास बढ़ा सकते हैं, लेकिन इनका गलत इस्तेमाल या बिना विशेषज्ञ की सलाह के उपयोग जानलेवा हो सकता है। गैर-प्रमाणित पार्लरों या अनजान व्यक्तियों से उपचार लेना जिंदगी के साथ खिलवाड़ है। असली सुंदरता स्वस्थ शरीर और आत्मविश्वास में बसती है, न कि इंजेक्शनों की सुई में। शेफाली की मृत्यु एक कठोर सबक है। यह हमें याद दिलाती है कि सौंदर्य की कीमत अनमोल हो सकती है, लेकिन जिंदगी से ज्यादा अनमोल कुछ नहीं। जवानी की दौड़ में भागने से पहले रुकें, सोचें, और अपनी सेहत को प्राथमिकता दें। एंटी-एजिंग उपचार अनिवार्य ही है तो केवल प्रशिक्षित डर्मटोलॉजिस्ट्स पर भरोसा करें और गैर-प्रमाणित केंद्रों से दूर रहें। सुंदरता का असली मंत्र स्वस्थ जीवनशैली, संतुलित आहार, और आत्मविश्वास में छिपा है। इस दुखद हादसे से सबक लें और यह समझें कि सौंदर्य की चाहत में जिंदगी को जोखिम में डालना किसी भी कीमत पर समझदारी नहीं है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

धार्मिक स्थलों पर नियम-कायदों का सख्ती से पालन सुनिश्चित हो !

हाल ही में ओडिशा के पुरी में गुंडिचा मंदिर के पास 29 जून 2025 को रविवार तड़के हुई भगदड़ में तीन लोगों की मौत हो गई और कई लोग घायल हो गए। वास्तव में यह घटना बहुत ही अधिक दुखद, शर्मनाक व चिंताजनक है। चिंताजनक इसलिए क्यों कि बार-बार ऐसी घटनाएं हमारे यहां कहीं न कहीं घटित होती न रहती हैं और इन घटनाओं से कोई संज्ञान नहीं लिया जाता है । यह कोई पहली बार नहीं है जब देश में भगदड़ जैसी घटना में लोग मारे गए हैं और कुछ लोग घायल हुए हैं। रह-रहकर ऐसी घटनाएं हमें मीडिया की सुर्खियों में देखने सुनने को हमें मिलतीं रहतीं हैं, जबकि एहतियात अपनाकर ऐसी घटनाओं को रोका जा सकता है। हमारा देश एक बहुत ही धार्मिक देश है और यहां अनेक धर्मों, संप्रदायों व वर्ग के लोग रहते हैं। अलग-अलग धर्मों के लोगों यहां कोई न कोई धार्मिक आयोजन करते रहते हैं। रथयात्रा भी इसी प्रकार का एक बड़ा और धार्मिक आयोजन है। पाठकों को जानकारी होगी कि सैकड़ों साल से इस रथयात्रा का आयोजन किया जा रहा है। हर वर्ष रथयात्रा के दौरान श्रद्धालुओं की भारी भीड़(लाखों की भीड़) उमड़ती है। दरअसल ऐसी घटनाएं तब जन्म लेतीं हैं, जब सुरक्षा के पुख्ता व सटीक इंतजाम नहीं किए जाते। हमारी सबसे बड़ी कमी यह भी है कि हम पूर्व में हुई घटनाओं से कभी सबक नहीं लेते हैं और घटना के घटित होने के बाद कदम उठाते हैं और बाद में सबकुछ भूल जाते हैं, जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। कहना ग़लत नहीं होगा कि भगदड़ से जुड़े ऐसे हादसों से सबक नहीं लेने का ही यह नतीजा है कि पुरी में ऐसे हादसे की पुनरावृति हो गई। वास्तव में होना तो यह चाहिए कि हम समय रहते श्रद्धालुओं की सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करें और गलतियों से सीख लें। ऐसा भी नहीं है कि धार्मिक स्थलों पर सुरक्षा के इंतजाम नहीं किए जाते हैं, लेकिन सुरक्षा व्यवस्थाओं को हल्के में लिया जाता है और घटनाएं घटित हो जातीं हैं। हालांकि, ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने पुरी में जगन्नाथ रथयात्रा के दौरान हुई भगदड़ के बाद श्रद्धालुओं से माफ़ी मांगी है तथा उन्होंने अधिकारियों को ज़िम्मेदार लोगों के ख़िलाफ़ कार्रवाई शुरू करने का निर्देश भी दिया है। पाठकों को बताता चलूं कि सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए, उन्होंने यह बात कही है कि, "शरधाबली में महाप्रभु के दर्शन की भक्तों में अत्यधिक उत्सुकता के कारण, भीड़ और अफरा-तफरी के चलते एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी। व्यक्तिगत रूप से, मैं और मेरी सरकार सभी जगन्नाथ भक्तों से क्षमा मांगते हैं। हम उन भक्तों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं, जिनकी शरधाबली में जान चली गई और महाप्रभु जगन्नाथ से प्रार्थना करते हैं कि उन्हें इस गहरे दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।' बहरहाल, मुख्यमंत्री जी ने ज़िम्मेदार लोगों के ख़िलाफ़ कार्रवाई करने की बात कही है, यह अच्छी बात है, ऐसा होना भी चाहिए। लेकिन यहां मुख्य सवाल यह उठता है कि क्या पुलिस और प्रशासन को ऐसे बड़े धार्मिक आयोजनों के दौरान संभावित भीड़ का अंदाज़ा नहीं रहता है ? यदि इस प्रश्न का उत्तर हां है तो श्रद्धालुओं के लिए सुरक्षा इंतज़ामों पर क्या पुलिस और प्रशासन को पर्याप्त ध्यान नहीं देना चाहिए था ? तमाम व्यवस्थाओं के बावजूद पुरी में यह हादसा विभिन्न सुरक्षा इंतज़ामों पर कहीं न कहीं सवाल खड़े करता है। मीडिया रिपोर्ट्स बतातीं हैं कि इस घटना(भगदड़) के लिए प्रशासनिक लापरवाही और नाकामी को ज़िम्मेदार ठहराया जा रहा है। हालांकि जांच एजेंसियों की रिपोर्ट आने के बाद ही सबकुछ स्पष्ट हो पाएगा, लेकिन प्रारंभिक स्तर पर जो कारण सामने आ रहा है उसके मुताबिक श्रद्धालुओं के आने-जाने का एक ही रास्ता माना जा रहा है। इतना ही नहीं, रास्ते पर भी वीआइपी को प्रवेश करवाने के लिए निकास द्वार बिना किसी पूर्व सूचना के बंद कर दिया गया। दरअसल, होना तो यह चाहिए था यह इस व्यवस्था को लागू करने से पहले वैकल्पिक इंतज़ाम किए जाते। वास्तव में, भगदड़ एक ख़तरनाक स्थिति है, जिसमें भीड़ अनियंत्रित होकर एक ही दिशा में भागती है, जिससे जान-माल का नुकसान हो सकता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि भगदड़ से बचने के लिए, निकास द्वार स्पष्ट रूप से चिह्नित होने चाहिए। इतना ही नहीं, भीड़ प्रबंधन प्रभावी, पुख्ता होना चाहिए, और आपातकालीन स्थिति में लोगों को सुरक्षित निकालने के लिए योजना भी होनी चाहिए हाल फिलहाल,सरकार ने इस प्रकरण में लापरवाही मानते हुए कलेक्टर, एसपी, डीसीपी कमांडेट पर कार्रवाई की भी है। इतना ही नहीं, मृतकों के लिए १५-१५ लाख रुपए के मुआवजे का ऐलान भी किया गया है, लेकिन यहां सवाल यह है कि क्या इतना करना ही काफी है ? वास्तव में आदमी की जान की कीमत कभी भी पैसों में नहीं आंकी जा सकती है। मुआवजा अपनी जगह ठीक है, लेकिन यह भी एक कटु सत्य है कि पैसों से या यूं कहें कि मुआवजा देने से जान की भरपाई कभी भी संभव नहीं हो सकती है। भगदड़ में जान गवाने वालों के परिजनों और घायल हुए श्रद्धालुओं को जो ज़रूरी मिले हैं, उन पर मरहम तब ही लगेगा जब इस तरह की दुर्घटनाओं से जुड़े तमाम संभावित कारणों का पता लगाकर उन्हें हमेशा के लिए दूर कर दिया जाएगा। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज देश के अनेक तीर्थ और धर्मस्थलों पर इस तरह के हादसे लगातार होते रहते हैं, लेकिन इनसे सीख बिरले ही ली जाती है, जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। ऐसे हादसों से सीख लिया जाना बहुत ज़रूरी है ताकि भविष्य में ऐसे हादसों की पुनरावृति संभव नहीं हो सके। वास्तव में ऐसे भीड़भाड़ वाले इलाकों, स्थानों पर नियम-कायदों का सख्ती और ईमानदारी के साथ पालन किया जाना चाहिए। सुरक्षा की ज़िम्मेदारी बहुत ही महत्वपूर्ण है। प्रशासन व सरकार को यह चाहिए कि वह हादसों से जुड़े तमाम कारणों का पता लगाकर सुधार के तमाम उपाय करे, तभी वास्तव में ऐसे हादसों से बचा जा सकेगा, अन्यथा हादसे घटित होंगे ही।

झारखंड स्थित ज्योतिर्लिंग वैधनाथ श्रवणी मेला हेतु मुख्य सचिव ने की बैठक

50 लाख भक्त होंगे शामिल, भीड़ नियंत्रण व भागदौड़ से बचाव पर फोकस :अलका तिवारी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची। रथयात्रा के ठीक बाद जब श्रावण से पालन हार विष्णु हरिशयन एकादशी से चतुर्मास के लिये सो जायेंगे तब महादेव सबका श्रवण करेंगे -वह उनका श्रवण मास श्रावण होता है ।इस बाबत बुधवार को रांची में बाबा वैधनाथ हेतु होनेवालि

राजकीय श्रावणी मेला को लेकर झारखंड सरकार की महत्वपूर्ण बैठक मुख्यसचिव अलका तिवारी की अध्यक्षता में हुई जिसमें समीक्षा की गयी । झारखंड स्थित ज्योतिरलिंग वैधनाथ श्रवणी मेला 11 जुलाई से शुरू हो रहा है। यह 9 अगस्त तक चलेगा। इस दौरान लगभग 50 लाख से अधिक श्रद्धालुओं के बाबा नगरी और बाबा बासुकी नाथ धाम आने की संभावना है।

बुधवार को मुख्य सचिव अलका तिवारी ने तैयारियों को लेकर सभी संबंधित विभागों के प्रमुख और देवघर तथा दुमका के उपायुक्त, एसपी व अन्य अधिकारियों के साथ समीक्षा की। इस दौरान ठोस निर्णय लिए गए और उसका अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए जवाबदेही तय की गई। मुख्य सचिव तिवारी का फोकस लाखों की संख्या में आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा पर दिखा। उन्होंने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिया कि वे भीड़ नियंत्रण की व्यवस्था पुख्ता बनायें। आपात स्थिति से निपटने के लिए जो जहां तैनात हों, वे प्रशिक्षित, जवाबदेह और संवेदनशील हों।

मुख्य सचिव ने कहा कि भगदड़ की स्थित नहीं बने, इसके लिए तय मानकों का

अनुपालन सुनिश्चित करें। श्रद्धालु एक जगह अधिक संख्या में इकट्ठे नहीं हों, इसके लिए ऐसी व्यवस्था बनायें कि वे छोटे-छोटे समूह में रहें। सुरक्षा व्यवस्था में तैनात कर्मी शिफ्ट बदलने पर तभी अपना स्थान छोड़े, जब उनका विकल्प वहां आ जाये। भीड़ नियंत्रण के लिए एआई आधारित सीसीटीवी कैमरे, ड्रोन आदि के फुटेज की लगातार मॉनिटरिंग हो और लगे कि कहीं भीड़ ज्यादा हो रही है, तो बिना समय जाया करे तत्काल उसे नियंत्रित करें। इसके अलावा यह सुनिश्चित करें कि श्रद्धालुओं का मार्ग समतल हो, ताकि ठोकर लग कर गिरने की आशंका खत्म हो जाये। जहां सीढ़ी आदि हो वहां फिसलन नहीं हो। श्रद्धालुओं के आने-जाने की अलग व्यवस्था हो। अचानक बिजली गुल नहीं हो। बिजली कटने के साथ उसकी पुनर्बहाली की वैकल्पिक व्यवस्था भी तैयार रखें। कहीं भी बिजली का नंगा तार नहीं हो और वह नीचे की ओर झूलता हुआ नहीं हो। इंट्री पवाइंट पर मेटल डिटेक्टर से लोगों को गुजारने के दौरान इसका विशेष ध्यान रखा जाए कि वहां अत्यधिक भीड़ की स्थिति नहीं बने। ।इसे देखते हुए जिले के उपायुक्त और एसपी उस समय अपनी मौजूदगी सुनिश्चित करते हुए व्यवस्था नियंत्रण की बागडोर संभाले। साथ ही रविवार और सोमवार को श्रद्धालुओं की तदाद काफी बढ़ती है, इसे भी संज्ञान में रखते हुए व्यवस्था बनायें। उन्होंने निर्देश दिया कि आपात विभाग से जुड़े मुख्यालय के आला अधिकारी मौके पर जाकर तैयारियों का जायजा लें और कमियों को समय रहते दुरुस्त कराएं।

मुख्य सचिव ने तैयारियों की समीक्षा के दौरान श्रद्धालुओं के लिए उपलब्ध सुविधाओं के रख-रखाव पर विशेष ध्यान देने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि कि बारिश के मौसम को देखते हुए स्वच्छता पर पूरा फोकस करें। शुद्ध पेयजल की उपलब्धता बनी रहे। श्रद्धालुओं के लिए बने टेंट सिटी में शौचालय, पेयजल, शयन आदि की व्यवस्था के लगातार मेंटेनेंस पर बल देते हुए मुख्य सचिव ने कहा कि इसके लिए कारगर व्यवस्था बनाएं।

मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार श्रद्धालुओं के लिए डिस्पोजल बेड कवर की व्यवस्था समय रहते सुनिश्चित कर लें। वहीं श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए जगह-जगह होर्डिंग आदि के माध्यम से यातायात, चिकित्सा, विश्राम स्थलों आदि की सूचना प्रचारित-प्रसारित करें। शिकायत और सुझाव के लिए क्यूआर कोड की व्यवस्था को भी तमाम जगहों पर उपलब्ध कराएं। इसके अलावा समीक्षा के दौरान कावंरिया पथ समेत बाबा नगरी और बासुकी नाथ धाम की सड़कों, श्रद्धालुओं के आवासन, ट्रैफिक व्यवस्था, अग्निशमन व्यवस्था, एंबुलेस एवं चिकित्सा व्यवस्था, स्ट्रीट लाइट इत्यादि पर भी संबंधित लोगों को निर्देशित किया गया।

विधायक संतोष खटुआ को सुरक्षा दे रही है सरकार: बीजद

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: बीजू जनता दल ने आज कहा कि राज्य सरकार भाजपा के नीलगिरि विधायक श्री संतोष खटुआ के खिलाफ कार्रवाई कर रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि 15 जून को नीलगिरि क्षेत्र में एक दंतैल हाथी की हत्या और उसके दांत लूटने की घटना में वे शामिल हैं, जिसमें स्थानीय वन अधिकारियों ने पांच लोगों को गिरफ्तार किया था ।गिरफ्तार पांच आरोपियों में से तीन को मुख्य आरोपी विधायक श्री खटुआ के फार्म हाउस में छिपते समय गिरफ्तार किया गया, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि विधायक इस अपराध में शामिल थे, लेकिन वन अधिकारी विधायक के खिलाफ कोई कार्रवाई करने का साहस नहीं जुटा पाए हैं, ऐसा बीजद ने कहा। आज शंख भवन में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में पार्टी की वरिष्ठ महासचिव एवं प्रवक्ता डॉ. लेखाश्री सामंत सिंघार, पूर्व मंत्री श्री ज्योति रंजन पाणिग्रही और पूर्व विधायक श्री सुकांत नायक ने राज्य के हाथी की हत्या और उसके कीमती दांतों की लूट में नीलगिरि विधायक श्री संतोष खटुआ की प्रत्यक्ष संलिप्तता के बारे में विस्तृत जानकारी दी। डॉ. कामश्री सामंत सिंघार ने कहा कि 15 जून को नीलगिरि प्रखंड अंतर्गत तेलीपाड़ पंचायत के हाडुइसाही गांव के पास एक वन अधिकारी को एक विशाल हाथी दांत का शव मिला था। उल्लेखनीय है कि हाथी के दांत लुटेरों द्वारा काटे गए थे, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि लुटेरों ने दांत प्राप्त करने की नीयत से हाथी की हत्या की। बाद में वन अधिकारियों ने घटना की जांच की और इसमें शामिल चार लुटेरों को गिरफ्तार किया। चार आरोपियों में से तीन मुख्य आरोपियों को इलाके में रहने वाले नीलगिरि विधायक श्री खटुआ के फार्म हाउस से गिरफ्तार किया गया। हालांकि स्थानीय विधायक श्री खटुआ के इस घटना में शामिल होने का संदेह था, लेकिन वन अधिकारियों ने श्री खटुआ के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की। डॉ. सामंतसिंहार ने कहा कि चूंकि वे सत्ताधारी पार्टी के विधायक हैं, इसलिए राज्य सरकार श्री खटुआ को बचाने में लगी है। श्री खटुआ पर कई अवैध गतिविधियों में शामिल होने का आरोप है। नब्बे के दशक में बालासोर में इस्पात एलॉयज लिमिटेड कंपनी में कर्मचारी के तौर पर काम करने वाले श्री खटुआ बाद में कंपनी के दिवालिया हो जाने पर खुद करोड़पति बन गए। श्री खटुआ पर आरोप है कि उन्होंने पद्मलोचन मुंड हाई स्कूल की डेढ़ एकड़ जमीन और 200 एकड़ वन भूमि पर पहले ही अतिक्रमण कर रखा है। इसके अलावा उन पर अवैध खनन और रेत निकासी में शामिल होने का भी आरोप है। इसलिए डॉ. सामंतसिंह ने मांग की है कि हाथी की मौत और दांत चोरी की घटना में श्री खटुआ को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ उचित कार्रवाई की जाए और उन पर पेसा एक्ट लगाया जाए।

संथाल परगना को मणिपुर बनना चाहती है भाजपा : सुप्रिया भट्टाचार्य

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय महासचिव सह प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने हुल दिवस पर भोगनाडीह में हुई हिंसक घटना को भाजपा की करतूत कहा है .आज रांची में एक प्रेस वार्ता आयोजित कर यह जानकारी दी गयी ।

सुप्रियो भट्टाचार्य ने आगे यह भी कहा कि भाजपा संथाल परगना को मणिपुर बनाना चाहती है. इसीलिए हूल दिवस के दिन इस तरह की घटना को अंजाम देने की पटकथा दीन दयाल उपाध्याय मार्ग में लिखी गई थी. जिसके प्रायोजक गोड्डा से वर्तमान भाजपा सांसद निशिकांत दुबे है वहीं इसके डायरेक्टर पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन रहे है ।

भट्टाचार्य ने आगे कहा कि विधानसभा चुनाव के पहले से ही भाजपा संथाल को मणिपुर बनाना चाहती है, जहां पिछले 2 वर्षों से अशांति है. भाजपा ने इस मॉडल को संथाल परगना में लागू करने का खाका तैयार कर लिया है. इस पूरे मामले के लिए प्यादे तय किए गए थे और दीनदयाल मार्ग से इसकी

पटकथा लिखी गई थी. इसमें कई प्यादे हैं, जिनमें से कुछ गिरफ्तार हो चुके हैं और कुछ किरदार छुपे हुए हैं.

संथाल परगना को बारूद के ढेर पर क्यों बैठाना चाहती है ?इस झामुमो नेता जानना चाहा कि क्या कभी ऐसा देखा गया है कि किसी राजनीतिक दल का कार्यकर्ता अवैध हथियार लेकर कहीं जाता हो. जो आग्नेयास्त्र जब्त किया गया है वह सिर्फ छोटा सा हिस्सा है . क्या भाजपा की मंशा मुख्यमंत्री एवं अन्य मंत्रियों की हत्या करवाने की है अब।

राहुल, खड़गे जुलाई 11 को ओडिशा आएंगे

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी 11 जुलाई को ओडिशा का दौरा करेंगे। उनके साथ कांग्रेस (AICC) अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे भी ओडिशा आएंगे। राज्य कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जयदेव जेना ने यह जानकारी दी। दोनों नेता भुवनेश्वर के बारामुंडा इलाके में आयोजित एक विशाल रैली में शामिल होंगे ।पिछले कुछ दिनों से राहुल गांधी सोशल मीडिया और राष्ट्रीय मंच पर ओडिशा के विभिन्न मुद्दों पर अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं। हाल ही में उन्होंने गंजम में दो दलितों पर हुए अत्याचार और पुरी रथ यात्रा के दौरान हुई अराजकता को लेकर राज्य सरकार पर निशाना साधा था। चूंकि राज्य में भाजपा की सरकार है, इसलिए उम्मीद है कि राहुल इस यात्रा के दौरान भाजपा सरकार की नीतियों और कार्यों की कड़ी आलोचना कर सकते हैं। भुवनेश्वर के बरमुंडा इलाके में होने वाली यह बैठक ओडिशा कांग्रेस के लिए एक महत्वपूर्ण आयोजन होगा। चूंकि कांग्रेस ने हाल ही में राज्य में विधानसभा चुनावों में खराब

प्रदर्शन किया है, इसलिए यह बैठक पार्टी कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाने और आने वाले दिनों में अपनी राजनीतिक रणनीति को मजबूत करने में मदद करेगी। पार्टी नेताओं को उम्मीद है कि राहुल और खड़गे की मौजूदगी से राज्य में कांग्रेस संगठन को पुनर्जीवित करने में मदद मिलेगी। राज्य में भाजपा की सरकार आने के बाद राहुल गांधी इस बैठक के जरिए भाजपा की नीतियों और शासन की विफलताओं को उठा सकते हैं। कांग्रेस के लिए ओडिशा में अपना जनाधार फिर से स्थापित करने का यह एक महत्वपूर्ण अवसर होगा।

झारखंड में वर्षा का कहर विधालय में घुसा पानी, निस्सहाय रोसोईया लड़की का घर टूटा

सरायकेला उपायुक्त से मिली निस्सहाय महिला रसोईया सुमन, कोल्हान रक्षा संघ का मिला साथ

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला , झारखंड में भारी बारिश से समुचा सरायकेला -खरसावां एवं सिंहभूम जिला आदि इलाके में जनजीवन त्रस्त है । उपायुक्त सरायकेला के कार्यालय निकट संजय गांव की विधालय देखरेख करनेवाली निस्सहाय आदिवासी रसोईया लड़की सुमन वानसिंह का पैतृक घर भी टूट चुका है ।सरकारी जमीन पर पर बने कलवेट बंद किये जाने पर निस्सहाय रसोईया सुमन डीईओं तथा डीसी से मिलकर अपनी फरियाद सुनाई है ।

सरायकेला खरसावां जिला उपायुक्त कार्यालय से महज दो किलोमीटर दुर संजय गांव के नीलमोहन पुर निवासी स्कूल रसोईया

सुमन वानसिंह नामक लड़की का घर तेज वर्षा के बाद जल निकासी पुल/ कालवेट अब नही होने के कारण ध्वस्त हो चुका है । गांव के सरकारी विधालय की रोसोईया की पद पर कार्यरत इस स्नातकोत्तर पास लड़की ने इससे पहले उसके घर के पास सरकारी जमीन पर कब्जे को लेकर अंचल अधिकारी ,थाना प्रभारी सरायकेला का ध्यान आकृष्ट की थी, जहां सुमन के अनुसार उस पर कोई कार्रवाई नहीं होने के कारण जल जमाव से उसका घर टूट गया है ।जहां नाली मे गत वर्ष

एक कलवेट हुआ करता था । तथा सुमन उक्त जगह को देख देख भी कर रही थी ।अब गुप्त रूप से किसी के जरिये उस पर कब्जा या बन्दों वस्त किये जाने के कारण आज संजय के नील मोहन पुर उक्त विधालय मे जलजमाव तथा उसका घर पानी घुसने से धंस चुका है । यह वही विधालय है जहां झारखंड के शिक्षा सचिव दो वर्ष पूर्व स्वयं निरीक्षण कर चुके हैं तथा विधालय का एक छात्र जगन्नाथ महतो को राज्य स्तर पर रांची में सम्मानित किया जा चुका है ।

सुमन आज जिला शिक्षा अधिकारी के कार्यालय में पहुंच कर विधालय की वस्तुस्थिति से डीईओं को अबगत करायी है । इसके अलावा उपायुक्त नितिश कुमार सिंह से मिलकर बात को रखी है । वैसे सुमन वानसिंह नामक लड़की अर्थशास्त्र से स्नातकोत्तर तक पढ़ कर उसी विधालय में रसोईया का काम करती है ।जहां उसके पहले उसकी मां रसोईया रही ।अब के पिता बीमार निष्क्रिय है तथा मां 7 वर्ष पूर्व गुजर चुकी की । घर का खर्चा रसोइया से मिलने वाली आय से चलता है ।अब दोनों भाई भी अलग रहते हैं । उसने उपायुक्त से टूटे मकान का मुआवजा व एक आबूआ आवास देने की मांग रखी है तथा अपनी घर के निकट की जमीन का हैसियत भी जानने का प्रयास की है ।

वैसे कोल्हान समुचे सिंहभूम जिले में आदिवासियो कि हक के लिए लड़ रहा बड़ा संगठन कोल्हान रक्षा संघ ने भी उक्त आदिवासी निस्सहाय लड़की की मामले को गंभीरता से लिया है ।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023